अध्याय – ३

दिल्ली एवं फरुखाबाद घराने में एकल तबला वादन का तुलनात्मक क्रमबद्ध प्रस्तुतिकरण (शास्त्र एवं क्रियात्मक दृष्टिकोण से)

तबला यह अति प्राचीन वाद्य है । पुराने जमाने में तबले का उपयोग मात्र साथ संगत के लिये ही किया जाता था । परंतु जैसे जैसे तबले का विकास होता गया, वैसे एकल तबला वादन को भारतीय संगीत में स्वतंत्र स्थान प्राप्त हुआ । फलस्वरूप दिल्ली घराने का प्रथम आविष्कार हुआ । और यह श्रेय अनेक गुणीजनों को जाता है । अतः तबला यह वाद्य केवल साथ संगत में ही उपयुक्त न होकर एकल वादन में भी सफल वाद्य हुआ । तबले के वादनशैली के आधार पर मुख्य दो बाज अस्तित्व में आये । (१) पुरब बाज और (२) पश्चिम बाज । अतः इन दोनो बाज के अंतर्गत घराने समाविष्ट हुए, अर्थात दोनो बाज के वादन शैली में विशेष अंतर है जिसके आधार पर एकल तबला वादन के सिद्धांत भी भिन्न है ।

अतः शोधार्थी इस अध्याय में दोनो घराने की एकल तबला वादन का तुलनात्मक क्रमबद्ध प्रस्तुतिकरण में शास्त्र एवं क्रियात्मक पक्ष पर सोदाहरण के साथ पुष्टि करेगा ।

३:१ विलंबित लय में प्रस्तुत होनेवाली बंदिशे :

''सौन्दर्य शास्त्र के महान विद्वान, संगीतज्ञ डॉ. सुशीलकुमार सकसेनाजी के मतानुसार 'किसी भी कला की निर्मिती में तीन घटन महत्व पूर्ण होते है ।

(१) ढांचा (Form)

(२) विषय वस्तु (Content Matter)

(३) प्रस्तुतिकरण का तरीका (Process of Presentation)'' [१]

कोई भी साहित्य में विषयवस्तु 'भाषा–शब्द' होते है । इस भाषा का प्रयोग करके कलाकार अपनी प्रस्तुती करता है । तबलावादन यह एकमेव ऐसी कला है जिसकी विषयवस्तु

'भाषा' का उपयोग अन्य किसी भी काम के लिये नहीं हो सकता है । इसलिए तबलावादन आदर्श प्रायोगिक कला है ।

एकल तबलावादन में मुख्य दो वर्गो में विभाजन किया गया है ।

(१) विस्तारक्षम बंदिश प्रकार

(२) पूर्ण संकलयित या अविस्तारक्षम बंदिशो के प्रकार

विस्तारक्षम रचना वह होती है जिसका विस्तार अमर्यादित होता है । विस्तारक्षम बंदिश प्रकार में पेशकार, कायदा, रेला, लग्गी–लड़ी का समावेश होता है और अविस्तारक्षम रचना में याने 'पूर्ण संकलयित बंदिश' में टुकडा, परण, मोहरा, मुखडा, गत, तिहाई के प्रकार, नौहक्का, चक्रदार, फरमाईशी, त्रिपल्ली, फर्द आदि बंदिशो का समावेश होता है । विस्तारक्षम रचना यह विलंबीत लय में प्रस्तुत होती है तथा अविस्तारक्षम रचना मध्य तथा दृतलय में प्रस्तुत होती है ।

३:१:१ ठेका :

''पं. सुरेश तळवलकरजी के अनुसार 'ठेका यह ताल की प्रथम बंदिश है ।' अर्थात् ताल और ठेका में अंतर है ।''[२] ठेका बजाते समय ताल के बोलों कों ही बजाया जाता है । परंतु उसमें सुक्ष्म परिर्वतन किया जाता है । वहाँ ठेका ताल से भिन्न होता है । ठेका में ताल के विभाग, मात्रा, ताली, खाली यह एक ही होता है परंतु बोलों में आवश्यक फर्क किया जाता है । जिससें वादन में रंजकता बढती है अतः ठेका यह एकल वादन का प्राण है । पं. अरविंद मुलगाँवकरजी के अनुसार 'ताल रचना के वजनदार ठेके सें स्वरों के कालप्रवाह की नगमें के माध्यम से निश्चित लयबद्ध प्रस्तुतिकरण करना ।'

३ः१ः१:१ तुलना ः

दिल्ली और फरुखाबाद घराने में ठेका के बोलों में फर्क नहीं होता परंतु मात्र बजाने की पद्धति में फर्क है । दिल्ली घराने में ठेके के बोलों में किनार और चांटी का विशेष प्रयोग होता है और मुलायम बजाया जाता है । परंतु फरुखाबाद घराने में ठेके के बोलों में किनार और श्याही के ध्वनि अद्भूत संयोग दिखाई देता है और ठेका दायें–बायें के संतुलन के साथ वजनदार एवं आकर्षक प्रस्तुत किया जाता है।

३ः१ः२ पेशकार ः

''पं. सुधीर माईणकर जी के अनुसार 'ठेके के अक्षरों खंडों तथा रचना से निकटता रखनेवाली, किंबहुना उसी मेसे निर्माण हुई, खाली–भरी के सुत्र का मुक्त एवं कलात्मक प्रयोग की जाने वाली, प्रधानतः घीमी लय में प्रस्तुत की जाने वाली और विविध शब्दलयाकृतीबद्ध को जन्म देने वाली स्वरमय अंत्यपद युक्त विस्ताक्षम रचना को पेशकार कहते है ।'' [३]

पं. अरविंद मुळगाँवकरजी के अनुसार ''मध्य लय में बजाये जाने वाली लयबद्ध विशिष्ट आंदोलन का महत्व देकर बोलों का निकास स्पष्ट रूप से बजाने वाली रचना को पेशकार कहते है ।''[४]

''आचार्य गीरीशचंद्र श्रीवास्तवजी के अनुसार 'पेश' फारसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ उपस्थित, हाजीर या सम्मुख है इसी से पेशकार शब्द का व्युत्पत्ति हुई है ।'' [५]

श्री भगवतशरण शर्मा के मतानुसार ''जिस प्रकार अदालतो में मुकदमें के कागजों को रखना और समय पर हाकिम के सामने पेश करनेवाले को पेशकार कहते है ।''[६]

'पेशकार' यह फारसी भाषा का शब्द है । एकल तबलावादन में प्रारंभ में बजानेवाली रचना जो विलंबीत लय में डगमगाती हुई चलती है उसे पेशकार कहते है । पेशकार, फरशबंदी आदि पेशकार के समानार्थी शब्द है । पेशकार यह विस्तारक्षम रचना है इस रचना में कलाकार अपनी सोच, विचार, चिंतन और तालीम सें प्रस्तुत करता है । अतः पेशकार के नियमों बोलों

का ढांचा निश्चित होने पर भी प्रत्येक तबलावादक की पेशकार को देखने की दृष्टि अलग–अलग होती है। पेशकार के भी पल्टे किये जाते है। पेशकार में लय, लयकारी, छंद, विविध प्रकार की तिहाईयाँ, दाँब–गाँस, मिंड, घसीट आदि का विशेष तोर सें प्रयोग किया जाता हे । स्वतंत्र वादन में पेशकार को र्स्वप्रथम स्थान मिला है इसका कारण यह है की शुरूआत में वादन अपना हाथ गरम करके तथा जो भी रचनायें एकलवादन में वह बजानेवाला है उसकी एक तैयारी करता है । पेशकार में धीक्डधींता, किडनक, तिटकिट धाती, ताके तिरकिट आदि बोलों का प्रयोग किया जाता है । पं. सुरेश तळवलकर जी के मतानुसार 'जब वादक पेशकार बजाता है तब उसके वादन से उसने घरानेदार तालीम पाई है की नहीं तथा वादक की क्षमता का अंदाजा लिया जा सकता है ।'

३:१:२:१

रचना : पेशकार (दिल्ली घराना)

ताल : तीनताल

मुल रचनाकार : उ. इनाम अली खाँ साहब

प्राप्त : पं. सुधिर माईणकर

जाति : चतुश्र

मुख्य बोल : धा

धाऽकिट x	धाऽतीऽ	धाऽतीट	किटधाऽ	।
धाऽतीऽ 2	धाऽधाऽ	तीऽधाऽ	तिंऽनाऽ	।
ताऽकिट o	ताऽतीऽ	ताऽतीट	किटताऽ	।
धाऽतीऽ 3	धाऽधाऽ	तीऽधाऽ	धिंऽनाऽ	।

पल्टा - १

धाऽकिट x	धाऽतीऽ	धाऽतीट	किटधाऽ	।
तिटकिट 2	धाऽतीऽ	धाऽधाऽ	तिंऽनाऽ	।
ताऽकिट o	ताऽतीऽ	ताऽतीट	किटताऽ	।
तिटकिट 3	धाऽतीऽ	धाऽधाऽ	धिंऽनाऽ	।

पल्टा - २

धाऽकिट x	धाऽतीऽ	ऽऽधाऽ	तिटकिट	।
ऽऽधाऽ 2	तिटकिट	धाऽधाऽ	तिंऽनाऽ	।
ताऽकिट o	ताऽतीऽ	ऽऽताऽ	तिटकिट	।
ऽऽताऽ 3	तिटकिट	धाऽधाऽ	धिंऽनाऽ	।

पल्टा - ३

धाऽकिट x	धाऽतीऽ	ऽधातिट	किटधाऽ	।
तिटकिट 2	धाऽतीऽ	धाऽधाऽ	तिंऽनाऽ	।
ताऽकिट o	ताऽतीऽ	ऽतातिट	किटताऽ	।
तिरकिट 3	धाऽतीऽ	धाऽधाऽ	धिंऽनाऽ	।

पल्टा - ४

धाऽतिट x	किटधाती	टकिटधा	तिटकिट	।
धाऽतीऽ 2	धाऽधाऽ	तीऽधाऽ	तिंऽनाऽ	।
ताऽतीऽ o	किटताती	टकिटता	तिटकिट	।
धाऽतीऽ 3	धाऽधाऽ	तीऽधाऽ	धिंऽनाऽ	।

पल्टा - ५

x	धाऽधाऽ	धिंऽनाऽ	धाऽधिंऽ	नाऽधाऽ	।
2	तीऽनाऽ	धाऽतीऽ	धाऽधाऽ	तिंऽनाऽ	।
o	ताऽताऽ	तिंऽनाऽ	ताऽतिंऽ	नाऽधाऽ	।
3	धिंऽनाऽ	धाऽतीऽ	धाऽधाऽ	धिंऽनाऽ	।

३:१:२:२ रचना : फर्शबंदी (पारंपरीक)
ताल : त्रीताल
प्राप्त : श्री प्रविण करकरे जाति : चतुश्र
मुख्य बोल : धाऽकऽ

x	धाऽकऽ	धाऽतीऽ	धाऽतिर	किटधाऽ	।
2	तिरकिट	धाऽतिऽ	धाऽधाऽ	तिंऽनाऽ	।
o	ताऽकऽ	ताऽतीऽ	ताऽतिर	किटताऽ	।
3	तिरकिट	धाऽतीऽ	धाऽधाऽ	धिंऽनाऽ	।

पल्टा - १

x	धाऽकऽ	धाऽतीऽ	ऽऽधाऽ	तिरकिट	।
2	तिरकिट	धाऽतिऽ	धाऽधाऽ	तिंऽनाऽ	।
o	ताऽकऽ	ताऽतीऽ	ऽऽताऽ	तिरकिट	।
3	तिरकिट	धाऽतिऽ	धाऽधाऽ	धिंऽनाऽ	।

पल्टा - २

x	धाऽकऽ	धाऽतीऽ	ऽऽऽधा	तीऽधाऽ	।
2	तीऽधाऽ	धाऽतीऽ	धाऽधाऽ	तिंऽनाऽ	।
o	ताऽकऽ	ताऽतीऽ	ऽऽऽधा	तीऽताऽ	।
3	तीऽधाऽ	धाऽतीऽ	धाऽधाऽ	धिंऽनाऽ	।

पल्टा - ३

x	धाऽकऽ	धाऽतीऽ	धाऽधीऽ	नाऽधाऽ	।
2	ऽऽऽधा	ऽकऽधा	तीऽधाऽ	तींऽनाऽ	।
o	ताऽकऽ	ताऽतीऽ	ताऽतींऽ	नाऽधाऽ	।
3	ऽऽऽधा	ऽकऽधा	तीऽधाऽ	धिंऽनाऽ	।

पल्टा - ४

x	धाऽकऽ	धाऽतीऽ	धाऽतिर	किटताऽ	।
2	तिरकिट	धाऽतीधा	ऽकऽधा	तिंऽनाऽ	।
o	ताऽकऽ	ताऽतीऽ	ताऽतिर	किटताऽ	।
3	तिरकिट	धाऽतीधा	ऽधाऽधा	धिंऽनाऽ	।

पल्टा - ५

धाऽतीऽ	ऽधागेन	तीऽधाऽ	गेनतीऽ	।
x				
तीऽधाऽ	धाऽतीऽ	धाऽधाऽ	तिंऽनाऽ	।
2				
ताऽतीऽ	ऽताकेन	तीऽताऽ	केनतीऽ	।
o				
तीऽधाऽ	धाऽतीऽ	धाऽधाऽ	धिंऽनाऽ	।
3				

३:१:२:३ रचना : पेशकार (पारंपरीक) फरुखाबाद घराना
ताल : त्रीताल
प्राप्त : श्री प्रविण करकरे जाति : चतुश्र
मुख्य बोल : धिक्डधींता

धिंक्डधींता	ऽधाधिंता	धाऽक्डधाती	धाधातिंता	।
x				
तकधिंऽऽधाऽ	धीताधाती	धाऽक्डधाती	धाधातिंना	।
2				
किडनकतिंना	किडनकतिंनतिंना	किनाताकेतिरकिट	ताकेत्रकतिंनाकिना	।
o				
तिरधिडाऽनधाऽ	धिंताधाती	धाऽकऽधाती	धाधाधिंना	।
3				

पल्टा - १

धिंक्डधींता	ऽधाधिंता	ऽधाधिंता	धाधाधिंता	।
x				
तकधिडाऽनधाऽ	धिंताधाती	धाऽक्डधाती	धाधातिंना	।
2				
तिक्डतिंना	ऽतातिंता	ऽतातिंता	ताताविंता	।
o				
तकधिडाऽनधाऽ	धिंताधाती	धाऽक्डधाती	धाधाधिंना	।
3				

पल्टा - २

धिक्डधिंता x	ऽक्डधिंताक्ड	धिंताधाती	धाधातिंता	।
तकधिडाऽनधा 2	धिंताधाती	धाऽक्डधाती	धाधातिंना	।
तिक्डतिंता o	ऽक्डतिंताक्ड	तिंताताती	ताातिंता	।
तकधिडाऽनधा 3	धिंताधाती	धाऽक्डधाती	धाधाधिंना	।

पल्टा - ३

धिक्डधिंता x	ऽधाधिंता	धाऽक्डधाती	धाधातिंता	।
तकधिडाऽनधा 2	धिंताधाती	धाऽक्डधाती	धाधातिंना	।
किडनकतिंना o	किडनकतिंनातिंना	किनाताकेतिरकिट	ताकेतकतिंनाकिना	।
तिटधिऽऽनधाऽ 3	धिंताधिडाऽन	धाधिंताधिडा	ऽनधाधिंता	।

पल्टा - ४

धिक्डधिंता x	ऽधाधिंता	धाऽधातीधागेन	धाधाधिंता	।
तीत्धाक्डधा 2	धिंताधाती	धाक्डधाती	धाधातिंना	।
तिक्डतिंता o	ऽतातिंता	ताऽतातीताकेन	ताातिंता	।
तीत्धाक्डतीत् 3	ऽधाक्डधाऽ	ऽऽतीत्धाक्डधा	ऽऽतीत्धाक्ड	।

पल्टा - ५

धिक्डधिंता x	ऽधाधिंता	धाऽक्डधाती	धाधातिंता	।
तकधिडाऽनधाधिंना 2	धातीधाधातिंना	धाऽक्डधाती	धाधातिंना	।
किडनकतिंनाकिडनक o		तिंनतिंनाकिनाताकेतिरकिट		
	ताऽक्डताती	तातातिंता		।
तकधिडाऽनधातिंना 3		धाऽतिरकिटतकधिडाऽन		
	ऽनधाधिंताधातिरकिट	तकधिडाऽनधातिंना		

३:१:२:४ रचना : फरशबंदी (पारंपरीक - फरुखबाद घराना)
ताल : तीनताल
प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर जाति : तिश्र और चतुश्र

धिंऽधाऽ x	ऽऽधाऽ	तित्ध्धाऽ	ऽऽधाऽ	।
तिंऽताऽ 2	ऽऽताऽ	तित्ध्धाऽ	तिरकिट	।
धिंऽधाऽ o	ऽऽधाऽ	तित्ध्धाऽ	ऽऽधाऽ	।
तिंऽताऽ 3	ऽऽताऽ	तित्ध्धाऽ	तिरकिट	।

पल्टा - १ :

धिंऽधाऽ x	ऽऽधाऽ	तित्ध्धाऽ	ऽऽधाऽ	।
तिंऽताऽ 2	किटतकताऽतिर	किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	।
धिंऽधाऽ o	ऽऽधाऽ	तित्ध्धाऽ	ऽऽधाऽ	।
तिंऽताऽ 3	किटतकताऽतिर	किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	।

पल्टा - २ :

धिंऽधाऽ x	ऽऽधाऽ	तित्ध्धाऽ	ऽऽधाऽ	।
तिंऽताऽ 2	ऽऽताऽ	तित्ध्धाऽ	तिरकिट	।
तित्धागे o	तिरकिट	धिंऽधाऽ	ऽऽधागे	।
तिरकिट 3	तिंऽताऽ	ऽऽधागे	तिरकिट	।

पल्टा - ३ :

धिंऽधाऽ x	ऽऽधाऽ	किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	।
धिंऽधाऽ 2	ऽऽधाऽ	तिंऽताऽ	ऽऽताऽ	।
किटतकतिरकिट o	तकताऽतिरकिट	धिंऽधाऽ	ऽऽधाऽ	।
तिंऽताऽ 3	ऽऽताऽ	किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	।

पल्टा - ४ :

धिंऽधाऽ x	ऽऽधाऽ	तित्ध्धाऽ	घिडनग	।
धिनधिना 2	गिनधागे	त्रकधिन	धिनागिना	।
धिनधिना o	गिनधिन	धिनागिना	धिनागिना	।
धिनधिना 3	गिनधागे	त्रकतिन	तिनाकिना	।
तिनतिना x	किनतागे	तिरकिट	तागेतिट	।
क्डतिकिट 2	तागेतिट	तागेत्रक	तिनाकिना	।
ऽऽधिन o	धिनागिना	तिनतिना	किनाधिन	।
धिनागिना 3	तिनतिना	किनाधिन	धिनागिना	।

पल्टा - ५ :

धिंऽऽधा	ऽऽधाऽ	तित्ध्धाऽ	घिडनग	।
x				
धिनधिना	गिनधागे	त्रकधिन	धिनागिना	।
2				
धिनागिना	किनताके	तिरकिट	धागेत्रक	।
o				
धिनधिना	गिनधागे	त्रकतिन	तिनाकिना	।
3				
तिंऽऽता	किटतकताऽतिर	किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	।
x				
तकतकऽऽतिर	किटतकताऽतिर	किटतकतिरकिट	तकताऽता	।
2				
किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	धाऽऽऽकिटतक	किटतकतिरकिट	।
o				
तकताऽतिरकिट	धाऽऽऽकिटतक	किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	।
3				

धा

३:१:२:५ तुलना :

दिल्ली घराने के पेशकार में तर्जनी और मध्यमा उँगली का प्रयोग अधिकतोर से किया जाता है । अतः यह रचना मुलायम और कलात्मक रूप से प्रस्तुत की जाती है, जो कर्णप्रिय है । फरुखाबाद घराने में पेशकार बजाते समय लव और चांटी का खुब सुंदर प्रयोग किया जाता है जो सुनने में आकर्षक लगती है । इस में बाँयें का संतुलन से बजाया जाता है । अनेक प्रकार की तिहाईयाँ, लय–लयकारी, छंदो का काम विशेष तौर से किया जाता है । इस घराने में आखरी पलटा के अंदाज को देखकर उसी लय की आवश्यकता अनुसार वादक कायदा जोड़ता है, उसी को 'पेशकार कायदा' कहते है ।

दिल्ली घराने के पेशकार में मूलतः किनार का बाज होने के कारण पेशकार में चांटी के बोलों का प्रयोग किया जाता है, और फरुखाबाद घराने के पेशकार में चांटी और लव का मिश्रित सुंदर प्रयोग करके बजाया जाता है, जो सुनने में कर्णप्रिय लगता है । दिल्ली के पेशकार में 'तिट, तिरकिट' जैसे तर्जनी और मध्यमा उँगली से बजनेवाले बोलों का प्रयोग अधिकतोर से किया जाता है । अतः फरुखाबाद घराने में तिनो उँगलीयों का प्रयोग करके पेशकार बजाया जाता है । जिस में 'घिडान' शब्द में 'न' वर्ण में अनामिका उँगली का विशेष प्रयोग किया जाता है । दिल्ली घराने के पेशकार में 'तित्' शब्द का प्रयोग अधिक तोर से किया जाता है । अतः फरुखाबाद घराने में 'तिटघिडान' शब्द का प्रयोग किया जाता है । दिल्ली घराने के पेशकार में ज्यादातर पलटो में खाली–भरी दिखाई देती है । अतः फरुखाबाद घराने के पेशकार में हमेशा खाली–भरी को ही नहीं बजाते किन्तु 'किडनकतिंना' शब्द का प्रयोग करके कुछ छूट जैसा बजाकर तिहाई या अन्य शब्दसमूह को लेकर पलटे को पूर्ण किया जाता है ।

दिल्ली घराने के पेशकार के पलटो में छंद, जाति, लय–लयकारी का बहुत कम प्रयोग किया जाता है । किन्तु फरुखाबाद घराने के पेशकार के पलटो में इन तिनो अंग का सुंदर प्रयोग किया जाता है । दिल्ली घराने के पेशकार को समापन करते समय आखरी पलटा को ध्यान में रखते हुए उसी लय के मिजाज का पेशकार कायदा बजाया जाता है । अतः फरुखाबाद घराने में

पेशकार को समापन करते समय कोई भी कायदा लय को ध्यान में रखते हुए १३ वी मात्रा से पेशकार कायदा बजाया जाता है । दिल्ली घराने में केवल शुद्ध पेशकार ही बजाया जाता है जो ४–४ के अंग अनुसार होता है । किन्तु फरुखाबाद घराने में ४.५–३.५ जैसे कोई भी मात्रा का बंधन न रखकर उसे प्रस्तुत किया जाता है । दिल्ली घराने का पेशकार ताल के खंड अनुसार प्रस्तुत किया जाता है। किन्तु फरुखाबाद घराने में खंड के अनुसार प्रस्तुतिकरण करना ऐसा कोई नियम नहीं है । पं. उमेश मोघे जी के साथ साक्षात्कार करते समय शोधार्थी को कथित हुआ की दिल्ली घराने का पेशकार संपूर्णतः उपज अंग से ही बजाया जाता है, परंतु फरुखाबाद घराने में कुछ खास बोलों को लेकर पेशकार का विस्तार किया जाता है । पेशकार के स्थान पर उ. थिरकवाँ खाँ साहब 'फर्शबंदी' का प्रयोग करके वादन की शुरुआत करते थे ।

वर्तमान समय में कार्यक्रम की समय मर्यादा को ध्यान में रखकर वादक को अधिकतम आठ या दस मिनिट में पेशकार को न्याय देना होता है । इसलिए वादक को उस दस मिनिट में पेशकार के सभी अंगों को बजाने की आवश्यकता होती है । अतः कही बार वादक को कुछ विशेष विचार प्रस्तुत करने की आकांक्षा होकर भी वह प्रस्तुत नहीं कर पाता है । यह एक मर्यादा है ।

३ः१ः३ कायदा ः

''कायदा शब्द अरबी भाषा के कैद शब्द से बना है । अतः कुछ निश्चित नियमों के बंधन में रहना ही कायदे से रहना है ।''[७] ''तबला वादन में कलापूर्ण प्रस्तुतीकरण करने का सबसे नवनिर्मित से भरा हुआ आशयगर्भ वादन प्रकार कोई है तो वह है कायदा ।''[८] ''कायदा सुनियोजित एवं व्यंजन प्रधान शब्द या शब्दसमुह और उनके पूरकसहायक स्र्वम्य अंतिम शब्दों की बनी हुई विस्तारश्रम, खंडबद्ध, खाली–भरी युक्त और तालाकार कलापूर्ण एसी रचनायें जिसकी प्रस्तुती मध्य तथा दृत लय में होती है ।''[९]

''जब कुछ एसे बोलों को ताल के विभागों के अनुसार खाली–भरी दिखाते हुए प्रस्तार किया जा सके तथा बजाया जाता है उसे कायदा कहते है ।''[१०]

तालयोगी पं. सुरेश तलवलकर जी के मतानुसार ''स्वतंत्र वादन में कायदा यह तबले के आरोह–अवरोह है । जैसे शास्त्रीय गायन में राग में स्वरों का चढाँव–उतार गायाँ जाता है वैसे ही तबला वादन में कायदे का स्थान खाली–भरी के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है ।''[११]

कायदे का शाब्दीक अर्थ है नियम । तबले में स्वतंत्र वादन में ढाँचा,नियम का चुस्त पालन करनेवाली विस्तारक्षम रचना कायदा है । परंतु यह नियम केसे होने चाहिए इस विषय पर शोधार्थी पुष्टि करेगा ।

(१) कायदा यह तबले पर बजनेवाले वर्ण पर से किसी एक वर्णो पर आधारित होना चाहिए । जैसे तिट, तिरकिट, त्रक, घिरधिर आदि ।

(२) कायदा यह ताल के विभाग अनुसार होना चाहिए । अर्थात कायदा यह केवल गणीत की दृष्टिकोन से नहीं होना चाहिए ।

(३) कायदा यह मुख्य दो भागों में विभाजित होना चाहिए । पहला भाग सम से खाली तक और दुसरा भाग खाली से सम तक होना चाहिए यदि एसा न हो तो उसे कायदा नहीं कहेंगे । अर्थात खाली–भरी कायदे में स्पष्ट रूप सें दिखनी चाहिए ।

(४) कायदे की रचना करते समय वह किस घराने से सबंधित है यह वाग्येकार को ज्ञात होना चाहिए ।

(५) कायदा सौन्दर्य प्रधान होना चाहिए उस प्रकार हो की उसके पल्टे, विस्तार, बल, पेच हो सके ।

(६) कायदा सौन्दर्य प्रधान होना चाहिए तथा विलंबित लय में ताल का पूर्ण आवर्तन का उपयोग होना चाहिए ।

अतः कायदा यह तबला वादक का गृहपाठ है । कोई भी तबला वादक को उसका हाथ का रखाव सही होने के लिए कायदों का रियाज करना अत्यंत आवश्यक है । अतः स्वतंत्रवादन में कायदे का बहुत बड़ा स्थान है । कायदा यह साथ–संगत में भी उतनी ही महत्वपूर्ण बंदिश है खास तौर से तंतु वाद्य के साथ–संगत करते समय कायदे का प्रयोग किया जाता है ।

३:१:३:१ रचना : कायदा (दिल्ली घराना)

ताल : तीनताल लय : विलंबीत

जाति : चतुश्र मुख्य बोल : तिट

धाति	टधा	तिट	धाधा	।	तिट	धागे	तिना	किना	।
x					2				
ताति	टता	तिट	धाधा	।	तिट	धागे	धिना	गिना	।
o					3				

- पल्टे :

१)

धाति	टधा	तिट	धाधा	।	धाति	टधा	तिट	धाधा	।
x					2				
धाति	टधा	तिट	धाधा	।	तिट	धागे	तिना	किना	।
o					3				
ताति	टता	तिट	ताता	।	ताति	टता	तिट	ताता	।
x					2				
धाति	टधा	तिट	धाधा	।	तिट	धागे	धिना	गीना	।
o					3				

२)

धाति	टधा	तिट	तिट	।	धाति	टति	टधा	तिट	।
x					2				
धाति	टधा	तिट	धाधा	।	तिट	धागे	तिना	किना	।
o					3				
ताति	टता	तिट	तिट	।	ताति	टति	टता	तिट	।
x					2				
धाति	टधा	तिट	धाधा	।	तिट	धागे	धिना	गिना	।
o					3				

३)

धाति	टति	टधा	तिट	।	तिट	धाधा	तिट	तिट	।
x					2				
धाति	टधा	तिट	धाधा	।	तिट	धागे	तिना	किना	।
o					3				
ताति	टति	टता	तिट	।	तिट	ताता	तिट	तिट	।
x					2				
धाति	टधा	तिट	धाधा	।	तिट	धागे	धिना	गिना	।
o					3				

- पल्टे :

४)

तिट	धाधा	धाति	टधा	।	तिट	धागे	धिना	गीना	।
x					2				
धाति	टधा	तिट	धाधा	।	तिट	धागे	तिना	किना	।
o					3				
तिट	ताता	ताति	टता	।	तिट	ताके	तिना	किना	।
x					2				
धाति	टधा	तिट	धाधा	।	तिट	धागे	धिना	गीना	।
o					3				

५)

धाति	टधा	धाति	टधा	।	धाधा	तिट	तिट	तिट	।
x					2				
धाति	टधा	तिट	धाधा	।	तिट	धागे	तिना	किना	।
o					3				
ताति	टता	ताति	टता	।	ताता	तिट	तिट	तिट	।
x					2				
धाति	टधा	तिट	धाधा	।	तिट	धागे	धिना	गीना	।
o					3				

- तिहाई :

धाति	टधा	तिट	धाधा	।	तिट	धागे	तिना	किना	।	
x					2					
धाऽ	धाऽ	धाऽ	धाति	।	टधा	तिट	धाधा	तिट	।	
o					3					
धागे	तिना	किना	धाऽ	।	धाऽ	धाऽ	धाति	टधा	।	
x					2					
तिट	धाधा	तिट	धागे	।	तिना	किना	धाऽ	धाऽ	।	धा
o					3					x

३:१:३:१:२ रचना : कायदा (दिल्ली घराना)

ताल : तीनताल मुल रचनाकार : उ. सिद्दार खाँ साहब

प्राप्त : श्री अमोद दंडगे जाति : तिश्र लय : विलंबीत

मुख्य बोल : क्डघेतिट

x	धाऽक्ड़	घेतिट	धागेति	रकिट	।
2	धागेति	टधागे	नागेति	नाकिना	।
0	ताऽकऽ	तेतिट	ताकेति	रकिट	।
3	धागेति	टधागे	नागेधि	नागीना	।

- पल्टे :

१)

x	धाऽक्ड	घेतिट	धागेति	रकिट	।
2	धाऽक्ड	घेतिट	धागेति	रकिट	।
0	धाऽक्ड	घेतिट	धागेति	रकिट	।
3	धागेति	टधागे	नागेति	नाकिना	।
x	ताऽक्ड	तेतिट	ताकेति	रकिट	।
2	ताऽक्ड	तेतिट	ताकेति	रकिट	।
0	धाऽक्ड	घेतिट	धागेति	रकिट	।
3	धागेति	टधागे	नागेधि	नागीना	।

- पल्टे :

२)	धाऽक्ड (x)	घेतिट	ऽऽक्ड	घेतिट	।
	ऽऽक्ड (2)	घेतिट	धागेति	नाकिना	।
	ताऽक्ड (0)	तेतिट	ऽऽक्ड	तेतिट	।
	ऽऽक्ड (3)	घेतिट	धागेधि	नागीना	।

३)	धाऽक्ड (x)	घेतिट	धागेति	रकिट	।
	धागेति (2)	रकिट	धागेति	नाकिना	।
	ताऽक्ड (0)	तेतिट	ताकेति	रकिट	।
	धागेति (3)	रकिट	धागेधि	नागीना	।

४)	तिटधा (x)	गेधिना	गिनाति	रकिट	।
	धागेति (2)	टधागे	नागेति	नाकीना	।
	तिटता (0)	केतिना	किनाति	रकिट	।
	धागेति (3)	टधागे	नागेधि	नागीना	।

- ५)

धाऽक्ड x	घेतिट	धागेना	धागेति	।
रकिट 2	धागेना	धागेति	नाकिना	।
ताऽक्ड 0	तेतिट	ताकेना	ताकेति	।
रकिट 3	धागेना	धागेधि	नागिना	।

- तिहाई :

धाऽक्ड x	घेतिट	धागेति	रकिट	।	
धाऽऽ 2	ऽऽऽ	धाऽक्ड	घेतिट	।	
धागेति 0	रकिट	धाऽऽ	ऽऽऽ	।	
धाऽक्ड 3	घेतिट	धागेति	रकिट	।	धा X

३:१:३:१:३ रचना : कायदा (पारंपरीक)

ताल : तीनताल जाति : चतुश्र

लय : विलंबीत मुख्य बोल : धा

गिनातिट x	गिनाधागे	धिनागीना	तिटगिना	।
धाऽतिरकिटधा 2	गेनातिट	गेनाधागे	तिनाकिना	।
किनातिट 0	किनाताके	तिनाकिना	तिटगिना	।
धाऽतिरकिटधा 3	गेनातिट	गेनाधागे	धिनागिना	।

- पल्टा १ :

गिनातिट (x)	गिनाधागे	धिनागिना	गिनातिट	।
गिनाधागे (2)	धिनागिना	गिनाधागे	तिनाकिना	।
गिनातिट (0)	गिनाधागे	धिनागिना	तिटगिना	।
धाऽतिरकिटधा (3)	गेनातिट	गेनाधागे	तिनाकिना	।
किनातिट (x)	किनाताके	तिनाकिना	किनातिट	।
किनाताके (2)	तिनाकिना	किनाताके	तिनाकिना	।
गिनातिट (0)	गिनाधागे	धिनागिना	तिटगिना	।
धाऽतिरकिटधा (3)	गेनातिट	गिनाधागे	धिनागिना	।

- पल्टा २ :

गिनातिट (x)	तिटगिना	तिटतिट	गिनातिट	।
धाऽतिरकिटधा (2)	गेनातिट	गेनाधागे	तिनाकिना	।
किनातिट (0)	तिटकिना	तिटतिट	किनातिट	।
धाऽतिरकिटधा (3)	गेनातिट	गीनाधागे	धिनागीना	।

- पल्टा ३ :

गिनातिट x	गिनातिट	गिनातिट	गिनातिट	।
गिनाधागे 2	धिनागीना	गिनाधागे	धिनागीना	।
गिनातिट 0	गिनाधागे	धिनागीना	तिटगिना	।
धाऽतिरकिटधा 3	गेनातिट	गेनाधागे	तिनाकिना	।
किनातिट x	किनातिट	किनातिट	किनातिट	।
किनाताके 2	तिनाकिना	किनाताके	तिनाकिना	।
गिनातिट 0	गिनाधागे	धिनागीना	तिटगिना	।
धाऽतिरकिटधा 3	गेनातिट	गिनाधागे	धिनागीना	।

- पल्टा ४ :

गिनातिट x	गिनाधागे	धिनागीना	तिटगिना	।
धागेधिना 2	गीनातिट	गिनाधागे	धिनागीना	।
गिनातिट 0	गिनाधागे	धिनागीना	तिटगिना	।
धाऽतिरकिटधा 3	गेनातिट	गेनाधागे	तिनाकिना	।

x	किनातिट	किनाताके	तिनाकिना	तिटकिना	।
2	ताकेतिना	किनातिट	किनाताके	तिनाकिना	।
0	गिनातिट	गिनाधागे	धिनागीना	तिटगिना	।
3	धाऽतिरकिटधा	गेनातिट	गिनाधागे	धिनागीना	।

- पल्टा ५ :

x	गिनातिट	गिनाधागे	धिनागीना	तिटगिना	।
2	धाऽतिरकिटधा	गेनातिट	गेनाधागे	धिनागिना	।
0	धाऽतिरकिटधा	गेनाधाऽतिर	किटधागेना	तिटगिना	।
3	धाऽतिरकिटधा	गेनातिट	गेनाधागे	तिनाकिना	।
x	किनातिट	किनाताके	तिनाकिना	तिटकिना	।
2	ताऽतिरकिटता	केनातिट	किनाताके	तिनाकिना	।
0	धाऽतिरकिटधा	गेनाधाऽतिर	किटधागेना	तिटगिना	।
3	धाऽतिरकिटधा	गेनातिट	गेनाधागे	धिनागीना	।

- तिहाई :

गिनातिट x	गिनाधागे	धिनागिना	तिटगिना	।
धाऽधाऽ 2	धाऽगिना	तिटगिना	धागेधिना	।
गिनातिट 0	गिनाधाऽ	धाऽधाऽ	गिनातिट	।
गिनाधागे 3	धिनागिना	तिटगिना	धाऽधाऽ	। धा x

३:१:३:१:४

रचना : कायदा

ताल : तीनताल लय : विलंबीत

प्राप्त : प्रोफे. डॉ. अजय अष्टपुत्रे जाति : चतुश्र

मुख्य बोल : तिरकिट, धाती

धाऽतिरकिटधाऽ x	धिंनाधाधा	धिंनाधाती	धाधाधिंना	।
धाऽतीत्ऽऽधाऽ 2	तिरकिटधाधा	तिरकिटधाती	धाधातिंना	।
ताऽतिरकिटताऽ 0	तिंनाताता	तिंनाताती	तातातिंना	।
धाऽतीत्ऽऽधाऽ 3	तिरकिटधाधा	तिरकिटधाती	धाधाधिंना	।

- पल्टा १ :

धाऽतिरकिटधाऽ	धिंऽनाऽधाऽतिर	किटधाऽधिंना	धाधाधिंना	।	x
धाऽतीत्ऽऽधाऽ	तिरकिटधाधा	तिरकिटधाती	धाधातिंना	।	2
ताऽतिरकिटताऽ	तिंऽनाऽताऽतिर	किटताऽतिंना	ताताातिंना	।	0
धाऽतीत्ऽऽधाऽ	तिरकिटधाधा	तिरकिटधाती	धाधाधिंना	।	3

- पल्टा २ :

धाऽतिरकिटधाऽ	धिंऽनाऽतिरकिट	धाऽधिंनाऽतिर	किटधाधिंना	।	x
धाऽतीत्ऽऽधाऽ	तिरकिटधाधा	तिरकिटधाती	धाधातिंना	।	2
ताऽतिरकिटताऽ	तिंऽनाऽतिरकिट	ताऽतिंनाऽतिर	किटतातिंना	।	0
धाऽतीत्ऽऽधाऽ	तिरकिटधाधा	तिरकिटधाती	धाधाधिंना	।	3

- पल्टा ३ :

तिरकिटधाती	धाधाधिंना	तिरकिटधाती	धाधाधिंना	।	x
धाऽतीत्ऽऽधाऽ	तिरकिटधाधा	तिरकिटधाती	धाधातिंना	।	2
तिरकिटताती	तातातिंना	तिरकिटताती	तातातिंना	।	0
धाऽतीत्ऽऽधाऽ	तिरकिटधाधा	तिरकिटधाती	धाधाधिंना	।	3

- पल्टा ४ :

धाऽतीत्धाऽ (x)	तिरकिटधाती	धाऽतिरकिटधा	तीधाऽतिरकिट	।
धाऽतीत्ऽऽधाऽ (2)	तिरकिटधाधा	तिरकिटधाती	धाधातिंना	।
ताऽतीत्ताऽ (0)	तिरकिटताती	ताऽतिरकिटता	तीताऽतिरकिट	।
धाऽतीत्ऽऽधाऽ (3)	तिरकिटधाधा	तिरकिटधाती	धाधाधिंना	।

- पल्टा ५ :

धाऽतिरकिटधाऽ (x)	धिंनाधिंना	धाधिंनाधिं	नाधाधिंना	।
धाऽतीत्ऽऽधाऽ (2)	तिरकिटधाधा	तिरकिटधाती	धाधातिंना	।
ताऽतिरकिटताऽ (0)	तिंनातिंना	तातिंनातिं	नातातिंना	।
धाऽतीत्ऽऽधाऽ (3)	तिरकिटधाधा	तिरकिटधाती	धाधाधिंना	।

- तिहाई :

धाऽतीत्धाऽधाऽ (x)	तिरकिटधाती	धाधातिंना	धाऽधाऽ	।
धाऽऽऽऽऽ (2)	ऽऽऽऽऽऽऽऽ	धाऽतीत्धाऽधाऽ	तिरकिटधाती	।
धाधातिंना (0)	धाऽधाऽ	धाऽऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽऽऽऽ	।
धाऽतीत्धाऽधाऽ (3)	तिरकिटधाती	धाधातिंना	धाऽधाऽ	। धा (x)

३:१:३:१:५

रचना : कायदा

ताल : तीनताल　　　　　　　　लय : विलंबीत

प्राप्त : तबले की बंदीशे - लेखक : डॉ. आबान मिस्त्री

जाति : चतुश्र　　　　　　　　मुख्य बोल : धिट

धाति	टधि	टधा	घेन	।	धिना	घेन	धाधा	घेना	।
x					2				
तिना	घेन	धाति	टधि	।	टधा	घेन	तिना	किना	।
o					3				
ताति	टति	टता	केन	।	तिना	केना	ताता	केना	।
x					2				
तिना	घेन	धाति	टधि	।	टधा	घेन	धिना	गिना	।
o					3				

- पल्टा १ :

धाति	टधि	टधा	घेन	।	धिना	घेन	धाधा	घेना	।
x					2				
धाति	टधि	टधा	घेन	।	धिना	घेन	धाधा	घेना	।
o					3				
धाति	टधि	टधा	घेन	।	धिना	घेन	धाधा	घेना	।
x					2				
तिना	घेन	धाति	टधि	।	टधा	घेन	तिना	किना	।
o					3				
ताति	टति	टता	केन	।	तिना	केना	ताता	केना	।
x					2				
ताति	टति	टता	केन	।	तिना	केना	ताता	केना	।
o					3				
धाति	टधि	टधा	घेन	।	धिना	घेन	धाधा	घेना	।
x					2				
तिना	घेन	धाति	टधि	।	टधा	घेन	धिना	गिना	।
o					3				

- पल्टा २ :

धाति	टधि	टधा	घेन	।	धाऽ	ऽधा	गेन	धाऽ	।
x					2				
ऽधा	गेन	धाति	टधि	।	टधा	घेन	तिना	किना	।
o					3				
ताति	टति	टता	केन	।	ताऽ	ऽता	केन	ताऽ	।
x					2				
ऽधा	गेन	धाति	टधि	।	टधा	घेन	धिना	गिना	।
o					3				

- पल्टा ३ :

धाति	टधि	टधि	टधा	।	गेन	धागे	नधि	टधि	।
x					2				
टधा	गेन	धाति	टधि	।	टधा	घेन	तिना	किना	।
o					3				
ताति	टति	टति	टता	।	केन	ताके	नति	टति	।
x					2				
टधा	गेन	धाति	टधि	।	टधा	घेन	धिना	गिना	।
o					3				

- पल्टा ४ :

धाति	टधि	टधा	गेन	।	धिट	ऽधि	टधा	गेन	।
x					2				
तिना	घेन	धाति	टधि	।	टधा	घेन	तिना	किना	।
o					3				
ताति	टति	टता	केन	।	तिट	ऽति	टता	केन	।
x					2				
तिना	घेन	धाति	टधि	।	टधा	घेन	धिना	गिना	।
o					3				

- पल्टा ५ :

धाधा	घेना	तिना	घेना	।	धाधा	घेना	तिना	घेना	।
x					2				
धाधा	घेना	धाति	टधि	।	टधा	घेन	तिना	किना	।
o					3				
ताता	केना	तिना	केना	।	ताता	केना	तिना	केना	।
x					2				
धाधा	घेना	धाति	टधि	।	टधा	घेन	धिना	गिना	।
o					3				

- तिहाई

धाति	टधि	टधा	गेन	।	तिट	ताके	नधि	टधा	।
x					2				
गेन	धाऽ	धाऽ	धाति	।	टधि	टधा	गेन	तिट	।
o					3				
ताके	नधि	टधा	गेन	।	धाऽ	धाऽ	धाति	टधि	।
x					2				
टधा	गेन	तिट	ताके	।	नधि	टधा	गेन	धाऽ	।
o					3				

३:१:३:१:६ रचना : कायदा

ताल : तीनताल लय : विलंबीत

प्राप्त : तबले की बंदीशे - लेखक : डॉ. आबान मिस्त्री

जाति : चतुश्र मुख्य बोल : धिटकिट

धाऽ	ऽधा	तिधा	गेन	।	धाति	धागे	धिना	गिना	।
x					2				
धाधा	तिरकिट	तकधिट	धिटकिट	।	धाती	धागे	तिना	किना	।
o					3				
ताऽ	ऽता	तिता	केन	।	ताति	ताके	तिना	किना	।
x					2				
धाधा	तिरकिट	तकधिट	धिटकिट	।	धाती	धागे	धिना	गिना	।
o					3				

- पल्टा १ :

धाऽ	ऽधा	तिधा	गेन	।	धाति	धागे	धिना	गिना	।
x					2				
धाऽ	ऽधा	तिधा	गेन	।	धाति	धागे	धिना	गिना	।
o					3				
धाऽ	ऽधा	तिधा	गेन	।	धाति	धागे	धिना	गिना	।
x					2				
धाधा	तिरकिट	तकधिट	धिटकिट	।	धाती	धागे	तिना	किना	।
o					3				
ताऽ	ऽता	तिता	केन	।	ताति	ताके	तिना	किना	।
x					2				
ताऽ	ऽता	तिता	केन	।	ताति	ताके	तिना	किना	।
o					3				
धाऽ	ऽधा	तिधा	गेन	।	धाति	धागे	धिना	गिना	।
x					2				
धाधा	तिरकिट	तकधिट	धिटकिट	।	धाती	धागे	धिना	गिना	।
o					3				

- पल्टा २ :

धाऽ	ऽधा	तिधा	गेन	।	धाधा	तीधा	तीधा	गेन	।
x					2				
धाधा	तिरकिट	तकधिट	धिटकि	।	धाती	धागे	तिना	किना	।
o					3				
ताऽ	ऽता	तीता	केन	।	ताता	तीता	तीता	केन	।
x					2				
धाधा	तिरकिट	तकधिट	धिटकिट	।	धाती	धागे	धिना	गिना	।
o					3				

- पल्टा ३ :

धाऽ	धाती	धागे	धिना	।	गिना	धाऽ	धाती	धागे	।
x					2				
धिना	गिना	तकधिट	धिटकिट	।	धाती	धागे	तिना	किना	।
o					3				
ताऽ	ताती	ताके	तिना	।	किना	ताऽ	ताती	ताके	।
x					2				
तिना	किना	तकधिट	धिटकिट	।	धाती	धागे	धिना	गीना	।
o					3				

- पल्टा ४ :

धाती	धाती	धागे	धिना	।	गिना	धाती	धाती	धागे	।
x					2				
धिना	गिना	तकधिट	धिटकिट	।	धाती	धागे	तिना	किना	।
o					3				
ताती	ताती	ताके	तिना	।	किना	ताती	ताती	ताके	।
x					2				
तिना	किना	तकधिट	धिटकिट	।	धाती	धागे	धिना	गिना	।
o					3				

- पल्टा ५ :

धाऽ	ऽधा	तीधा	गेन	।	ऽऽ	ऽधा	तीधा	गेन	।
x					2				
ऽऽ	ऽधा	तीधा	गेन	।	धाती	धागे	तिना	किना	।
o					3				
ताऽ	ऽता	तीता	केन	।	ऽऽ	ऽता	तीता	केन	।
x					2				
ऽऽ	ऽधा	तीधा	गेन	।	धाती	धागे	धिना	गिना	।
o					3				

- तिहाई :

धाऽ	ऽधा	तीधा	गेन	।	धाति	धागे	तिना	किना	।	
x					2					
धाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	।	धाऽ	ऽधा	तीधा	गेन	।	
o					3					
धाति	धागे	तिना	किना	।	धाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	।	
x					2					
धाऽ	ऽधा	तीधा	गेन	।	धाति	धागे	तिना	किना	।	धा
o					3					x

३:१:३:१:७

रचना : कायदा

ताल : तीनताल लय : विलंबीत

प्राप्त : डॉ. केदार मुकादम जाति : चतुश्र

मुख्य बोल : तीत्

धाऽगेना	तीत्धाऽ	तीत्धागे	नतीत्धा	।
x				
तीधागेन	तीधागेन	धातीधागे	तिनाकिना	।
2				
ताऽकेना	तीत्ताऽ	तीत्ताके	नतीत्धा	।
o				
तीधागेन	तीधागेन	धातीधागे	धिनागीना	।
3				

- पल्टा १ :

धाऽगेना	तीत्ऽधा	तीधागेन	तीधागेन	।	x
धाऽगेना	तीत्ऽधा	तीधागेन	तीधागेन	।	2
धाऽगेना	तीत्धाऽ	तीत्धागे	नतीत्धा	।	o
तीधागेन	तीधागेन	धातीधागे	तिनाकिना	।	3
ताऽकेना	तीत्ऽता	तीताकेन	तीताकेन	।	x
ताऽकेना	तीत्ऽता	तीताकेन	तीताकेन	।	2
धाऽगेना	तीत्धाऽ	तीत्धागे	नतीत्धा	।	o
तीधागेन	तीधागेन	धातीधागे	धिनागीना	।	3

- पल्टा २ :

धाऽगेना	तीत्धाती	धागेनधा	तीधागेन	।	x
तीधागेन	तीधागेन	धातीधागे	तिनाकिना	।	2
ताऽकेना	तीत्ताती	ताकेनता	तीताकेन	।	o
तीधागेन	तीधागेन	धातीधागे	धिनागीना	।	3

- पल्टा ३ :

x	धातीधाती	ऽधातीधा	गेनाधागे	धिनागीना	।
2	तीधागेन	तीधागेन	धातीधागे	तिनाकिना	।
o	तातीताती	ऽतातीता	केनताके	तिनकिना	।
3	तीधागेन	तीधागेन	धातीधागे	धिनागीन	।

- पल्टा ४ :

x	धाऽगेना	तीत्धाऽ	तीत्धागे	नतीत्धा	।
2	तीधागेन	तीधागेन	धातीधागे	तिनाकिना	।
o	तीधागेन	तीत्धाऽ	तीत्धागे	नतीत्धा	।
3	तीधागेन	तीधागेन	धातीधागे	धिनागीना	।

- पल्टा ५ :

x	धाऽतीधा	तीधागेन	धागेनधा	तीधागेन	।
2	तीधातीधा	तीधागेन	धातीधागे	तिनाकिना	।
o	ताऽतीता	तीताकेन	ताकेनता	तीताकेन	।
3	तीधातीधा	तीधागेन	धातीधागे	धिनागीना	।

- तिहाई :

धाऽगेना x	तीत्धागे	नातीत्धा	गेनातीत्	।	
धाऽऽऽ 2	ऽऽऽऽ	धाऽगेना	तीत्धागे	।	
नातीत्धा o	गेनातीत्	धाऽऽऽ	ऽऽऽऽ	।	
धाऽगेना 3	तीत्धागे	नातीत्धा	गेनातीत्	।	धा x

३:१:३:१:८

रचना : कायदा

ताल : तीनताल लय : विलंबीत

प्राप्त : तबले की बंदीशे - लेखक : डॉ. आबान मिस्त्री

जाति : चतुश्र मुख्य बोल : तिट, त्रक

धागे	तिट	धागे	त्रक	।	धिना	गिना	धागे	त्रक	।
x					2				
धागे	नधा	त्रक	धिट	।	धागे	त्रक	तिना	किना	।
o					3				
ताके	तिट	ताके	त्रक	।	तिना	किना	ताके	त्रक	।
x					2				
धागे	नधा	त्रक	धिट	।	धागे	त्रक	धिना	गिना	।
o					3				

- पल्टा १ :

धागे	तिट	धागे	त्रक	।	धिना	गिना	धागे	त्रक	।
x					2				
धागे	तिट	धागे	त्रक	।	धिना	गिना	धागे	त्रक	।
o					3				
धागे	तिट	धागे	त्रक	।	धिना	गिना	धागे	त्रक	।
x					2				
धागे	नधा	त्रक	धिट	।	धागे	त्रक	तिना	किना	।
o					3				
ताके	तिट	ताके	त्रक	।	तिना	किना	ताके	त्रक	।
x					2				
ताके	तिट	ताके	त्रक	।	तिना	किना	ताके	त्रक	।
o					3				
धागे	तिट	धागे	त्रक	।	धिना	गिना	धागे	त्रक	।
x					2				
धागे	नधा	त्रक	धिट	।	धागे	त्रक	धिना	गिना	।
o					3				

- पल्टा २ :

धागे	तिट	धागे	त्रक	।	धिना	गिना	धागे	तिट	।
x					2				
धागे	त्रक	धिना	गिना	।	धागे	त्रक	तिना	किना	।
o					3				
ताके	तिट	ताके	त्रक	।	तिना	किना	ताके	तिट	।
x					2				
ताके	त्रक	तिना	किना	।	धागे	त्रक	धिना	गिना	।
o					3				

- पल्टा ३ :

धागे	त्रक	धिना	गिना	।	धागे	त्रक	धिना	गिना	।
x					2				
धागे	नधा	त्रक	धिट	।	धागे	त्रक	तिना	किना	।
o					3				
ताके	त्रक	तिना	किना	।	ताके	त्रक	तिना	किना	।
x					2				
धागे	नधा	त्रक	धिट	।	धागे	त्रक	धिना	गिना	।
o					3				

- पल्टा ४ :

धागे	त्रक	धिना	गिना	।	धागे	धिना	गिना	धागे	।
x					2				
धिना	गिना	धागे	तिट	।	धागे	त्रक	तिना	किना	।
o					3				
ताके	त्रक	तिना	किना	।	ताके	तिना	किना	ताके	।
x					2				
तिना	किना	धागे	तिट	।	धागे	त्रक	धिना	गिना	।
o					3				

- पल्टा ५ :

धागे x	तिट	धागे	त्रक	।	धिना 2	धागे	तिट	धागे	।
त्रक o	धिना	धागे	तिट	।	धागे 3	त्रक	तिना	किना	।
ताके x	तिट	ताके	त्रक	।	तिना 2	ताके	तिट	ताके	।
त्रक o	तिना	धागे	तिट	।	धागे 3	त्रक	धिना	गिना	।

- तिहाई :

धागे x	तिट	धागे	त्रक	।	तिना 2	किना	धाऽ	ऽऽ	।	
धाऽ o	ऽऽ	धाऽ	धागे	।	तिट 3	धागे	त्रक	तिना	।	
किना x	धाऽ	ऽऽ	धाऽ	।	ऽऽ 2	धाऽ	धागे	तिट	।	
धागे o	त्रक	तिना	किना	।	धाऽ 3	ऽऽ	धाऽ	ऽऽ	।	धा x

३:१:३:१:९

रचना : कायदा

ताल : तीनताल | लय : विलंबीत

प्राप्त : पं. पुष्कराज श्रीधर | जाति : चतुश्र

मुख्य बोल : तिट

धातिट धागेना धागेधि नातिट । धातिट धागेना धागेति नाकिना ।
x | | | | 2

तातिट ताकेना ताकेति नातिट । धातिट धागेना धागेधि नागीना ।
o | | | | 3

- पल्टा १ :

धातिट धागेना धागेधि नातिट । धातिट धागेना धागेधि नातिट ।
x | | | | 2

धातिट धागेना धागेधि नातिट । धातिट धागेना धागेति नाकिना ।
o | | | | 3

तातिट ताकेना ताकेति नातिट । तातिट ताकेना ताकेति नातिट ।
x | | | | 2

धातिट धागेना धागेधि नातिट । धातिट धागेना धागेधि नागीना ।
o | | | | 3

- पल्टा २ :

धातिट धागेना धागेधि नातिट । ऽधिना ऽतिट धागेधि नातिट ।
x | | | | 2

धातिट धागेना धागेधि नातिट । धातिट धागेना धागेति नाकिना ।
o | | | | 3

तातिट ताकेना ताकेति नातिट । ऽतिना ऽतिट ताकेति नातिट ।
x | | | | 2

धातिट धागेना धागेधि नातिट । धातिट धागेना धागेधि नागिना ।
o | | | | 3

- पल्टा ३ :

धातिट	धागेना	धागेधि	नातिट	।	धाऽधि	नातिट	धाऽधि	नातिट	।
x					2				
धातिट	धागेना	धागेधि	नातिट	।	धातिट	धागेना	धागेति	नाकिना	।
o					3				
तातिट	ताकेना	ताकेति	नातिट	।	ताऽति	नातिट	ताऽति	नातिट	।
x					2				
धातिट	धागेना	धागेधि	नातिट	।	धातिट	धागेना	धागेधि	नागीना	।
o					3				

- पल्टा ४ :

धातिट	धागेना	तिटधि	नातिट	।	तिटधि	नातिट	तिटधि	नातिट	।
x					2				
धातिट	धागेना	धागेधि	नातिट	।	धातिट	धागेना	धागेति	नाकिना	।
o					3				
तातिट	ताकेना	तिटति	नातिट	।	तिटति	नातिट	तिटति	नातिट	।
x					2				
धातिट	धागेना	तिटधि	नातिट	।	धातिट	धागेना	धागेधि	नागीना	।
o					3				

- पल्टा ५ :

तिटति	टधिना	तिटधि	नातिट	।	तिटधि	नातिट	तिटधि	नतिट	।
x					2				
धातिट	धागेना	धागेधि	नातिट	।	धातिट	धागेना	धागेति	नाकिना	।
o					3				
तिटति	टतिना	तिटति	नातिट	।	तिटति	नातिट	तिटति	नातिट	।
x					2				
धातिट	धागेना	धागेधि	नातिट	।	धातिट	धागेना	धागेधि	नागीना	।
o					3				

- तिहाई :

धातिट	धागेना	तिटधि	नातिट	।	धाऽऽऽ	ऽऽऽऽ	धातिट	धागेना	।
x					2				
तिटधि	नातिट	धाऽऽऽ	ऽऽऽऽ	।	धातिट	धागेना	तिटधि	नातिट	।
o					3				
धा									
x									

३:१:३:१:१०

रचना : कायदा (तबले का उद्गम एवं दिल्ली घराना)

ताल : तीनताल	मुल रचना : उ. गामी खाँ

प्राप्त : डॉ. कुमार ऋषितोष	लय : विलंबीत

जाति : चतुश्र	मुख्य बोल : तिट

धिना	तिट	धाति	टति	।	टधा	गेन	तिना	किना	।
x					2				
किना	तिट	ताति	टति	।	टधा	गेन	धिना	गिना	।
o					3				

- पल्टा १ :

धिना	तिट	धाति	टधा	।	धिना	तिट	धाति	टधा	।
x					2				
धिना	तिट	धाति	टति	।	टधा	गेन	तिना	किना	।
o					3				
किना	तिट	ताति	टता	।	किना	तिट	ताति	टता	।
x					2				
धिना	तिट	धाति	टति	।	टधा	गेन	धिना	गिना	।
o					3				

- पल्टा २ :

धिना	तिट	धाति	टति	।	टधा	गेन	तिना	तिट	।
x					2				
तिना	धिना	तिट	धाति	।	टधा	गेन	तिना	किना	।
o					3				
तिना	तिट	ताति	टति	।	टता	केन	तिना	तिट	।
x					2				
तिना	धिना	तिट	धाति	।	टधा	गेन	धिना	गिना	।
o					3				

- पल्टा ३ :

धिना	तिट	धाति	टता	।	तिट	धाति	टता	तिट	।
x					2				
धिना	तिट	धाति	टति	।	टधा	गेन	तिना	किना	।
o					3				
तिना	तिट	ताति	टता	।	तिट	ताति	टता	तिट	।
x					2				
धिना	तिट	धाति	टधि	।	टधा	गेन	धिना	गिना	।
o					3				

- पल्टा ४ :

धिना	धिना	तिट	धाति	।	टति	टधा	तिट	तिट	।
x					2				
धिना	तिट	धाति	टति	।	टधा	गेन	तिना	किना	।
o					3				
तिना	तिना	तिट	ताति	।	टति	टता	तिट	तिट	।
x					2				
धिना	तिट	धाति	टति	।	टधा	गेन	धिना	गिना	।
o					3				

- पल्टा ५ :

धिना	तिट	धाति	टधि	।	नाति	टधि	नाति	टधा	।
x					2				
तिट	धिना	तिट	धाति	।	टधा	गेन	तिना	किना	।
o					3				
तिना	तिट	ताति	टति	।	नाति	टति	नाति	टधा	।
x					2				
तिट	धिना	तिट	धाति	।	टधा	गेन	धिना	गिना	।
o					3				

- तिहाई :

धिना	तिट	धाति	टति	।	टधा	गेन	तिना	किना	।		
x					2						
धाऽ	धाऽ	धाऽ	धिना	।	तिट	धाति	टति	टधा	।		
o					3						
गेन	तिना	किना	धाऽ	।	धाऽ	धाऽ	धिना	तिट	।		
x					2						
धाति	टति	टधा	गेन	।	तिना	किना	धाऽ	धाऽ	।	धा	
o					3					X	

३:१:३:२ फरुखाबाद घराने के कायदे

रचना : झूलना छंद कायदा (पारंपरिक)

ताल : तीनताल　　　　　　　लय : विलंबीत

प्राप्त : पं. पुष्करराज श्रीधर　　　जाति : मिश्र

धागेना	धागेतिट	धागेना	धिनागिना	।	तिटधा	गेनातिट	धागेना	तिनाकिना	।
x					2				
ताकेना	ताकेतिट	ताकेना	तिनाकिना	।	तिटधा	गेनातिट	धागेना	धिनागिना	।
o					3				

- पल्टा - १ :

धागेना	धागेतिट	धागेना	धिनागिना	।	धागेना	धागेतिट	धागेना	धिनागिना	।
x					2				
धागेना	धागेतिट	धागेना	धिनागिना	।	तिटधा	गेनातिट	धागेना	तिनाकिना	।
o					3				
ताकेना	ताकेतिट	ताकेना	तिनाकिना	।	ताकेना	ताकेतिट	ताकेना	तिनाकिना	।
x					2				
धागेना	धागेतिट	धागेना	धिनागिना	।	तिटधा	गेनातिट	धागेना	धिनागिना	।
o					3				

- पल्टा - २ :

धागेना	धागेनधा	गेतिट	धिनागिना	।	तिटधा	गेनातिट	धागेना	तिनाकिना	।
x					2				
ताकेना	ताकेनता	केतिट	तिनाकिना	।	तिटधा	गेनातिट	धागेना	धिनागिना	।
o					3				

- पल्टा - ३ :

धागेति	टधागेना	धागेना	धिनागिना	।	तिटधा	गेनातिट	धागेना	तिनाकिना	।
x					2				
ताकेति	टताकेना	ताकेना	तिनाकिना	।	तिटधा	गेनातिट	धागेना	धिनागिना	।
o					3				

- पल्टा - ४ :

धागेना	धागेतिट	तिटधा	गेनातिट	।	धागेन	धागेतिट	धागेना	तिनाकिना	।
x					2				
ताकेना	ताकेतिट	तिटता	केनातिट	।	धागेन	धागेतिट	धागेना	धिनागिना	।
o					3				

- पल्टा - ५ :

तिटधा	तिटतिट	धागेना	तिटगिना	।	धागेना	धागेतिट	धागेना	तिनाकिना	।
x					2				
तिटता	तिटतिट	ताकेना	तिटकिना	।	धागेना	धागेतिट	धागेना	धिनागिना	।
o					3				

- तिहाई :

धागेना	धागेतिट	धागेना	गेनातिट	।	धाऽऽ	धागेना	गेनातिट	धाऽऽ	।
x					2				
धागेना	गेनातिट	धाऽऽ	धागेना	।	धागेतिट	धागेना	गेनातिट	धाऽऽ	।
o					3				
धागेना	गेनातिट	धाऽऽ	धागेना	।	गेनातिट	धाऽऽ	धागेना	धागेतिट	।
x					2				
धागेना	गेनातिट	धाऽऽ	धागेना	।	गेनातिट	धाऽऽ	धागेना	गेनातिट	।
o					3				

३:१:३:२:२

रचना : कायदा (पारंपरिक)

ताल : तीनताल — लय : विलंबीत

प्राप्त : डॉ. गौरांग भावसार — जाति : चतुश्र

- कायदा :

धिनताऽ	गेनातिट	गिनधागे	धिनागिना	।	तिटगिन	धागेतिट	गिनधागे	तिनाकिना	।
x					2				
किनताऽ	केनातिट	किनताके	तिनाकिना	।	तिटगिन	धागेतिट	गिनधागे	धिनागिना	।
o					3				

- पल्टा - १ :

धिनताऽ	ऽऽधिन	ताऽधिन	ताऽऽऽ	।	धिनताऽ	गेनातिट	गेनधागे	तिनाकिना	।
x					2				
किनताऽ	ऽऽकिन	ताऽकिन	ताऽऽऽ	।	धिनताऽ	गेनातिट	गेनधागे	धिनागिना	।
o					3				

- पल्टा - २ :

धिनताऽ	गेनातिट	गेनातिट	तिटगेना	।	तिटगेना	तिटतिट	गेनधागे	धिनागिना	।
x					2				
धिनताऽ	गेनातिट	गेनधागे	धिनागिना	।	तिटगिन	धाऽगेना	तिटगेन	तिनाकिना	।
o					3				
किनताऽ	केनातिट	केनातिट	तिटकेना	।	तिटकेना	तिटतिट	केनताके	तिनाकिना	।
x					2				
धिनताऽ	गेनातिट	गेनधागे	धिनागिना	।	तिटगिन	धाऽगेना	तिटगेना	धिनागिना	।
o					3				

- पल्टा - ३ :

घिनताऽ	गेनातिट	ऽधातिट	गेनाधागे	।	धिनागिना	गेनातिट	गेनधागे	धिनागिना	।
x					2				
घिनताऽ	गेनातिट	गेनाधागे	धिनागिना	।	तिटगिन	धाऽगेना	तिटगिन	तिनाकिना	।
o					3				
किनताऽ	गेनातिट	ऽतातिट	केनताके	।	तिनाकिना	केनातिट	केनताके	तिनाकिना	।
x					2				
घिनताऽ	गेनातिट	गेनधागे	धिनागिना	।	तिटगिन	धाऽगेना	तिटगिन	धिनागिना	।
o					3				

- पल्टा - ४ :

घिनताऽ	गेनातिट	गेनधागे	धिनाऽधा	।	गेनातिट	धागेनधा	तिटगिन	धिनागिना	।
x					2				
तिटगिन	धाऽतिट	गिनधाऽ	तिटगिन	।	धाऽऽधा	गेनातिट	गेनधागे	तिनाकिना	।
o					3				
किनताऽ	केनातिट	केनताके	तिनाऽता	।	केनातिट	ताकेनता	तिटकिन	तिनाकिना	।
x					2				
तिटगिन	धाऽतिट	गिनधाऽ	तिटगिन	।	धाऽऽधा	गेनातिट	गेनधागे	धिनागिना	।
o					3				

- पल्टा - ५ :

तिटगिन	धाऽऽधा	तिटगिन	धिनागिना	।	तिटगिन	धागेनधा	तिटगिन	तिनाकिना	।
x					2				
तिटकिन	ताऽऽता	तिटकिन	तिनाकिना	।	तिटगिन	धागेनधा	तिटगिन	धिनागिना	।
o					3				

• तिहाई :

घिनताऽ	गेनातिट	गिनधागे	धिनागिना	।	धाऽतिट	गिनधागे	धिनागिना	धाऽतिट	।
x					2				
गेनधागे	धिनागिना	धाऽऽऽ	घिनताऽ	।	गेनातिट	गिनधागे	धिनागिना	धाऽतिट	।
o					3				
गनधागे	धिनागिना	धाऽतिट	गेनधागे	।	धिनागिना	धाऽऽऽ	घिनताऽ	गेनातिट	।
x					2				
गिनधागे	धिनागिना	धाऽतिट	गिनधागे	।	धिनागिना	धाऽतिट	गेनधागे	धिनागिना	।
o					3				

३:१:३:२:३

रचना : कायदा (पारंपरिक)

ताल : तीनताल   लय : विलंबीत

प्राप्त : पं. पुष्करराज श्रीधर   जाति : चतुश्र

घिड़ाऽन	घिडनग	तक्ऽऽ	धाऽघिड	।	नगधिन	धाऽधाऽ	घिड़ाऽन	तिंऽनाऽ	।
x					2				
किड़ाऽन	किडनक	तक्ऽऽ	धाऽघिऽ	।	नगधिन	धाऽधाऽ	घिड़ाऽन	धिंऽनाऽ	।
o					3				

• पल्टा - १ :

घिड़ाऽन	घिडनग	तक्ऽऽ	घिडनग	।	तक्ऽऽ	घिडनग	तक्ऽऽ	घिडनग	।
x					2				
घिड़ाऽन	घिडनग	तक्ऽऽ	धाऽघिड	।	नगधिन	धाऽधाऽ	घिडनग	तिंऽनाऽ	।
o					3				
किड़ाऽन	किडनक	तक्ऽऽ	किडनक	।	तक्ऽऽ	किडनक	तक्ऽऽ	किडनक	।
x					2				
घिड़ाऽन	घिडनग	तक्ऽऽ	धाऽघिड	।	नगधिन	धाऽधाऽ	घिडनग	धिंऽनाऽ	।
o					3				

* पल्टा - २ :

घिड़ाऽन	घिडनग	घिडनग	तक्ऽऽ	।	घिडनग	घिडनग	तक्ऽऽ	घिडनग	।
x					2				
घिड़ाऽन	घिडनग	तक्ऽऽ	धाऽघिड	।	नगधिन	धाऽधाऽ	घिडनग	तिंऽनाऽ	।
o					3				
किड़ाऽन	किडनक	किडनक	तक्ऽऽ	।	किडनक	किडनक	तक्ऽऽ	किडनक	।
x					2				
घिड़ाऽन	घिडनग	तक्ऽऽ	धाऽघिऽ	।	नगधिन	धाऽधाऽ	घिडनग	धिंऽनाऽ	
o					3				

* पल्टा - ३ :

घिड़ाऽन	घिडनग	तकघिड	नगतक	।	तकघिड	नगतक	घिडनग	तकतक	।
x					2				
घिड़ाऽन	घिडनग	तक्ऽऽ	धाऽघिड	।	नगधिन	धाऽधाऽ	घिडनग	तिंऽनाऽ	।
o					3				
किड़ाऽन	किडनक	तककिड	नकतक	।	तककिड	नकतक	किडनक	तकतक	।
x					2				
घिड़ाऽन	घिडनग	तक्ऽऽ	धाऽघिड	।	नगधिन	धाऽधाऽ	घिडनग	धिंऽनाऽ	।
o					3				

* पल्टा - ४ :

घिड़ाऽन	घिडनग	तक्ऽऽ	घिडनग	।	तकघिड	नगतक्	ऽऽघिड	नगतक्	।
x					2				
घिड़ाऽन	घिडनग	तक्ऽऽ	धाऽघिड	।	नगधिन	धाऽधाऽ	घिडनग	तिंऽनाऽ	।
o					3				
किड़ाऽन	किडनक	तक्ऽऽ	किडनक	।	तककिड	नगतक्	ऽऽकिड	नगतक्	।
x					2				
घिड़ाऽन	घिडनग	तक्ऽऽ	धाऽघिड	।	नगधिन	धाऽधाऽ	घिडनग	धिंऽनाऽ	
o					3				

- पल्टा - ५ :

घिड़ाऽन	घिडनग	तक्ऽऽ	धाऽघिड	।	नगधिन	धाऽधाऽ	घिडनग	धिंऽनाऽ	।
x					2				
घिडनग	तकघिड	नगघिड	नगतक	।	घिडनग	धाऽधाऽ	घिडनग	तिंऽनाऽ	।
o					3				
किड़ाऽन	किडनक	तक्ऽऽ	ताऽकिड	।	नकतिन	ताऽताऽ	किडनक	तिंऽनाऽ	।
x					2				
घिडनग	तकघिड	नगघिड	नगतक	।	घिडनग	धाऽधाऽ	घिडनग	धिंऽनाऽ	।
o					3				

- तिहाई :

घिड़ाऽन	घिडनग	तक्ऽऽ	घिडनग	।	तक्ऽऽ	धाऽघिड	नगतक्	ऽऽधाऽ	।
x					2				
घिडनग	तक्ऽऽ	धाऽऽऽ	घिड़ाऽन	।	घिडनग	तक्ऽऽ	घिडनग	तक्ऽऽ	।
o					3				
धाऽघिड	नगतक्	ऽऽधाऽ	घिडनग	।	तक्ऽऽ	धाऽऽऽ	घिड़ाऽन	घिडनग	।
x					2				
तक्ऽऽ	घिडनग	तक्ऽऽ	धाऽघिड	।	नगतक्	ऽऽधाऽ	घिडनग	तक्ऽऽ	।
o					3				
धा									
x									

३:१:३:२:४

रचना : कायदा

ताल : तीनताल

मुख्य रचना : ऊ. अमीर हुसैन खाँ

लय : विलंबीत

प्राप्त : प्रोफे. डॉ. अजय अष्टपुत्रे

जाति : चतुश्र

धाऽनधाऽन x	धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	।
धिनधिनागिना 2	धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	।
तकतकतक o	धिनधिनागिना	तकतकतकत	धिनधिनागिना	।
धिनधिनागिना 3	धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	तिनतिनाकिना	।
ताऽनताऽन x	ताकेतिरकिट	ताऽकिडनक	तिनतिनाकिना	।
तिनतिनाकिना 2	ताकेतिरकिट	ताऽकिडनक	तिनतिनाकिना	।
तकतकतक o	तिनतिनाकिना	तकतकतक	धिनधिनागिना	।
धिनधिनागिना 3	धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	।

- पल्टा - १ :

धाऽनधाऽन x	धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	।
धागेतिरकिट 2	धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	धागेतिरकिट	।
धाऽगिडनग o	धिनधिनागिना	तकतकतकत	धिनधिनागिना	।
धिनधिनागिना 3	धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	तिनतिनाकिना	।

ताऽनताऽन x	ताकेतिरकिट	ताऽकिडनक	तिनतिनाकिना	।
ताकेतिरकिट 2	ताऽकिडनक	तिनतिनाकिना	ताकेतिरकिट	।
ताऽकिडनक o	तिनतिनाकिना	तकतकतक	धिनधिनागिना	।
धिनधिनागिना 3	धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	।

- पल्टा - २ :

धाऽनधाऽन x	धागेतिरकिट	धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	।
धिनधिनागिना 2	धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	।
तकतकतक o	धिनधिनागिना	तकतकतक	धिनधिनागिना	।
धिनधिनागिना 3	धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	तिनतिनाकिना	।
ताऽनताऽन x	ताकेतिरकिट	ताकेतिरकिट	ताऽकिडनक	।
तिनतिनाकिना 2	ताकेतिरकिट	ताऽकिडनक	तिनतिनाकिना	।
तकतकतक o	धिनधिनागिना	तकतकतक	धिनधिनागिना	।
धिनधिनागिना 3	धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	।

- पल्टा - ३ :

धाऽनधाऽन x	धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	।
तकधिनधिना 2	गिनातकधिन	धिनागिनातक	धिनधिनागिना	।
तकतकतक o	धिनधिनागिना	तकतकतक	धिनधिनागिना	।
धिनधिनागिना 3	धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	तिनतिनाकिना	।
ताऽनताऽन x	ताकेतिरकिट	ताऽकिडनक	तिनतिनाकिना	।
तकतिनतिना 2	किनातकतिन	तिनाकिनातक	तिनतिनाकिना	।
तकतकतक o	धिनधिनागिना	तकतकतक	धिनधिनागिना	।
धिनधिनागिना 3	धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	।

- पल्टा - ४ :

तकधिनतक x	धिनधिनागिना	तकधिनतक	धिनधिनागिना	।
तकधिनधिना 2	गिनातकधिन	धिनागिनातक	धिनधिनागिना	।
तकतकतक o	धिनधिनागिना	तकतकतक	धिनधिनागिना	।
धिनधिनागिना 3	धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	तिनतिनाकिना	।

तकतिनतक x	तिनतिनाकिना	तकतिनतक	तिनतिनाकिना	।
तकतिनतिना 2	किनातकतिन	तिनाकिनातक	तिनतिनाकिना	।
तकतकतक o	धिनधिनागिना	तकतकतक	धिनधिनागिना	।
धिनधिनागिना 3	धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	।

- पल्टा - ५ :

धाऽनधाऽन x	धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	।
घिडनगधिन 2	धिनागिनाघिड	नगघिडनग	धिनधिनागिना	।
तकतकतक o	धिनधिनागिना	तकतकतक	धिनधिनागिना	।
धिनधिनागिना 3	धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	तिनतिनाकिना	।
ताऽनताऽन x	ताकेतिरकिट	ताऽकिडनक	तिनतिनाकिना	।
किडनकतिन 2	तिनाकिनाकिड	नककिडनक	तिनतिनाकिना	।
तकतकतक o	धिनधिनागिना	तकतकतक	धिनधिनागिना	।
धिनधिनागिना 3	धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	।

- पल्टा - ६ :

धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	धागेतिरकिट	।
x				
धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	धाऽघिडनग	तिनतिनाकिना	।
2				
ताकेतिरकिट	ताऽकिडनक	तिनतिनाकिना	ताकेतिरकिट	।
o				
ताऽकिडनक	तिनतिनाकिना	धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	।
3				

- तिहाई :

धाऽनधाऽन	धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	।
x				
धाऽतिरकिट	धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	धाऽतिरकिट	।
2				
धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	धाऽऽऽऽऽ	धाऽनधाऽन	।
o				
धागेतिरकिट	धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	धाऽतिरकिट	।
3				
धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	धाऽतिरकिट	धाऽघिडनग	।
x				
धिनधिनागिना	धाऽऽऽऽऽ	धाऽनधाऽन	धागेतिरकिट	।
2				
धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	धाऽतिरकिट	धाऽघिडनग	।
o				
धिनधिनागिना	धाऽतिरकिट	धाऽघिडनग	धिनधिनागिना	।
3				

धा

३:१:३:२:५ रचना : कायदा (पारंपरिक)

ताल : तीनताल लय : विलंबीत

प्राप्त : पं. पुष्करराज श्रीधर जाति : चतुश्र

धिटक्डधा तिटधागे त्रकधिन धिनाघिड । नगधिन धिनाघिड नगतिन तिनाकिना ।
x 2

तिटक्डधा तिटताके त्रकतिन तिनाघिड । नगधिन धिनाघिड नगधिन धिनागिना ।
o 3

- पल्टा - १ :

धिटक्डधा तिटधागे त्रकधिन धिनागिना । धिटक्डधा तिटधागे त्रकधिन धिनागिना ।
x 2

धिटक्डधा तिटधागे त्रकधिन धिनाघिड । नगधिन धिनाघिड नगतिन तिनाकिना ।
o 3

तिटक्डता तिटताके त्रकतिन तिनाकिना । तिटक्डता तिटताके त्रकतिन तिनाकिना ।
x 2

धिटक्डधा तिटधागे त्रकधिन धिनाघिड । नगधिन धिनाघिड नगतिन तिनाकिना ।
o 3

- पल्टा - २ :

धिटक्डधा धिटधिट धागेतिट धाऽघिड । नगधिन धिनाघिड नगतिन तिनाकिना ।
x 2

तिटक्डता तिटतिट ताकेतिट धाऽघिड । नगधिन धिनाघिड नगतिन धिनागिना ।
o 3

- पल्टा - ३ :

धिटक्डधा तिटधागे त्रकधिन धिनाघिड । नगधिन धिनाघिड नगधिन धिनागिना ।
x 2

धाऽधाऽ क्डधातिट तिटक्डधा तिटधागे । तिटघिड नगघिड नगतिन तिनाकिना ।
o 3

तिटक्डता तिटताके त्रकतिन तिनाकिड । नगतिन तिनाकिड नकतिन तिनाकिना ।
x 2

धाऽधाऽ क्डधातिट तिटक्डधा तिटधागे । तिटघिड नगघिड नगधिन धिनागिना ।
o 3

• पल्टा - ४ :

धिटक्डधा तिटधागे तिटक्डधा तिटधाऽ । घिडनग धिनघिड नगधिन धिनागिना ।
x 2

क्डधातिट तिटधागे त्रकधिन घिनाघिड । नगधिन धिनागिड नगतिन तिनाकिना ।
o 3

तिटक्डता तिटताके तिटक्डता तिटताऽ । किडनक तिनकिड नकतिन तिनाकिना ।
x 2

क्डधातिट तिटधागे त्रकधिन घिनाघिड । नगधिन धिनाघिड नगधिन धिनागिना ।
o 3

• पल्टा - ५ :

धिटक्डधा तिटधागे त्रकधिन धिनाघिड । नगधिन धिनाघिड नगधिन धिनागिना ।
x 2

धिनधिना गिनाघिड नगधिन धिनाघिड । नगधिन धिनाघिड नगतिन तिनाकिना ।
o 3

तिटक्डता तिटताके त्रकतिन तिनाकिड । नकतिन तिनाकिड नकतिन तिनाकिना ।
x 2

धिनधिना गिनाघिड नगधिन धिनाघिड । नगधिन धिनाघिड नगधिन धिनागिना ।
o 3

- तिहाई :

धिटक्डधा	तिटधागे	त्रकधिन	धिनाघिड	।	नगधिन	धिनागिना	धाऽधिन	धिनागिना	।
x					2				
धाऽधिन	धिनागिना	धाऽऽऽ	धिटक्डधा	।	तिटधागे	त्रकधिन	धिनाघिड	नगधिन	।
o					3				
धिनागिना	धाऽधिन	धिनागिना	धाऽधिन	।	धिनागिना	धाऽऽऽ	धिटक्डधा	तिटधागे	।
x					2				
त्रकधिन	धिनाघिड	नगधिन	धिनागिना	।	धाऽधिन	धिनागिना	धाऽधिन	धिनागिना	।
o					3				

धा

३:१:३:२:६

रचना : कायदा (पारंपरिक)

ताल : तीनताल   लय : विलंबीत

प्राप्त : पं. पुष्करराज श्रीधर   जाति : तिश्र

धागेना	तकिट	धिनधि	नागिना	।	तकधि	नतक	धिनधि	नागिना	।
x					2				
घेतग	घेतग	धिनधि	नागिना	।	तकधि	नतक	तिनति	नाकिना	।
o					3				
ताकेना	तकिट	तिनति	नाकिना	।	तकति	नतक	तिनति	नाकिना	।
x					2				
घेतग	घेतग	धिनधि	नागिना	।	तकधि	नतक	धिनधि	नागिना	।
o					3				

- पल्टा - १ :

धागेनातकिट x	धिनधिनागिना	तकिटधिनधि	नागिनातकिट	।
धागेनातकिट 2	धिनधिनागिना	तकधिनतक	तिनतिनाकिना	।
ताकेनातकिट o	तिनतिनाकिना	तकिटतिनति	नाकिनातकिट	।
धागेनातकिट 3	धिनधिनागिना	तकधिनतक	धिनधिनागिना	।

- पल्टा - २ :

धागेनातकिट x	धिनधिनागिना	तकिटतकिट	धिनधिनागिना	।
तकिटधिनधि 2	नागिनाधिनधि	नागिनातकिट	धिनधिनागिना	।
धागेनातकिट o	धिनधिनागिना	तकधिनतक	धिनधिनागिना	।
घेतगघेतग 3	धिनधिनागिना	तकधिनतक	तिनतिनाकिना	।
ताकेनातकिट x	तिनतिनाकिना	तकिटतकिट	तिनतिनाकिना	।
तकिटतिनति 2	नाकिनातिनति	नाकिनातकिट	तिनतिनाकिना	।
धागेनातकिट o	धिनधिनागिना	तकधिनतक	धिनधिनागिना	।
घेतगघेतग 3	धिनधिनागिना	तकधिनतक	धिनधिनागिना	।

- पल्टा - ३ :

धागेनातकिट x	धिनधिनागिना	तकिटधिनधि	नागिनातकिट	।
तकिटधिनधि 2	नागिनातकिट	तकिटतकिट	तिनतिनाकिना	।
ताकेनातकिट o	तिनतिनाकिना	तकिटतिनति	नाकिनातकिट	।
तकिटधिनधि 3	नागिनातकिट	तकिटतकिट	धिनधिनागिना	।

- पल्टा - ४ :

तकिटतकिट x	धिनधिनागिना	तकधिनतक	धिनधिनागिना	।
घेतगघेतग 2	धिनधिनागिना	तकधिनतक	तिनतिनाकिना	।
तकिटतकिट o	तिनतिनाकिना	तकतिनतक	तिनतिनाकिना	।
घेतगघेतग 3	धिनधिनागिना	तकधिनतक	धिनधिनागिना	।

- पल्टा - ५ :

घेतगधिनधि x	नागिनाघेतग	धिनधिनागिना	धिनधिनागिना	।
घेतगघेतग 2	धिनधिनागिना	तकधिनतक	तिनतिनाकिना	।
केतकतिनति o	नाकिनाकेतक	तिनतिनाकिना	तिनतिनाकिना	।
घेतगघेतग 3	धिनधिनागिना	तकधिनतक	धिनधिनागिना	।

- तिहाई :

घेतगघेतग	धिनधिनागिना	तकधिनधिना	गिनाधाऽऽऽ	।
x				
ऽऽतकधिन	तकधिनधिना	गिनाधाऽऽऽ	ऽऽतकधिन	।
2				
तकधिनतक	धिनधिनागिना	धाऽऽऽऽऽ	घेतगघेतग	।
o				
धिनधिनागिना	तकधिनधिना	गिनाधाऽऽऽ	ऽऽतकधिन	।
3				
तकधिनधिना	गिनाधाऽऽऽ	ऽऽतकधिन	तकधिनतक	।
x				
धिनधिनागिना	धाऽऽऽऽऽ	घेतगघेतग	धिनधिनागिना	।
2				
तकधिनधिना	गिनाधाऽऽऽ	ऽऽतकधिन	तकधिनधिना	।
o				
गिनाधाऽऽऽ	ऽऽतकधिन	तकधिनतक	धिनधिनागिना	।
3				

३:१:३:२:७
रचना : कायदा (पारंपरिक)
ताल : तीनताल लय : विलंबीत
प्राप्त : तबला के घराने, वादनशैलीयाँ एवम् बंदीशे - लेखकः डॉ. सुदर्शनराम
जाति : चतुश्र पृ. ९५

धाऽकिट	तकधाऽ	घिडनग	तेत्ऽऽ	।	धाऽधाऽ	घिडनग	तिंऽनाऽ	किडनक	।
x					2				
ताऽकिट	तकताऽ	किडनक	तेत्ऽऽ	।	धाऽधाऽ	घिडनग	धिंऽनाऽ	घिडनग	।
o					3				

• पल्टा - १ :

धाऽकिट	तकधाऽ	घिडनग	तेत्ऽऽ	।	धाऽऽऽ	घिडनग	तेत्ऽऽ	घिडनग	।
x					2				
तेत्ऽऽ	धाऽऽऽ	घिडनग	तेत्ऽऽ	।	धाऽधाऽ	घिडनग	तिंऽनाऽ	किडनक	।
o					3				
ताऽकिट	तकताऽ	किडनक	तेत्ऽऽ	।	ताऽऽऽ	किडनक	तेत्ऽऽ	किडनक	।
x					2				
तेत्ऽऽ	धाऽऽ	घिडनग	तेत्ऽऽ	।	धाऽधाऽ	घिडनग	धिंऽनाऽ	घिडनग	।
o					3				

• पल्टा - २ :

धाऽकिट	तकधाऽ	घिडनग	तेत्ऽऽ	।	घिडनग	तेत्ऽऽ	घिडनग	तेत्ऽऽ	।
x					2				
धाऽकिट	तकधाऽ	घिडनग	तेत्ऽऽ	।	धाऽधाऽ	घिडनग	तिंऽनाऽ	किडनक	।
o					3				
ताऽकिट	तकताऽ	किडनक	तेत्ऽऽ	।	किडनक	तेत्ऽऽ	किडनक	तेत्ऽऽ	।
x					2				
धाऽकिट	तकधाऽ	घिडनग	तेत्ऽऽ	।	धाऽधाऽ	घिडनग	धिंऽनाऽ	घिडनग	।
o					3				

• पल्टा - ३ :

धाऽकिट	तकधाऽ	घिडनग	तेत्धाऽ	।	घिडनग	तेत्घिड	नगतेत्	धाऽघिड	।
x					2				
नगतेत्	घिडनग	तेत्घिड	नगतेत्	।	धाऽधाऽ	घिडनग	तिंऽनाऽ	किडनक	।
o					3				
ताऽकिट	तकताऽ	किडनक	तेत्ताऽ	।	किडनक	तेत्किड	नकतेत्	धाऽघिड	।
x					2				
नगतेत्	घिडनग	तेत्घिड	नगतेत्	।	धाऽधाऽ	घिडनग	धिंऽनाऽ	घिडनग	।
o					3				

- पल्टा - ४ :

धाऽकिट	तकधाऽ	घिडनग	तेत्ऽऽ	घिडनग	तेत्घिड	नगघिड	नगतेत्
x				2			
घाऽकिट	तकधाऽ	घिडनग	तेत्ऽऽ	धाऽधाऽ	घिडनग	तिंऽनाऽ	किडनक
o				3			
ताऽकिट	तकताऽ	किडनक	तेत्ऽऽ	किडनक	तेत्किड	नककिड	नकतेत्
x				2			
धाऽकिट	तकधाऽ	घिडनग	तेत्ऽऽ	धाऽधाऽ	घिडनग	धिंऽनाऽ	घिडनग
o				3			

- पल्टा - ५ :

धाऽकिट	तकधाऽ	घिडनग	तेत्ऽऽ	धाऽधाऽ	घिडनग	धिंऽनाऽ	घिडनग
x				2			
घिडनग	तकधाऽ	घिडनग	तेत्ऽऽ	धाऽधाऽ	घिडनग	तिंऽनाऽ	किडनक
o				3			
ताऽकिट	तकताऽ	किडनक	तेत्ऽऽ	ताऽताऽ	किडनक	तिंऽनाऽ	किडनक
x				2			
घिडनग	तकधाऽ	घिडनग	तेत्ऽऽ	धाऽधाऽ	घिडनग	धिंऽनाऽ	घिडनग
o				3			

- तिहाई :

धाऽकिट	तकधाऽ	घिडनग	तेत्ऽऽ	धाऽऽऽ	घिडनग	तेत्ऽऽ	धाऽऽऽ
x				2			
घिडनग	तेत्ऽऽ	धाऽऽऽ	धाऽकिट	तकधाऽ	घिडनग	तेत्ऽऽ	धाऽऽऽ
o				3			
घिडनग	तेत्ऽऽ	धाऽऽऽ	घिडनग	तेत्ऽऽ	धाऽऽऽ	धाऽकिट	तकधाऽ
x				2			
घिडनग	तेत्ऽऽ	धाऽऽऽ	घिडनग	तेत्ऽऽ	धाऽऽऽ	घिडनग	तेत्ऽऽ
o				3			

धा

३:१:३:२:८ रचना : कायदा   मुल रचना : उ. करामतउल्ला खाँ
ताल : तीनताल   लय : विलंबीत
प्राप्त : तबलावादन की विस्तारशील रचनाए - लेखक: श्री जमुनाप्रसाद पटेल
जाति : चतुश्र

धागेनधा x	तिरकिटधागे	नधातिरकिट	धाधातिरकिट	।
धागेनधा 2	तिरकिटतिंना	किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	।
ताकेनता o	तिरकिटताके	नतातिरकिट	ताततिरकिट	।
धागेनधा 3	तिरकिटतिंना	किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	।

- पल्टा - १ :

धागेनधा x	तिरकिटतकताऽ	तिरकिटधागे	नऽधाऽतिरकिट	।
धागेनधा 2	तिरकिटतकतिंना	किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	।
ताकेनता o	तिरकिटतकताऽ	तिरकिटताके	नऽताऽतिरकिट	।
धागेनधा 3	तिरकिटधिंना	किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	।

- पल्टा - २ :

धागेनधा x	तिरकिटधाऽतिर	किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	।
धागेनधा 2	तिरकिटतिंना	किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	।
ताकेनता o	तिरकिटताऽतिर	किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	।
धागेनधा 3	तिरकिटधिंना	किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	।

- पल्टा - ३ :

x	धागेनधा	तिरकिटधागे	नधातिरकिट	धाधातिरकिट	।
2	धागेनधा	तिरकिटधिंना	किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	।
o	धागेतिंना	किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	ताऽतिरकिटतक	।
3	धागेनधा	तिरकिटतिंना	किटतकतिरकिट	तकताऽकिटतक	।
x	ताकेनता	तिरकिटताके	नतातिरकिट	तातातिरकिट	।
2	ताकेनता	तिरकिटतिंना	किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	।
o	धागेतिंना	किडनकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	ताऽतिरकिटतक	।
3	धागेनधा	तिरकिटधिंना	किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	।

- पल्टा - ४ :

x	धागेनधा	तिरकिटधाधा	तिरकिटधाऽतिर	किटधाऽतिरकिट	।
2	धागेनधा	तिरकिटतिंना	किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	।
o	ताकेनता	तिरकिटताता	तिरकिटताऽतिर	किटताऽतिरकिट	।
3	धागेनधा	तिरकिटधिंना	किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	।

- तिहाई :

धागेनधा	तिरकिटधागे	नधातिरकिट	तकताऽतिरकिट	।
x				
धाऽऽऽतिरकिट	धाधातिरकिट	तकताऽतिरकिट	धाऽऽऽतिरकिट	।
2				
धाधातिरकिट	तकताऽतिरकिट	धाऽऽऽऽऽऽऽ	धागेनधा	।
o				
तिरकिटधागे	नधातिरकिट	तकताऽतिरकिट	धाऽऽऽतिरकिट	।
3				
धाधातिरकिट	तकताऽतिरकिट	धाऽऽऽतिरकिट	धाधातिरकिट	।
x				
तकताऽतिरकिट	धाऽऽऽऽऽऽऽ	धागेनधा	तिरकिटधागे	।
2				
नधातिरकिट	तकताऽतिरकिट	धाऽऽऽतिरकिट	धाधातिरकिट	।
o				
तकताऽतिरकिट	धाऽऽऽतिरकिट	धाधातिरकिट	तकताऽतिरकिट	।
3				
धा				

३:१:३:२:९

रचना : कायदा (पारंपरिक)

ताल : तीनताल लय : विलंबीत

प्राप्त : श्री अमोद दंडगे जाति : चतुश्र

धिऽगेन	घगेनधा	ऽनधाऽ	धाऽघेघे	।	नकधिन	गिनधागे	त्रकधिन	धागेत्रक	।
x					2				
धिनागिना	धाऽधाऽ	घेघेनग	धिनधिना	।	गिनधागे	त्रकधिन	धागेत्रक	तिनाकिना	।
o					3				
तिऽकेन	तकेनता	ऽनताऽ	ताऽकेके	।	नकतिन	किनताके	त्रकतिन	ताकेत्रक	।
x					2				
तिनकिना	धाऽधाऽ	घेघेनग	धिनधिना	।	गिनधागे	त्रकधिन	धागेत्रक	धिनागिना	।
o					3				

- पल्टा - १ :

धिऽगेन	घगेनधा	ऽघगेऽ	नऽधाऽ	।	धाऽधाऽ	घेघेनग	धाऽघेघे	नगधिन	।
x					2				
धिनागिना	धाऽधाऽ	घेघेनग	धिनधिना	।	गिनाधागे	त्रकधिन	धागेत्रक	तिनाकिना	।
o					3				
तिऽकेन	तकेनता	ऽतकेऽ	नऽताऽ	।	ताऽताऽ	केकेनक	ताऽकेके	नकतिन	।
x					2				
तिनाकिना	धाऽधाऽ	घेघेनग	धिनधिना	।	गिनाधागे	त्रकधिन	धागेत्रक	धिनागिना	।
o					3				

- पल्टा - २ :

धिऽगेन	घगेनधा	ऽनधाऽ	घेघेनग	।	धिनधिना	गिनाधागे	त्रकधिन	धागेत्रक	।
x					2				
धिनागिना	धाऽधाऽ	घेघेनग	धिनधिना	।	गिनाधागे	त्रकधिन	धागेत्रक	तिनाकिना	।
o					3				
तिऽकेन	तकेनता	ऽनताऽ	केकेनक	।	तिनतिना	किनाताके	त्रकतिन	ताकेत्रक	।
x					2				
तिनाकिना	धाऽधाऽ	घेघेनग	धिनधिना	।	गिनाधागे	त्रकधिन	धागेत्रक	धिनागिना	।
o					3				

- पल्टा - ३ :

धिऽगेन	घगेनधा	ऽनधिधि	गिनघगे	।	नधाऽन	धिधिगिन	धिनधागे	त्रकधिन	।
x					2				
धिनागिना	धाऽधाऽ	घेघेनग	घिनघिना	।	गिनाधागे	त्रकधिन	धागेत्रक	तिनाकिना	।
o					3				
तिऽकेन	तकेनता	ऽनतिति	किनतके	।	नताऽन	तितिकिन	तिनताके	त्रकतिन	।
x					2				
तिनाकिना	धाऽधाऽ	घेघेनग	धिनधिना	।	गिनाधागे	त्रकधिन	धागेत्रक	धिनागिना	।
o					3				

- पल्टा - ४ :

धिऽगेन	घगेनधा	ऽनधाऽ	धिडनग	।	धिनघिड	नगधिन	गिनधिन	धागेत्रक	।
x					2				
धिनागिना	धाऽधाऽ	घेघेनग	धिनघिड	।	नगधिन	धिनागिना	धागेत्रक	तिनाकिना	।
o					3				
तिऽकेन	तकेनता	ऽनताऽ	किडनक	।	तिनकिड	नकतिन	किनतिन	ताकेत्रक	।
x					2				
तिनाकिना	धाऽधाऽ	घेघेनग	धिनघिड	।	नगधिन	धिनागिना	धागेत्रक	धिनागिना	।
o					3				

- पल्टा - ५ :

धिऽगेन	घगेनधा	ऽनधाऽ	धाऽघेघे	।	नगधिन	धिनागिना	तिनतिना	किनाधिन	।
x					2				
धिनागिना	धाऽधाऽ	गेगेनग	धिनधिना	।	गिनाधागे	त्रकधिन	धागेत्रक	तिनाकिना	।
o					3				
तिऽकेन	तकेनता	ऽनताऽ	ताऽकेके	।	नकतिन	तिनाकिना	धिनधिना	गिनातिन	।
x					2				
तिनाकिना	धाऽधाऽ	गेगेनग	धिनधिना	।	गिनाधागे	त्रकधिन	धागेत्रक	धिनागिना	।
o					3				

- तिहाई :

धिऽगेन	घगेनधा	ऽनधाऽ	धाऽगेगे	।	नगधिन	धिनागिना	धाऽधिन	धिनागिना	।
x					2				
धाऽधिन	धिनागिना	धाऽऽऽ	धिऽगेन	।	घगेनधा	ऽनधाऽ	धाऽगेगे	नगधिन	।
o					3				
धिनागिना	धाऽधिन	धिनागिना	धाऽधिन	।	धिनागिना	धाऽऽऽ	धिऽगेन	घगेनधा	।
x					2				
ऽनधाऽ	धाऽगेगे	नगधिन	धिनागिना	।	धाऽधिन	धिनागिना	धाऽधिन	धिनागिना	।
o					3				

धा

३:१:३:२:१० रचना : कायदा (पारंपरिक)

ताल : तीनताल लय : विलंबीत

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर जाति : चतुश्र

गिनधिधि	गिनधाती	गिनधिन	धातीगिन	।	धात्रकधि	तिटगिन	धातीगिन	धिनागिना	।
x					2				
धाऽधाऽ	गिनधाऽ	धाऽगिन	धाऽगिन	।	धात्रकधि	तिटगिन	धातीगिन	तिनाकिना	।
o					3				
किनतिति	किनताती	किनतिन	तातीकिन	।	तात्रकति	तिटकिन	तातीकिन	तिनाकिना	।
x					2				
धाऽधाऽ	गिनधाऽ	धाऽगिन	धाऽगिन	।	धात्रकधि	तिटगिन	धातीगिन	धिनागिना	।
o					3				

- पल्टा - १ :

गिनधिधि	गिनधात्ती	गिनधिधि	गिनधाती	।	गिनधिधि	गिनधाती	गिनधिन	धातीगिन	।
x					2				
गिनधिधि	गिनधाती	गिनधिन	धातीगिन	।	धात्रकधि	तिटगिन	धातीगिन	तिनाकिना	।
o					3				
किनतिति	किनताती	किनतिति	किनताती	।	किनतिति	किनताती	किनतिन	तातीकिन	।
x					2				
गिनधिधि	गिनधाती	गिनधिन	धातीगिन	।	धात्रकधि	तिटगिन	धातीगिन	धिनागिना	।
o					3				

- पल्टा - २ :

गिनधिधि	गिनधाती	गिनधाऽ	धातीगिन	।	धाऽधाती	गिनधाऽ	धातीगिन	धिनागिना	।
x					2				
गिनधिधि	गिनधाती	गिनधिन	धातीगिन	।	धात्रकधि	तिटगिन	धातीगिन	तिनाकिना	।
o					3				
किनतिति	किनताती	किनताऽ	तातीकिन	।	ताऽताती	किनताऽ	तातीकिन	तिनाकिना	।
x					2				
गिनधिधि	गिनधाती	गिनधिन	धातीगिन	।	धात्रकधि	तिटगिन	धातीगिन	धिनागिना	।
o					3				

- पल्टा - ३ :

गिनधिधि	गिनधाती	गिनधाऽ	धाऽगिन	।	धातीगिन	गिनधाऽ	धाऽगिन	धातीगिन	।
x					2				
गिनधिधि	गिनधाती	गिनधिन	धातीगिन	।	धात्रकधि	तिटगिन	धातीगिन	तिनाकिना	।
o					3				
तिनकिकि	तिनताती	किनताऽ	ताऽकिन	।	तातीकिन	तिनताऽ	ताऽकिन	तिनाकिना	।
x					2				
गिनधिधि	गिनधाती	गिनधिन	धातीगिन	।	धात्रकधि	तिटगिन	धातीगिन	धिनागिना	।
o					3				

- पल्टा - ४ :

धाऽगिन	धाऽधाऽ	गिनधाऽ	गिनधाऽ	।	धाऽगिन	धात्रकधि	तिटगिन	धिनागिना	।
x					2				
गिनधिधि	गिनधाती	गिनधिन	धातीगिन	।	धात्रकधि	तिटगिन	धातीगिन	तिनाकिना	।
o					3				
ताऽकिन	ताऽताऽ	किनताऽ	किनताऽ	।	ताऽकिन	तात्रकति	तिटकिन	तिनाकिना	।
x					2				
गिनधिधि	धिनधाती	गिनधिन	धातीगिन	।	धात्रकधि	तिटगिन	धातीगिन	धिनागिना	।
o					3				

- पल्टा - ५ :

गिनधिधि	गिनधाती	गिनधाती	गिनगिन	।	धातीगिन	धात्रकधि	तिटगिन	धिनागिना	।
x					2				
धाऽधाऽ	गिनधाऽ	धाऽगिन	धाऽगिन	।	धात्रकधि	तिटगिन	धातीगिन	तिनाकिना	।
o					3				
किनतिति	किनताती	किनताती	किनकिन	।	तातीकिन	तात्रकति	तिटकिन	तिनाकिना	।
x					2				
धाऽधाऽ	गिनधाऽ	धाऽगिन	धाऽगिन	।	धात्रकधि	तिटगिन	धातीगिन	धिनागिना	।
o					3				

- तिहाई :

गिनधिधि	गिनधाती	गिनधिन	धात्रकधि	।	तिटगिन	धाऽधात्र	कधितिट	गिनधाऽ	।
x					2				
धात्रकधि	तिटगिन	धाऽऽऽ	गिनधिधि	।	गिनधाती	गिनधिन	धात्रकधि	तिटगिन	।
o					3				
धाऽधात्र	कधितिट	गिनधाऽ	धात्रकधि	।	तिटगिन	धाऽऽऽ	गिनधिधि	गिनधाती	।
x					2				
गिनधिन	धात्रकधि	तिटगिन	धाऽधात्र	।	कधितिट	गिनधाऽ	धात्रकधि	तिटगिन	।
o					3				

धा
x

३:१:३:२:११ तुलना :

दिल्ली घराना में कायदे का बहुत बड़ा महत्व है क्योंकि यह घराना सर्वप्रथम माना जाता है । अनेक विद्वान कलाकारों के साक्षात्कार लेने के बाद शोधार्थी मानता है कि, कोई भी घराना सिखने से पहेले या तबलावाद्य सिखने के लिए सर्वप्रथम दिल्ली घरानों के कायदो का अभ्यास वादक को अत्यंत आवश्यक है । दिल्ली घराने के कायदो की तालीम लिए बिना अन्य घरानों का अभ्यास करना असंभव है । दिल्ली घराने ने कायदे के माध्यम से तबले को एक स्वतंत्ररूप दिया और वाक्यपूर्ण करने की अनुभूति दी । जैसे कोई बोल उदाहरण इस प्रकार है :

'धाधा धा तिट तिट घा घा घातिट घागे तिंनाकिना'

अब यह रचना कौनसे ताल में है यह विषय अलग है परंतु इस वाक्य में प्रारंभ स्थान सें अंतिम स्थान तक होने के बाद, वाक्यपूर्ण होने की अनुभूति नहीं होती है । परंतु धाधा तिट घाघा तिंना, ताता तिट धाधा धिंना । इस वाक्य में वाक्य पूर्ण होने की अनुभूति होती है जो तबला वाद्य का महत्व का योगदान है जिसका श्रेय दिल्ली घराने को जाता है । भाषा की दृष्टि से स्वर और व्यंजन का अनोखा मेल दिल्ली घराने में है ।

कायदे की विस्तार करने की क्षमता अमर्यादित है । मात्र दो अक्षर का 'तिट' शब्द जिसके असंख्य पल्टे बना सकते है जो अन्नंत है । यह सुक्ष्म विचार प्रस्तुत करने की क्षमता दिल्ली घराने की है जैसे कोई सुभाषीतकार एक ही विषय पर या सुविचार पर अनेक दीनों तक अपना विचार प्रस्तुत करता है वही क्षमता दिल्ली घरानों के कायदे की है । कायदों का विस्तार करने के लिए आवश्यक शारीरिक श्रम तथा बौद्धिक तौर पर युक्ति वादक में होना अनिवार्य है और यह करने का हेतु है कि वादन में दिखनेवाला सुंदर चित्र, सौन्दर्यता और मन से सधनेवाली कला ये तीनों प्रस्तुत करने की ताकत दिल्ली घराने के कायदों में है इसलिए दिल्ली घराने का मूल घराना माना गया है ।

अतः दिल्ली घराने ने वादन में अपना स्वंतत्र विचार दिया, शिस्त दी, स्थुल और अवरोह दिखने लगा । अतः दिल्ली घराने का तबले में योगदान पिता समान है ।

कोई भी वादक को तबला सिखने के लिए दिल्ली घराने के कायदो का अभ्यास करना आवश्यक है । जो अलग–अलग वर्णो पर आधारित है । जैसे 'तिट, तिरकिट, तित्, त्रक' आदि । अर्थात् दिल्ली घराने के कायदे अलग–अलग वर्णो को साफसूत्रा बजाने के लिए ही प्रयोग किये जाते है । अतः फरुखाबाद घराने में वर्ण आधारित कायदे कम दिखाई देते है । शब्दसमूह का चयन करके कायदे की रचना होती है । परंतु इस कायदों में गत अंग का अधिक प्रभाव होने के कारण 'गत–कायदा' प्रस्तुत करते है । दिल्ली घराने के कायदे अधिकतर चतुश्र जाति में ही सुनने को मिलते है । तिश्र जाति में भी रचनाएँ होती है परंतु वह कम सुनने में आती है ।

अतः फरुखाबाद घराने के कायदों में तिश्र, चतुश्र, खंड, संकिर्ण जैसे सभी जातियों का प्रयोग सुंदर तरह से प्रस्तुत किया जाता है । दिल्ली घराने के कायदों में रदिफ–काफिया का सही ढंग से प्रयोग किया जाता है । पं. सुरेश तळवलकर जी के साथ साक्षात्कार करते समय शोधार्थी को ज्ञात हुआ की वाक्य पूर्ण करने की क्षमता दिल्ली घराने की देन है । अर्थात् कायदे को खाली या भरी बजाने के बाद वापस सम पर आने की अनुभूति अद्भूत होती है । परंतु फरुखाबाद घराने के कायदों में रदिफ और काफिया में व्यंजन अक्षरों से कायदे की पूर्णता होती है । कायदे के अंत में 'नानागिन, तिननग,' जैसे बोलों का प्रयोग किया जाता है । दिल्ली घराने के कायदों में अंत में 'तिंना, तिनाकिना, तिनतिनाकिना,' आदि बोलों का प्रयोग किया जाता है ।

दिल्ली घराने के कायदे अधिकतर 'धा' प्रधान होते है । अर्थात् कोई भी कायदे का प्रारंभ 'धा' शब्द से होता है । परंतु दुसरे भी अनेक कायदे है जो 'गि','धाति' या 'धिं' वर्ण से प्रारंभ होते है । परंतु वह बहुत सिमित है । अतः फरुखाबाद घराने के कायदों में ऐसी कोई शब्द प्रधानता देखने को नहीं मिलती । कोई भी वर्ण से कायदे का प्रारंभ होता है, जिस में बाये के वर्णो से भी कायदा प्रारंभ होता है । दिल्ली घरानों के कायदे में एक मात्रा में महत्तम चार अक्षरों का समावेश होता है । अतः फरुखाबाद घराने के कायदे में

चार से भी अधिक अक्षरों का प्रयोग किया जाता है । दिल्ले घराने के कायदों में चाटी या किनार पर अधिक काम प्रस्तुत होता है । अतः फरुखाबाद घराने में बायें को अधिक महत्व देते हुए, बाये की ध्वनि को कम–ज्यादा करके कलात्मक रूप से प्रस्तुतीकरण किया जाता है । फरुखाबाद घराने में कही कायदे में रेले के बोलों का समावेश किया जाता है । जैसे 'धिरधिर, किटतकतिरकिट, धिनगिन' आदि ।

अतः दिल्ली घराने में ऐसे कोई रेले के वर्ण कायदे में समावेश नही किये जाते है । दिल्ली घराने के कायदों की कही विद्वान 'रौ' बजाते है । जिस में 'रौ' सुनते समय कायदे के बोल ही स्पष्ट रूप से सुनाई देते है । जो एक कठिन और आव्हानात्मक कार्य है । अतः फरुखाबाद घरानों के कायदों की 'रौ' बजाना असंभव है । परंतु इस घराने में चलन या चाला बजाकर उसकी 'रौ' बजाई जाती है । दोनो घरानों में कायदों में बोलों को महत्व देते है तथा कही कायदों अवग्रह या कुछ मात्राओं के बिच विश्राम देकर कायदे को सौन्दर्यता प्राप्त होती है ।

३:१:४ रेला :

''पूरक, चक्र, गतीशील और शीघ्र गतिक्षम, शब्दो की और खाली–भरी के तत्व से बनी हुई तथा ताल से नाता रखने वाली विस्तारक्षम रचना को रेला कहते है । रेला में सहायकारक अन्त्यपद नहीं होता । अतः 'कायदा' पूर्ण वाक्यविचार है तो 'रेला' एक सूत्ररूप विचार है ।'' [१२]

''नालंदा विशाल शब्दसागर' में रेला का अर्थ तबले पर महिन और सुंदर बोलों को बजाने की रिती, ऐसा दिया गया है । रेला मुख्यतः पखवाज की वादन सामग्री है और तबला वादन में उसीसे ग्रहण किया गया है ।'' [१३]

''कुछ बोलों का ऐसा समुह जिसे चौगुन, अठगुन या किसी दृत लय में कुछ देर तक धारा प्रवाह गती से बजाया जा सके उसे रेला कहते है ।'' [१४]

''रेला और कायदा प्रायः एक ही प्रकार के होते है । इन दोनों में विशेष अंतर यह है कि कायदे दुगुन और चौगुन में बजाये जाते है जब कि रेला चौगुन या अठगुन में ही बजाया जाता है ।

रेला में एक ही प्रकार के बोलको बार–बार ठहरते हुए बजाने से रेले की सुंदरता बढती है ।'' [१५]

रेला यह विस्तारक्षम रचनाओ में से एक प्रमुथ बंदिश है । रेला के बोल अधिकतर मिश्र वर्ण होते है । इस के पल्टे भी होते है । रेला में भी कायदे की तरह समान खाली–भरी दिखलाती हुई होती है । रेला यह दृत लय की बंदिश है । रेला के मुख्य दो प्रकार है ।

३ः१ः४ः१ स्वतंत्र रेला :

इस की रचना स्वतंत्र रूप से की जाती है । अर्थात रेले के निश्चित किए गये बोलों को उलट–पूलट करके कोई निश्चित सिद्धांत को आधार न रखते हुए बजाये जाते है उसे स्वतंत्र रेला कहते है । इस श्रेणी के रेले में बोल एवं बोल समुह को प्राधान्य दिया जाता है और उसका बोलोंका क्रम निश्चित होना जरुरी नहीं है । पखवाज के अधिकतर रेले इसी श्रेणी में आते है ।

३ः१ः४ः२ कायदे से निर्मित रेला :

कायदों के पल्टे में से कोई एक ऐसा पल्टा चयन किया जाता है जो दृत लय में सरलता से कायम हो सके इस तरह उसके वादन में धारा–प्रवाह निरंतर बना रहे उसे कायदे से निर्मित रेला कहते है । जिसे कायदे की तरह ही खाली–भरी बजाई जाती है ।

रेला का प्रयोग स्वतंत्र वादन के अतिरिक्त गायन, वादन और नृत्य की संगत में भी प्रयोग किया जाता है । रेला बजाने के लिए वादक को प्रत्येक शब्द, बोल का खुब रियाज होना आवश्यक होता है । रेले के भी पल्टे किये जाते है । ''पं. अरविंद मुळगाँवकरजी के अनुसार रेला में जो बोल समुह का पहेला अक्षर स्वर और अंतिम अक्षर व्यंजन हो और दृत लय में बजाने के कारण जो रौ निर्माण करनेवाला हो तथा उसका विस्तार हो ।'' [१६]

कोई भी बंदिश में उसका मूल निकास को दृत लय में कलात्मकता से बजाना नामूमकीन है । इसलिए रेले के अक्षरों की लय जब बढती है तब अक्षरों के निकास में बदल करना अनिवार्य होता है । अतः रेले का सही निकास समर्थ गुरु के तालिम से उनके अनुसार

रियाज करने के बाद रेला प्रभाव कारक प्रस्तुत होता है । रेला बजाते समय बाये के घुमारे की गुंज सातत्यता से झुले की अनुभूति श्रोताओ को प्राप्त हो ऐसा उद्देश घराने दार कलाकार अपने वादन में रखते है । जिस से रेला में सौन्दर्य निर्माण होता है । रेले में गतिरोधक शब्दों का प्रयोग न होने के कारण जब शीध्र गति रेला बजाते है तब उसका छंद बनता है । कही समर्थ वादक रेले के शब्द में बदल कर के उसकी जाति में भी बदलाव आता है । अतः जैसे लय बढती है वैसे ही श्रोता के मन में आश्चर्यभाव निर्माण होता है ।

३ः१ः५ 'रव–रविश–रौ' का रेला में महत्व :

''रव–रविश–रौ इन तिनों शब्दों का प्रयोग एक ही क्रिया दर्शाने के लिए किया जाता है । रेला एक गुन से चौगुन तक बजाया जाता है । किन्तु 'रौ' में इस प्रकार से नहीं बजाते है । रौ एक चलन के रूप में होता है । इस चलन के महत्वपूर्ण आधात अक्षरों को वैसा ही रखकर बिच में 'तिरकिट, धिनगिन, दिनदिन' आदि अनुरूप शब्दों को जोडकर प्रस्तुती की जाती है । तब रेला का मुल स्वरूप का आभास होता है । रौ उसी लय में बजती है, जिस लय में छंद बजता है । रौ सुनते समय छंद को नादरूप देनेवाला महत्वपूर्ण स्वर–व्यंजन नादाक्षर भी ऐसे सुनने में आते है, की एक ही समय तथा एक ही साथ हम रौ भी सुनते है और छंद भी सुनते है ।'' [१७]

रौ में व्यंजन अक्षर के साथ अधिक मात्र में स्वर अक्षरों की गुंज का प्रयोग किया जाता है । साधारणतः रेले की तुलना में रौ अधिक स्वरमय होती है । एक महत्वपूर्ण बात यह है कि अगर रौ को बजाना है तो रेले का अध्ययन करना जरुरी है । बिना गुरु के मार्गदर्शन रौ बजाना असंभव है ।

३:१:५:१

रचना : रेला (पारंपरीक - दिल्ली घराना)

ताल : त्रीताल लय : मध्य विलंबीत

प्राप्त : पं. सुधीर माइण्डकर जाति : चतुश्र

मुख्य बोल : धातिरकिटतक

धाऽधाऽतिर x	किटतकधाऽ	धातिरकिटतक	धातिरकिटतक	।
धातिरकिटतक 2	तिरकिटधाऽतिर	किटतकधाऽतिर	किटतकतिरकिट	।
ताऽताऽतिर o	किटतकता	तातिरकिटतक	तातिरकिटतक	।
धातिरकिटतक 3	तिरकिटधाऽतिर	किटतकधाऽतिर	किटतकतिरकिट	।

पल्टा - १

धाऽधाऽतिर	किटतकधाऽ	ऽऽधातिर	किटतकधाऽ	।
x				
धातिरकिटतक	तिरकिटधाऽतिर	किटतकधाऽतिर	किटतकतिरकिट	।
2				
ताऽताऽतिर	किटतकताऽ	ऽऽतातिर	किटतकताऽ	।
o				
धातिरकिटतक	तिरकिटधाऽतिर	किटतकधाऽतिर	किटतकतिरकिट	।
3				

पल्टा - २

धाऽधाऽ	धातिरकिटतक	धाऽधाऽ	धातिरकिटतक	।
x				
धाऽधाऽतिर	किटतकधाऽ	धातिरकिटतक	धातिरकिटतक	।
2				
ताऽताऽ	तातिरकिटतक	ताऽताऽ	तातिरकिटतक	।
o				
धाऽधाऽतिर	किटतकधाऽ	धातिरकिटतक	धातिरकिटतक	।
3				

पल्टा - ३

धाऽधातिर	किटतकधाऽ	धाऽधातिर	किटतकधाऽ	।
x				
धातिरकिटतक	धाऽऽधातिर	किटतकधाऽ	तातिरकिटतक	।
2				
ताऽतातिर	किटतकताऽ	ताऽतातिर	किटतकताऽ	।
o				
धातिरकिटतक	धाऽऽधातिर	किटतकधाऽ	धातिरकिटतक	।
3				

पल्टा - ४

धाऽधातीर	किटतकधाऽ	धातिरकिटतक	धाऽधातीर	।
x				
किटतकधाऽ	धातिरकिटतक	धातिरकिटतक	तातिरकिटतक	।
2				
ताऽतातीर	किटतकताऽ	तातिरकिटतक	धाऽधातीर	।
o				
किटतकधाऽ	धातिरकिटतक	धातिरकिटतक	धातिरकिटतक	।
3				

पल्टा - ५

धाऽतिरकिटतक	तिरकिटताऽतिर	किटतकतिरकिट	धातिरकिटतक	।
x				
तातिरकिटतक	धातिरकिटतक	तिरकिटताऽतिर	किटतकतिरकिट	।
2				
ताऽतिरकिटतक	तिरकिटताऽतिर	किटतकतिरकिट	धातिरकिटतक	।
o				
धातिरकिटतक	धातिरकिटतक	तिरकिटधाऽतिर	किटतकतिरकिट	।
3				

तिहाई :

धाऽऽधाऽतीर	किटतकधाऽतिर	किटतकधाऽतिर	किटतकतिरकिट	।
x				
धाऽऽऽ	ऽऽऽऽ	धाऽऽधाऽतीर	किटतकधाऽतिर	।
2				
किटतकधाऽतिर	किटतकतिरकिट	धाऽऽऽ	ऽऽऽऽ	।
o				
धाऽऽधाऽतिर	किटतकधाऽतिर	किटतकधाऽतिर	किटतकतिरकिट	।
3				

३:१:५:२:१ रचना : रेला (पारंपरीक)

ताल : तीनताल लय : मध्य

प्राप्त : डॉ. चिरायु भोळे जाति : तिश्र

धिनघिडनग	तक्घिड़ाऽन	धिनगिनधागे	त्रकधिनागिना	।
x				
धिनगिनधिन	गिनधिनगिन	धिनगिनधागे	त्रकतिनाकिना	।
2				
तिनकिडनग	तक्किड़ाऽन	तिनकिनताके	त्रकतिनाकिना	।
o				
धिनगिनधिन	गिनधिनगिन	धिनगिनधागे	त्रकधिनागिना	।
3				

रेला :

धिनघिडनग	तक्घिड़ाऽन	धिनगिनतक	तकधिनगिन	।
x				
धिनगिनधिन	गिनतकतक	धिनगिनतक	तकतिनकिन	।
2				
तिनकिडनक	तक्किड़ाऽन	तिनकिनतक	तकतिनकिन	।
o				
धिनगिनधिन	गिनतकतक	धिनगिनतक	तकधिनगिन	।
3				

३:१:५:२:२ रचना : रेला (पारंपरीक)

ताल : तीनताल लय : मध्य

प्राप्त : पं. पुष्करराज श्रीधर जाति : चतुश्र :

धाऽऽऽ	ऽऽधिर	धिरकिट	धागेत्रक	।	धिनघिड	नगधिर	धिरकिट	धागेत्रक	।
x					2				
धिनघिड	नगधिर	धिरकिट	धागेत्रक	।	धिनगिन	धागेतिट	धागेत्रक	तिनाकिना	।
o					3				
ताऽऽऽ	ऽऽतिर	तिरकिट	ताकेत्रक	।	तिनकिड	नकतिर	तिरकिट	ताकेत्रक	।
x					2				
धिनघिड	नगधिर	धिरकिट	धागेत्रक	।	धिनगिन	धागेतिट	धागेत्रक	धिनागिना	।
o					3				

धा

धिरधिर बंदीश

धाऽऽऽ	ऽऽधिर	धिरकिट	धागेत्रक	।	धिनघिड	नगधिर	धिरकिट	धाऽऽऽ	।
x					2				
ऽऽऽऽ	ऽऽधिर	धिरकिट	धागेत्रक	।	धिनघिड	नगधिन	धागेत्रक	तिनाकिना	।
o					3				
ताऽऽऽ	ऽऽतिर	तिरकिट	ताकेत्रक	।	तिनकिड	नकतिर	तिरकिट	ताऽऽऽ	।
x					2				
ऽऽऽऽ	ऽऽधिर	धिरकिट	धागेत्रक	।	धिनघिड	नगधिन	धागेत्रक	धिनागिना	।
o					3				

धा

३:१:५:२:३

रचना : चलन रेला (रौ)

ताल : तीनताल मुल रचनाकार : मिया सलारी खाँ साहब

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर जाति : चतुश्र लय : मध्य

चलन :

धाऽ	धाऽ	धिंना	तीधा	।	ऽधिं	नाती	धागे	तिन	।
x					2				
ताऽ	ताऽ	तिंना	तीधा	।	ऽधिं	नाती	धागे	धिन	।
o					3				

रेला

धातीगिन	धातीगिन	धिनधाती	गिनधाती	।	गिनधिन	धातीगिन	धातीगिन	तिनकिन	।
x					2				
तातीकिन	तातीकिन	तिनताती	किनताती	।	गिनधिन	धातीगिन	धातीगिन	धिनगिन	।
o					3				

रव :

धाऽतिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	धिनतीत्धाऽतिर	किटतकधाऽतिर	।
x				
किटतकधिनतीत्	धाऽतिरकिटतक	धातिरकिटतक	तिंऽतिरकिटतक	।
2				
ताऽतिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक	तिनतीत्ताऽतिर	किटतकधाऽतिर	।
o				
किटतकधिनतीत्	धाऽतिरकिटतक	धातिरकिटतक	धिंऽतिरकिटतक	।
3				

३:१:५:२:४ रचना : गतांग रेला
ताल : तीनताल मुल रचनाकार : उ. निसार अली खाँ साहब
प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर (ट्रेझर ऑफ फरुखाबाद घराना)
जाति : चतुश्र लय : मध्य

धाऽऽऽ	ऽऽधिन	गिनधिन	धागेत्रक	।	धिनघिड	नगधिन	गिनधिन	धागेत्रक	।
x					2				
धिनगिन	धिनगिन	धिनधागे	त्रकधिन	।	गिनधागे	त्रकधिन	धागेत्रक	तिनकिन	।
o					3				
ताऽऽऽ	ऽऽतिन	किनतिन	ताकेत्रक	।	तिनताके	त्रकतिन	किनतिन	ताकेत्रक	।
x					2				
धिनगिन	धिनगिन	धिनधागे	त्रकधिन	।	गिनधागे	त्रकधिन	धागेत्रक	धिनगिन	।
o					3				

रेला :

धाऽऽऽ	ऽऽधिंऽतिर	किटतकधिनतीत्	धाऽतिरकिटतक	।
x				
धिंऽतिरकिटतक	तकऽऽधिंऽतिर	किटतकधिनतीत्	धाऽतिरकिटतक	।
2				
धिंऽतिरकिटतक	धिंऽतिरकिटतक	धिनतीत्धाऽतिर	किटतकधाऽतिर	।
o				
किटतकधिनतीत्	धाऽतिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	तिंऽतिरकिटतक	।
3				

ताऽऽऽ	ऽऽतिंऽतिर	किटतकधिनतीत्	धाऽतिरकिटतक	।
धिंऽतिरकिटतक	तकऽऽधिंऽतिर	किटतकधिनतीत्	धाऽतिरकिटतक	।
धिंऽतिरकिटतक	धिंऽतिरकिटतक	धिनतीत्धाऽतिर	किटतकधाऽतिर	।
किटतकधिनतीत्	धाऽतिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	धिंऽतिरकिटतक	।

३:१:५:२:५ रचना : गतांग रेला

ताल : तीनताल मुल रचनाकार : उ. हुसैन अली खाँ

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर (ट्रेझर ऑफ फरुखाबाद घराना)

जाति : चतुश्र लय : मध्य

धाऽऽऽ x	ऽऽधिर	धिरकिट	धागेत्रक	।	धिनघिड 2	नगधिर	धिरकिट	धागेत्रक	।
धिनघिड o	धिरधिर	किटधागे	त्रकधिन	।	घिडधिर 3	धिरकिट	धागेत्रक	तिनाकिना	।
ताऽऽऽ x	ऽऽतिर	तिरकिट	ताकेत्रक	।	तिनकिड 2	नकतिर	तिरकिट	ताकेत्रक	।
धिनघिड o	धिरधिर	किटधागे	त्रकधिन	।	घिडधिर 3	धिरकिट	धागेत्रक	धिनागिना	।

रेला :

धाऽऽऽ x	ऽऽऽऽधिरधिर	किटतकधिनतीत्	धाऽतिरकिटतक	।
धिरधिरकिटतक 2	तक्ऽऽधिरधिर	किटतकधिनतीत्	धाऽतिरकिटतक	।
धिरधिरकिटतक o	धिरधिरकिटतक	धिनतीत्धाऽतिर	किटतकधाऽतिर	।
किटतकधिनतीत् 3	धाऽतिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	तिंऽतिरकिटतक	।

ताऽऽऽ	ऽऽऽऽतिरतिर	किटतकतिनतीत्	ताऽतिरकिटतक	।
x				
तिरतिरकिटतक	तक्ऽऽतिरतिर	किटतकतिनतीत्	ताऽतिरकिटतक	।
2				
धिरधिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	धिनतीत्धाऽतिर	किटतकधाऽतिर	।
o				
किटतकधिनतीत्	धाऽतिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	तिंऽतिरकिटतक	।
3				

३:१:५:३ तुलना :

दिल्ली घराना में रेला एकलवादन में महत्वपूर्ण बंदिश है । रेला बजाते समय वादक चांटी और किनार का सौन्दर्यात्मक प्रयोग करते है । जिसे दृत गति में चंचल बोलों के स्वरानुभूति का आनंद प्राप्त होता है । इस घराने में रेला अधिकतर चतुश्र जाति में ही बजाया जाता है और इस घराने में स्वतंत्र रेला का ही प्रयोग किया जाता है । कही वादक स्वतंत्र वादन के अंत में रेला का प्रयोग करते है । चांटी और किनार का सुंदर प्रयोग दृत लय में रेला इस तरह सुनाई देता है जैसे आसमान में पटाकों की आतशबाजी हो रही हो । रेले के पल्टे भी अलग अलग प्रकार से प्रस्तुत किये जाते है । अतः रेले का तबले पर मूल स्वरूप दिल्ली घराने की महत्वपूर्ण देन है ।

फरुखाबाद घराने में रेला को एक विशेष ढंग से प्रस्तुत किया जाता है । अतः रेला विलंबित लय में ही बजाते है । इस घराने में रेला और रौ स्वतंत्र वादन की प्रमुख बंदिश है । जिसे अन्य घरानों के वादक भी अपनाते है । उ. अमीर हुसेन खाँ साहब रेले में 'धिंऽतिरकिटतक' बोल का प्रयोग इतनी खुबसुरती से करते थे कि बाये की गुंज सातत्य से सुनाई देती थी तथा दाये की स्याही के बोलों की गुंज का भी सुंदर मिलन सुनने में कर्णप्रिय लगता था । उ. थिरकवा खाँ साहब अपने वादन में प्रसिद्ध फरुखाबादी चलन बजाकर रेले को प्रस्तुत करते थे जो आज भी लोकप्रिय है, जो खास उनके रियाज तथा साधना के जरीए रसिक श्रोताओं से दाद लेते थे । कुछ रेले के स्वरूप को उत्सादोंने कायदे के नाम से संबोधन किया है, जैसे –

धाऽतिरकिटतक तकधाऽतिरकिट । धाऽतिरघिडनग तूंऽनाऽकिटतक ।

उसरोक्त रेला के बोलों को कायदा कहा गया है । अतः रेले की ही रौ की जाती है परंतु रेले के मूल स्वरूप को कायम रखते हुए रौ बजाई जाती है । जो विलंबित लय में प्रस्तुत की जाती है । रौ के भी पल्टे किय जाते है । इसी रौ को बजाकर थिरकवा खाँ साहब ने उसे मशहूर किया । इस रौ को कायम रखकर उस में अलग–अलग प्रकार की गते, गतटुकडा, चक्रदार,

नवहक्का जैसी अलग–अलग बंदिशों को प्रस्तुत करते थे । अर्थात कोई भी अविस्तारक्षम रचना को बजाकर वह पूर्ण होने के बाद ताल का ठेका न बजाकर पुनः रौ को कायम करते है । रौ का छंद अध्धा ताल जेसा सुनाई देता है । इस रौ को वर्तमान के इस घराने के वादक भी इसी तरह वादन प्रस्तुत करते है ।

३ः२ अविस्तारक्षम रचना :

बंदिशकार या रचनाकार जिस बंदिश की संकलना का साकार करता हैं । वह बंदिश एकपूर्ण बंदिश मानी जाती हैं । तबलावादर उस प्रस्तुत करते समय पूर्ण रूप से ा प्रस्तुत करता हैं । याने एकबार बंदिश बनाई जाती हैं तो वह कायमी स्वरूप रेहती हैं । जैसे कोई चित्रकार या शिल्पकार एक बार चित्र, पूर्ण होने के बाद उस में कोई भी फेरफार नही (मूर्ति) करता । वह कायमी स्वरूप बन जाती हैं । वैसे ही तबले में अविस्तारक्षम रचनाए बनती है तो उस में कोई बदलाव नहीं किया जाता हैं । इसलिए इसे 'पूर्ण संक्लपित' रचना केहते है ।

अविस्तारक्षम रचनाओं में मुखड़ा, टुकड़ा, गत, चक्रदार, त्रियल्ली, चौपल्ली, नवहक्का, उठान, लड्डी अनेक प्रकार की तिहाईयाँ यादि रचनाओं का समावेष्ट होता है । शोधार्थी दिल्ली और फरुखाबाद घरानों में बजनेवाली अविस्तारक्षम रचनाओं पर अपनी पुष्टि करेगा ।

३ः२ः१ टुकड़ा :

पं. सुधीर माईणकर जी के मतानुसार ''गत, परण और चक्रदार रचनाऐ को छुटकर अन्य पूर्णसंकलयित रचनाओं का सर्वसाधारणतः टुकड़ा के नाम सें संबोधित किया जाता है ।''[१८]

''पं. अरविंद मुलगावकर जी के मतानुसर 'ताल का आवर्तन पूर्ण करके सम पर आने के लिऐ की गई बोल समुह की लयबद्ध रचना याने टुकड़ा जो तिहाई युक्त अथवा तिहाई

रहित ऐसे दो प्रकार होते है ।'[१९]

श्री भगवत शरण शर्मा जी के मतानुसार 'सम पर आने के लिए एसे बोलों के समुह को जिसे गत या परण न कहते हुए, ऐसी तिहाईदार अथवा बिना तिहाई का टुकड़ा कहते है, जो अधिक से अधिक तिन अवर्तन का होता है ।[२०]

आचार्य गीरीशचद्र श्रिवास्तव जी के मतानुसार 'साधारण बोल चाल की भाषा में किसी वस्तु के एकभाग या हिस्से को टुकड़ा कहेते है । जो एक आवर्तन से अधिक और चार आवर्तन से कम अधिक्तर तिहाई युक्त होता है ।'' [२१]

टुकड़ा शब्द संगीत में और अन्य व्यवहारों में दिर्धकाल सें प्रचार में हैं । लेकिन तबले के संदर्भ में किसी भी अपूर्ण शब्दबंध को टुकड़ा केहने का रीवाज नहीं हैं । किसी एक दिर्घ आकार की बंदिश में सें चुने हुए आकर्षक शब्दबंध को, तबलावादक के लिए चुना जाता है उसे टुकड़ा कहते है । जिस में तबलावादक उस बोलों को अपने कल्पय विचारों से परिवर्तन कर के जिस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि वह टुकड़ा केवल टुकड़ा न रहकर एक खुबसुरत छोटी बंदिश बनती है । तबलावादक साथ–संगत में टुंकड़ों का प्रयोग प्रभावी ढंग सें करते है । कतघेघे, नगघेत, घीटघीट, कड्धातीट, घेतिटकिटक जैसे अनेक बोलो का प्रयोग करके टुकड़े की रचना की जाती हैं । अलग–अलग नाद बंधो के टुकड़ो से उसमें कलात्मकता जोडकर एक नई बंदिश बनाई जाती है जिसे टुकड़ा कहते है । कहीं बार चुने हुए बोल–समानधर्मी नहीं होते है । तो भी इसे जोड़ने से कोई विसंगत्ता नहीं होती है बलकी एक नई सौंदर्यात्मक टुकड़े की रचना होती है । जैसे अपने घर में पुराने कपड़ो को काटकर उसके टुकड़े किये जाते है और अलग–अलग टुकड़ों को जोडकर उसकी गुदड़ी बनाई जाती है, ठिक उसी प्रकार तबले का टुकड़ा विविध नाद बंधों के टुकड़ो को जोड़कर बनाया जाता है जो कर्णप्रिय होता है ।

३:२:१:१ रचना : गत टुकडा

ताल : तीनताल — मुल रचनाकार : हाजी विलायत अली खाँ

प्राप्त : डॉ. केदार मुकादम — जाति : चतुश्र — लय : धृत

तकधिन	नतकघे	तगधिन	नानाकता	।
x				
तकधिन	तकधिन	धागेत्रक	तिनाकता	।
2				
तकिटत	किटतक	धिननत	कघेतग	।
o				
धिनघिड	नगधिन	घिडनग	धिनगिन	।
3				
धागेत्रक	धिनघिड	नगधिन	नानाकता	।
x				
धिनघिडनग	तिरकिटतक	धाऽतिरघिड	नगधिनतक	।
2				
धाऽऽदिं	ऽघेऽनत्	धाऽऽऽ	ऽऽकत्त्	।
o				
धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	तिंऽनाऽकिटतक	ताऽतिरकिटतक	।
3				
धाऽऽदिं	ऽघेऽनत्	धाऽकत्	धिरधिरकिटतक	।
x				
धाऽतिरकिटतक	तिंऽनाऽकिटतक	ताऽतिरकिटतक	धाऽऽदिं	।
2				
ऽघेऽनत्	धाऽकत्	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	।
o				
तिंऽनाऽकिटतक	ताऽतिरकिटतक	धाऽऽदिं	ऽघेऽनत्	।
3				

धा

३:२:१:२ रचना : गत टुकडा

ताल : तीनताल मुल रचनाकार : हाजी विलायत अली खाँ

प्राप्त : प्रोफे. डॉ. अजय अष्टपुत्रे जाति : तिश्र और चतुश्र लय : धृत

धाऽधाऽ x	धाऽत्रक	दिंऽदिंऽ	धागेतिट	।
धगत्त 2	किटधिन	नगधागे	तिटकता	।
ऽनधाऽ o	धिरधिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	तकिऽटधाऽऽ	।
नगघेत् 3	ऽऽऽऽताऽऽऽ	धाऽघि	डनग	।
धाऽधा x	ऽधाऽ	धाऽदिंऽताऽ	तकिटधितिट	।
धाऽकताऽन 2	धाऽऽऽ	दिंऽऽऽदिंऽऽऽ	धाऽऽऽधिरधिर	।
किटतकतकिऽट o	धाऽऽऽदिंऽऽऽ	दिंऽऽऽधाऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	।
तकिऽटधाऽऽऽ 3	दिंऽऽऽदिंऽऽऽ	धाऽऽऽधिरधिर	किटतकतकिऽट	।

धा

३:२:१:३ रचना : गत टुकडा (पारंपरीक)

ताल : तीनताल

प्राप्त : डॉ. गौरांग भावसार जाति : तिश्र और चतुश्र लय : धृत

ताऽकिटतक x	ताऽकिटतक	तिरकिटतक	तिरकिटतक	।
नाऽनाऽऽऽ 2	न्नाऽकिटतक	तिरकिटतक	तकतिरकिट	।
धादिंता o	कऽत्	धाऽऽऽ	कड़ाऽन	।
कतघिड़ा 3	ऽनकत	घेनतड़ा	ऽनताऽ	।

धाऽऽग	दिंऽगन	धाऽऽऽधिरधिर	किटतकतकिऽट	।
x				
धाऽऽऽ	कड़ाऽन	कतघिड़ा	ऽनकत	।
2				
घेनतड़ा	ऽनताऽ	धाऽऽग	दिऽगन	।
o				
धाऽऽऽधिरधिर	किटतकतकिऽट	धाऽऽऽ	कड़ाऽन	।
3				
कतघिड़ा	ऽनकत	घेनतड़ा	ऽनताऽ	।
x				
धाऽऽग	दिऽगन	धाऽऽऽधिरधिर	किटतकतकिऽट	।
2				

धा
x

३:२:१:४ रचना : टुकडा

ताल : तीनताल | मुल रचनाकार : उ. अहमदखान थिरकवा

प्राप्त : पं. नयन घोष | जाति : चतुश्र | लय : धृत

मुख्य बोल : धा

ताऽकिटतक	ताऽकिटतक	तिरकिटतक	तिरकिटतक	।
x				
नाऽनाऽऽऽ	नाऽकिटतक	तिरकिटतक	तकतिरकिट	।
2				
धाधिंना	कऽत्	धाऽक्ड	धाधिंना	।
o				
कऽत्	धाऽक्ड	धाधिंना	कऽत्	।
3				

धा
x

३:२:१:५ रचना : गत टुकडा

ताल : तीनताल मुल रचनाकार : हाजी विलायत अली खाँ

प्राप्त : पं किरन देशपांडे जाति : तिश्र और चतुश्र लय : धृत

धितिटधाऽन x	धितिटताऽन	घेत्ताऽत्रक	धितिटताऽन	।
कतिटगतिट 2	गेनकगेनक	गिनधाऽगिन	धाऽधाऽगिन	।
तकतकतक o	तिनतिनतिन	ताकेनताकेन	ताऽऽऽकिटतक	।

ताऽतिरकिटतकधिरधिरकिटतक धाऽऽऽकिटतकताऽतिरकिटतक
3
धिरधिरकिटतकधाऽऽऽकिटतक ताऽतिरकिटतकधिरधिरकिटतक ।

३:२:१:६ रचना : गत टुकडा

ताल : तीनताल मुल रचनाकार : हाजी विलायत अली खाँ

प्राप्त : पं पुष्करराज श्रीधर जाति : चतुश्र लय : धृत

धात्रकधि x	नकधिन	कतकधि	नगतक	।
धात्रकधि 2	नकधिन	धिरधिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक	।
तकक्ड़ाऽनत् o	धाऽऽऽधिरधिर	किटतकताऽतिर	किटतकतकक्ड़ा	।
ऽनतधाऽऽऽ 3	धिरधिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक	तकक्ड़ाऽनत्	।

धा
x

३:२:१:७ रचना : गत टुकडा
ताल : तीनताल मुल रचनाकार : हाजी विलायत अली खाँ
प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर (ट्रेझर ऑफ फरुखाबाद घराना)
जाति : चतुश्र लय : धृत

धिनगिन x	धिनगिन	धागेत्रक	तिनाकिना	।
तकिटधा 2	त्रकधिन	धागेत्रक	तिनाकिना	।
धिरधिर o	धिरकिट	तिरतिर	तिरकिट	।
तकिटधा 3	त्रकधिन	धागेत्रक	तिनाकिना	।
धातिट x	तातिट	तातिट	धातिट	।
क्डधिट 2	धातिट	दिंगदि	नाऽऽ	।
नगनग o	तिरकिट	ताकेत्रक	तिनाकिना	।
तकिटधा 3	त्रकधिन	धागेत्रक	धिनागिना	।
धाऽऽऽ x	ऽऽऽऽधिनगिन	ताऽऽऽ	ऽऽऽऽधिनगिन	।
धाऽऽऽ 2	ऽऽऽऽधिनगिन	ताऽऽऽ	ऽऽऽऽधिनगिन	।
धाऽऽऽऽऽधिर o	धिरधिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक	धाऽऽऽऽऽधिर	।
धिरधिरकिटतक 3	ताऽतिरकिटतक	धाऽऽऽऽऽधिर	धिरधिरकिटतक	।
धा x				

३:२:१:८ रचना : टुकडा (पारंपरीक)

ताल : तीनताल मुल रचनाकार : उ. इनाम अली खाँ साहब

प्राप्त : पं. पुष्करराज श्रीधर जाति : तिश्र चतुश्र लय : धृत

धाऽऽक्ड x	धिंऽधिंऽ	नाऽऽऽ	तिऽटऽ	।
धाऽघिडनग 2	तिरकिटतक	तिरकिटतक	तककड़ाऽन	।
धातिट o	धातिट	तातिट	तातिट	।
कत्तिटतिट 3	कत्रकधितिट	कतागदिगन	धाऽऽऽकिटतक	।
दिंऽऽऽ x	ऽऽऽऽनाऽतिर	किटतकधिरधिर	किटतकतकिऽट	।
धाऽऽऽ 2	ऽऽऽऽकिटतक	दिंऽऽऽ	ऽऽऽऽनाऽतिर	।
किटतकधिरधि o	किटतकतकिऽट	धाऽऽऽ	ऽऽऽऽकिटतक	।
दिंऽऽऽ 3	ऽऽऽऽनाऽतिर	किटतकधिरधि	किटतकतकिऽट	।

धा
x

३:२:१:९ रचना : टुकडा (पारंपरीक)

ताल : तीनताल मुल रचनाकार : उ. इनाम अली खाँ साहब

प्राप्त : पं. पुष्करराज श्रीधर जाति : तिश्र चतुश्र लय : धृत

धिऽक्डधि x	ऽक्डधिऽ	ताऽघेघे	नकधिन	।
कतकघे 2	तगधिन	धागेत्रक	तिनाकता	।
किडनक o	तिनकिन	ताकेत्रक	तिनाकता	।
कतकघे 3	तगधिन	धागेत्रक	धिनागिना	।

तकतकतक	तकतकतक	घगत्तकिट	घेऽनतरान	।
x				
धात्रकधिकिट	कतागदिगन	धाऽऽऽऽऽ	ताऽऽऽऽऽ	।
2				
ऽऽऽघे	ऽनतऽ	धाऽऽऽ	ऽऽऽघे	।
o				
ऽनतऽ	धाऽऽऽ	ऽऽऽघे	ऽनतऽ	।
3				
धा				
x				

३:२:१:१० रचना : टुकडा (पारंपरीक)

ताल : तीनताल मुल रचनाकार : उ. इनाम अली खाँ साहब

प्राप्त : डॉ. चिरायु भोळे जाति : तिश्र चतुश्र लय : धृत

धिऽक्डधि	नकधिन	धागेत्रक	धिनागिना	।
x				
तकिटधा	त्रकधिन	धागेत्रक	धिनागिना	।
2				
धागेत्रक	धिनधागे	त्रकधिन	धागेत्रक	।
o				
तघेंऽना	ऽडकत्	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	।
3				
ताऽऽऽ	तिरकिट	धिनगिन	धिनगिन	।
x				
धागेत्रक	धिनागिना	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	।
2				
तक्ऽऽक्ड़ाऽन	धाऽऽऽधिरधिर	किटतकधाऽतिर	किटतकतक्ऽऽ	।
o				
क्ड़ाऽनधाऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	तक्ऽऽक्ड़ाऽन	।
3				
धा				
x				

३:२:१:११ रचना : टुकडा (पारंपरीक)

ताल : तीनताल मुल रचनाकार : चुडीयाँवाले इमाम बख्श

प्राप्त : डॉ. अजय अष्टपुत्रे जाति : तिश्र चतुश्र लय : धृत

x	कत्तिटिट	घेघेतिट	क्डधातिट	धागेतिट	।
2	गदिगन	नागेतिट	क्डधातिट	धागेतिट	।
o	तागेतिट	गदिगन	नागेतिट	धिरधिरकिटतक	।
3	तक्ऽऽधिरधिर	किटतकतक्ऽऽ	धात्रक	धितिट	।
x	कताग	दिगन	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	।
2	तक्ऽऽक्ड़ाऽन	ऽनत्ऽ	धाऽऽऽधिरधिर	किटतकधिरधिर	।
o	किटतकताऽतिर	किटतकताऽतिर	किटतकऽऽगेगे	नगेगेन	।
3	धाऽगेगे	नगेगेन	धाऽगेगे	नगेगेन	।

धा
x

३:२:१:१२ रचना : टुकडा (पारंपरीक)

ताल : तीनताल मुल रचनाकार : मिया सल्लारी खाँ

प्राप्त : पं. पुष्करराज श्रीध्र जाति : तिश्र चतुश्र लय : धृत

x	धिरधिरकिटतक	तकिऽटधाऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	तकिऽटधाऽऽऽ	।
2	ऽऽऽऽधाऽऽऽ	ऽऽऽऽतकिऽट	धाऽऽऽऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽऽऽऽ	।
o	धागेनधा	गदिगन	धागेत्रक	धिनागिना	।
3	घेघेऽत	किटतागे	तिनतिना	किडनक	।

क्डधिंऽऽऽऽतिर x	किटतकक्डधिंऽऽ	ऽऽतिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक	।
ताऽऽऽकिटतक 2	तक्ऽऽकिटतक	तक्ऽऽधिरधिर	किटतकतकिऽट	।
धाऽऽऽकिटतक o	तक्ऽऽकिटतक	तक्ऽऽधिरधिर	किटतकतकिऽट	।
धाऽऽऽकिटतक 3	तक्ऽऽकिटतक	तक्ऽऽधिरधिर	किटतकतकिऽट	।
धा x				

३:२:१:१३ रचना : चाबुकमार तोडा (पारंपरीक)

ताल : तीनताल मुल रचनाकार :

प्राप्त : पं. किरन देशपांडे जाति : तिश्र चतुश्र लय : धृत

घ्ड़ाऽनकिटतक x	ताऽतिरकिटतक	तकिटधा	त्रकधिंना	।
कत्ऽधा 2	धिंनाकत्	धिरधिर	किटतक	।
ताऽतिर o	किटतक	धिरधिरकत्ऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	।
ताऽतिरकिटतक 3	धाऽऽऽकिटतक	धिंऽताऽकिटतक	ताकेतिटघिड़ाऽन	।
धा x				

३:२:१:१४ रचना : टुकडा (पारंपरीक)

ताल : तीनताल मुल रचनाकार : उ. इनाम अली खाँ साहब

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर (ट्रेझर ऑफ फरुखाबाद घराना)

जाति : तिश्र चतुश्र लय : धृत

तकधिन x	धिनागिना	तकधिन	धिनागिना	।
तकधिन 2	घेतगघे	तगधिन	धिनागिना	।
तकिटत o	किटतक	धिनघेत	गघेतग	।
धिनगिन 3	धागेधिन	गिनधागे	धिनगिन	।
धागेत्रक x	धिनागिना	तकधिन	धिनागिना	।
धिनघिडनग 2	ताऽतिरकिट	ताऽतिरकिट	नगतिरकिट	।
धाऽदिंऽ o	ऽघेऽऽऽ	ऽऽनत्	धाऽकत्	।
धिरधिरकिटतक 3	धाऽतिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	तिंऽतिरकिटतक	।
धाऽऽदिं x	ऽघेनत्	धाऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	।
धाऽतिरकिटतक 2	धाऽतिरकिटतक	तिंऽतिरकिटतक	धाऽऽदिं	।
ऽघेनत् o	धाऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	।
धाऽतिरकिटतक 3	तिंऽतिरकिटतक	धाऽऽदिं	ऽघेनत्	।

धा
x

३:२:२ चक्रदार :

चक्रदार यह स्वतंत्र अविस्तारक्षम रचना है । स्वतंत्र वादन में एवं साथ–संगत में चक्रदार का महत्वपूर्ण प्रयोग किया जाता है । चक्रदार तिहाई और चक्रदार दोनों भिन्न है । चक्रदार तिहाई यह खास तोर से कायदे के संदर्भ में बजाई जाती है, परंतु चक्रदार यह स्वतंत्ररूप सें विभिन्न बोलों का चयन करके बजाया जाता है । चक्रदार के आवर्तन अमर्यादित होते है । चक्रदार में तीन पल्ले होते है । ताल के मात्रा अनुसार उसकी रचना की जाती है और यह मध्य लय और दृत लय में प्रस्तुत की जाती है । चक्रदार के तीन पल्ले होते है और अंतिम हिस्सा तिहाई स्वरूप होता है । अर्थात यह तीनों पल्ले बजाकर सम पर आने का चक्र पूर्ण होता है इसलिए इसे चक्रदार केहते है ।

पं. सुधीर माईणकर जी के मतानुसार ''चक्रदार दिर्घ आकार की वह रचना है जिसका आखिर अंग तिहाई होता है और वह रचना सम सें शुरु होकर तिनबार बजाने सें सम पर आती है ।''[२२]

''आचार्य गीरीशचंद्र श्रीवास्तव जी के मतानुसार चक्रदार यह संस्कृत भाषा का शब्द 'चक्र' से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है गोलाकार या चक्रनुमा । चक्रदार रचना के उदगम का स्तोत्र तिहाई है ।''[२३]

श्री भगवत शरण शर्मा जी के मतानुसार ''जब किसी तियेयुक्त बोल का तिनबार बजाया जाए की अंतिम धा सम पर आए तो उस चक्रदार केहते है ।''[२४]

पं. अरविद मुलगाँवकर जी के मतानुसार ''चक्र याने वर्तुल । वर्तुलात्मक रचना की प्रदिर्घ तिहाई याने चक्रदार जिस के प्रत्येक चक्र में तिहाई होती है । चक्रदार यह कथक–नृत्य से आई हुई रचना है ।''[२५]

चक्रदार के मुख्य तीन प्रकार है । (१) बेदम चक्रदार (२) फरमाईशी चक्रदार (३) कमाली चक्रदार

३:२:२:१ बेदम चक्रदार :

यह चक्रदार में सामान्य चक्रदार का स्वरूप ही देखने को मिलता है परंतु चक्रदार के तीनों पल्लों के बिय कोई भी विराम नहीं लगाया जाता है याने एक पल्लों पूर्ण होनें के बाद बिना रुके तुरंत ही दुसरा पल्ला शुरु हो जाता है इसलिए उसे बेदम चक्रदार कहते है ।

३:२:२:२ फरमाईशी चक्रदार :

इस चक्रदार में तीन पल्ले होते है । जिस में प्रथम पल्ला के तिहाई का प्रथम बोल (धा या अन्य शब्द) सम पर आता है । दुसरे पल्ले का तिहाई का दुसरा अंतिम अक्षर (धा या अन्य शब्द) सम पर आता है और अंतिम पल्ला का तिहाई का अंतिम अक्षर (धा या अन्य शब्द) सम पर आता है और वहाँ चक्रदार समाप्त होती है । ऐसी विशेष रचना को चक्रदार बंदिश को भोगों द्वारा फरमाईश कि जाऐ उसे भी फरमाईशी चक्रदार केहते है ।

३:२:२:३ कमाली चक्रदार :

इस चक्रदार में फरमाईशी चक्रदार जेसे ही तीन पल्ले होते है । जिस में प्रथम पल्ले का तिहाई का प्रथम भाग सम पर धा आता है । दुसरे पल्ले में तिहाई के दुसरे भाग का दुसरा धा सम पर आता है । तिसरे पल्ले में तिहाई के तिसरे भाग का अंतिम धा सम पर आता है । उसे कमाली चक्रदार कहते है । यह एक चमत्कार दर्शाता है ।

३:२:२:४ रचना : चक्रदार (पारंपरीक)

ताल : तीनताल लय : धृत

प्राप्त : प्रोफे. डॉ. अजय अष्टपुत्रे जाति : तिश्र और चतुश्र

x	त्रकघेत्	ऽऽधिट	धिटधिट	घिडनग	।
2	धिनतक	धिनतक	तकिट	धात्रक	।
o	धिटक	ताऽन	धिरधिरकिटतक	ताकिऽटधाऽऽ	।
3	धिरधिरकिटतक	तकिऽटधाऽऽऽ	तकिऽटधाऽऽऽ	ऽऽऽऽऽऽऽऽ	।
x	धात्रक	धितिट	कताग	दिगन	।
2	दिगन	नगन	तिटक	ताऽन	।
o	धात्रकधि	तिटकत	घेनतरा	डनकत्	।
3	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	तिंऽनाऽकिटतक	ताऽतिरकिटतक	।
x	त्रकघेत्ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽऽऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	।
2	तिंऽनाऽकिटतक	ताऽतिरकिटतक	त्रकघेत्ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽऽऽऽ	।
o	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	तिंऽनाऽकिटतक	ताऽतिरकिटतक	।
3	त्रकघेत्ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽऽऽऽ	त्रकघेत्	ऽऽधिट	।

x	धिटधिट	घिडनग	धिनतक	धिनतक	।
2	तकिट	धात्रक	धिटक	ताऽन	।
o	धिरधिरकिटतक	तकिऽटधाऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	तकिऽटधाऽऽऽ	।
3	तकिऽटधाऽऽऽ	ऽऽऽऽऽऽऽऽ	धात्रक	धितिट	।
x	कताग	दिगन	दिगन	नगन	।
2	तिटक	ताऽन	धात्रकधि	तिटकत	।
o	घेनतरा	डनकत्	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	।
3	तिंऽनाऽकिटतक	ताऽतिरकिटतक	त्रकघेत्ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽऽऽऽ	।
x	धिरधिरकिटतक	धिऽतिकिटतक	तिंऽनाऽकिटतक	ताऽतिरकिटतक	।
2	त्रकघेत्ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	।
o	तिंऽनाऽकिटतक	ताऽतिरकिटतक	त्रकघेत्ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽऽऽऽ	।
3	त्रकघेत्	ऽऽधिट	धिटधिट	घिडनग	।
x	धिनतक	धिनतक	तकिट	धात्रक	।
2	धिटक	ताऽन	धिरधिरकिटतक	तकिऽटधाऽऽऽ	।
o	धिरधिरकिटतक	तकिऽटधाऽऽऽ	तकिऽटधाऽऽऽ	ऽऽऽऽऽऽऽऽ	।
3	धात्रक	धितिट	कताग	दिगन	।

दिगन x	नगन	तिटक	ताऽन	।
धात्रकधि 2	तिटकत	घेनतरा	ड़नकत्	।
धिरधिरकिटतक o	धाऽतिरकिटतक	तिंऽनाऽकिटतक	ताऽतिरकिटतक	।
त्रकघेत्ऽऽऽऽ 3	ऽऽऽऽऽऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	धिऽतिकिटतक	।
तिंऽनाऽकिटतक x	ताऽतिरकिटतक	त्रकघेत्ऽऽऽ	ऽऽऽऽऽऽऽऽ	।
धिरधिरकिटतक 2	धाऽतिरकिटतक	तिंऽनाऽकिटतक	ताऽतिरकिटतक	।
धा 3				

३:२:२:५ रचना : द्धुमुही चक्रदार (पारंपरीक)

ताल : तीनताल लय : धृत

प्राप्त : पं. पुष्करराज श्रीधर जाति : तिश्र और चतुश्र

धिरधिरकिटतक x	तकिटधा	कत्तिट	धाऽतगे	।
ऽनधाऽ 2	घेघेनाना	किटतकताऽतिर	किटतकतकिऽट	।
धाऽऽऽकिटतक o	तकऽऽधिरधिर	कत्ऽऽ	धिरधिरकिटतक	।
तकिटधा 3	कत्तिट	धाऽतगे	ऽनधाऽ	।
घेघेनाना x	किटतकताऽतिर	किटतकतकिऽट	धाऽऽऽकिटतक	।
तकऽऽधिरधिर 2	कत्ऽऽ	धिरधिरकिटतक	तकिटधा	।

कत्तिट o	धाऽतगे	ऽनधाऽ	घेघेनाना	।
किटतकताऽतिर 3	किटतकतकिऽट	धाऽऽऽकिटतक	तकऽऽधिरधिर	।
कत् X				

३:२:२:६ रचना : ढुमुही चक्रदार (पारंपरीक)

ताल : तीनताल लय : धृत

प्राप्त : डॉ. केदार मुकादम जाति : चतुश्र

धिरधिरकत्तऽऽ x	ताकेतिट	कताऽघे	नाऽधाऽ	।
तिंऽनाऽ 2	गेनातिना	धाधिनाधा	तिटकता	।
गेनातिनमा o	कत्तऽऽधिरधिर	कत्तऽऽऽऽऽऽ	धिरधिरकत्ऽऽ	।
ताकेतिट 3	कताऽघे	नाऽधाऽ	तिंऽनाऽ	।
गेनातिना x	धाधिनाधा	तिटकता	गेनातिना	।
कत्ऽऽधिरधिर 2	कत्ऽऽऽऽऽऽ	धिरधिरकत्ऽऽ	ताकेतिट	।
कताऽघे o	नाऽधाऽ	तिंऽनाऽ	गेनातिना	।
धाधिनाधा 3	तिटकता	गेनातिना	कत्ऽऽधिरधिर	।
धा x				

३:२:२:७ रचना : झुलना छंद की चक्रदार (पारंपरीक)

ताल : तीनताल लय : धृत

प्राप्त : डॉ. केदार मुकादम जाति : मिश्र

धाऽगे x	नाऽतिट	तिटगे	नाऽत्रक	।
धिटगे 2	नाऽगेन	दिंगदि	नाऽगेना	।
कऽत् o	तिरकिट	ताकेन	ताकेतिट	।
क्डधिंऽ 3	नगनगनगनग	तिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	।
धाऽऽ x	क्डधिंऽ	नगनगनगनग	तिरकिटतक	।
धिरधिरकिटतक 2	धाऽऽऽ	क्डधिंऽ	नगनगनगनग	।
तिरकिटतक o	धिरधिरकिटतक	धाऽऽऽ	धाऽगे	।
नाऽतिट 3	तिटगे	नाऽत्रक	धिटगे	।
नाऽगेन x	दिंगदि	नाऽगेना	कऽत्	।
तिरकिट 2	ताकेन	ताकेतिट	क्डधिंऽ	।
नगनगनगनग o	तिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	धाऽऽ	।
क्डधिंऽ 3	नगनगनगनग	तिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	।
धाऽऽऽ x	क्डधिंऽ	नगनगनगनग	तिरकिटतक	।
धिरधिरकिटतक 2	धाऽऽऽ	धाऽगे	नाऽतिट	।
तिटगे o	नाऽत्रक	धिटगे	नाऽगेन	।
दिंगदि 3	नाऽगेना	कऽत्	तिरकिट	।

ताकेन x	ताकेतिट	क्डधिंऽ	नगनगनगनग	।
तिरकिटतक 2	धिरधिरकिटतक	धाऽऽ	क्डधिंऽ	।
नगनगनगनग o	तिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	धाऽऽऽ	।
क्डधिंऽ 3	नगनगनगनग	तिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	।
धा				

३:२:२:८ रचना : चक्रदार (पारंपरीक)

ताल : तीनताल मुल रचना : उ. हाजी विलायतअली खाँ

प्राप्त : श्री अमोद दंडगे जाति : तिश्र और चतुश्र लय : धृत

तिककिटतकधिर x	धिरधिरकत्ऽऽ	धागेदिंऽ	नानातिट	।
घेघेतिट 2	घेघेतिट	घेघेदिंऽ	ऽऽऽऽकिटतक	।
दिंऽऽऽऽऽऽऽ o	ऽऽऽऽकिटतक	दिंऽऽऽऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽऽऽऽ	।
क्डधिंऽक्ड 3	धिंऽऽऽकिटतक	दिंऽऽऽऽऽऽऽ	नाऽऽऽकिटतक	।
ताऽऽऽऽऽधिर x	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	ताऽऽऽऽऽधिर	।
धिरधिरकिटतक 2	धाऽतिरकिटतक	धाऽऽऽऽऽऽऽ	ऽऽऽऽकिटतक	।
दिंऽऽऽऽऽऽऽ o	नाऽऽऽकिटतक	ताऽऽऽऽऽधिर	धिरधिरकिटतक	।
धाऽतिरकिटतक 3	ताऽऽऽऽऽधिर	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	।

x	धाऽऽऽऽऽऽऽऽ	ऽऽऽऽकिटतक	दिंऽऽऽऽऽऽऽऽ	नाऽऽऽकिटतक	।
2	ताऽऽऽऽऽधिर	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	ताऽऽऽऽऽधिर	।
o	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	धाऽऽऽऽऽऽऽऽ	तिककिटतकधिर	।
3	धिरधिरकत्ऽऽ	धागेदिंऽ	नानातिट	घेघेतिट	।
x	घेघेतिट	घेघेदिंऽ	ऽऽऽऽकिटतक	दिंऽऽऽऽऽऽऽऽ	।
2	ऽऽऽऽकिटतक	दिंऽऽऽऽऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽऽऽऽऽ	क्डधिंऽक्ड	।
o	धिंऽऽऽकिटतक	दिंऽऽऽऽऽऽऽऽ	नाऽऽऽकिटतक	ताऽऽऽऽऽधिर	।
3	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	ताऽऽऽऽऽधिर	धिरधिरकिटतक	।
x	धाऽतिरकिटतक	धाऽऽऽऽऽऽऽऽ	ऽऽऽऽकिटतक	दिंऽऽऽऽऽऽऽऽ	।
2	नाऽऽऽकिटतक	ताऽऽऽऽऽधिर	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	।
o	ताऽऽऽऽऽधिर	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	धाऽऽऽऽऽऽऽऽ	।
3	ऽऽऽऽकिटतक	दिंऽऽऽऽऽऽऽऽ	नाऽऽऽकिटतक	ताऽऽऽऽऽधिर	।
x	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	ताऽऽऽऽऽऽधिर	धिरधिरकिटतक	।
2	धातिरकिटतक	धाऽऽऽऽऽऽऽऽ	तिककिटतकधिर	धिरधिरकत्ऽऽ	।
o	धागेदिंऽ	नानातिट	घेघेतिट	घेघेतिट	।
3	घेघेदिंऽ	ऽऽऽऽकिटतक	दिंऽऽऽऽऽऽऽऽ	ऽऽऽऽकिटतक	।

दिंऽऽऽऽऽऽऽ x	ऽऽऽऽऽऽऽऽ	क्डधिंऽक्ड	धिंऽऽऽकिटतक	।
दिंऽऽऽऽऽऽऽ 2	नाऽऽऽकिटतक	ताऽऽऽऽऽधिर	धिरधिरकिटतक	।
धाऽतिरकिटतक o	ताऽऽऽऽऽधिर	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	।
धाऽऽऽऽऽऽऽ 3	ऽऽऽऽकिटतक	दिंऽऽऽऽऽऽऽ	नाऽऽऽकिटतक	।
ताऽऽऽऽऽधिर x	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	ताऽऽऽऽऽधिर	।
धिरधिरकिटतक 2	धाऽतिरकिटतक	धाऽऽऽऽऽऽऽ	ऽऽऽऽकिटतक	।
दिंऽऽऽऽऽऽऽ o	नाऽऽऽकिटतक	ताऽऽऽऽऽधिर	धिरधिरकिटतक	।
धाऽतिरकिटतक 3	ताऽऽऽऽऽधिर	धिरधिरकिटतक	धातिरकिटतक	।
धा				

३:२:२:९ रचना : चक्रदार (पारंपरीक)

ताल : तीनताल मुल रचना : उ. हाजी विलायत अली खाँ

प्राप्त : पं. अरविंद मुळगाँवकर जाति : तिश्र और चतुश्र लय : धृत

धिरधिरकिटतक x	तकिऽटधाऽऽऽ	ऽऽऽऽधाऽऽऽ	ऽऽऽऽतकिऽट	।
धाऽऽऽऽऽऽऽ 2	धागेनधा	गदिगन	धागेत्रक	।
धिनागिना o	घेघेऽत	किटतागे	तिनतिना	।
किटताके 3	क्डधिंऽऽऽतिर	किटतकक्डधिंऽ	ऽऽतिरकिटतक	।

ताऽतिरकिटतक x	ताऽऽऽऽऽऽऽ	कत्ऽऽधिरधिर	किटतकतकिऽट	।
धाऽऽऽऽऽऽऽ 2	कत्ऽऽधिरधिर	किटतकतकिऽ	धाऽऽऽऽऽऽऽ	।
कत्ऽऽधिरधिर o	किटतकतकिऽट	धाऽऽऽऽऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	।
तकिऽटधाऽऽऽ 3	ऽऽऽऽधाऽऽऽ	ऽऽऽऽतकिऽट	धाऽऽऽऽऽऽऽ	।
धागेनधा x	गदिगन	धागेत्रक	धिनागिना	।
घेघेऽत 2	किटतागे	तिनतिना	किटताके	।
क्डधिंऽऽऽतिर o	किटतकक्डधिंऽ	ऽऽतिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक	।
ताऽऽऽऽऽऽऽ 3	कत्ऽऽधिरधिर	किटतकतकिऽट	धाऽऽऽऽऽऽऽ	।
कत्ऽऽधिरधिर x	किटतकतकिऽ	धाऽऽऽऽऽऽ	कत्ऽऽधिरधिर	।
किटतकतकिऽट 2	धाऽऽऽऽऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	तकिऽटधाऽऽऽ	।
ऽऽऽऽधाऽऽऽ o	ऽऽऽऽतकिऽट	धाऽऽऽऽऽऽऽ	धागेनधा	।
गदिगन 3	धागेत्रक	धिनागिना	घेघेऽत	।
किटतागे x	तिनतिना	किटताके	क्डधिंऽऽऽतिर	।
किटतकक्डधिंऽ 2	ऽऽतिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक	ताऽऽऽऽऽऽऽ	।
कत्ऽऽधिरधिर o	किटतकतकिऽट	धाऽऽऽऽऽऽऽ	कत्ऽऽधिरधिर	।
किटतकतकिऽ 3	धाऽऽऽऽऽऽऽ	कत्ऽऽधिरधिर	किटतकतकिऽट	।

धा

३:२:२:१० रचना : चक्रदार (पारंपरीक)

ताल : तीनताल मुल रचना : चुडीयावाले इमाम बख्श

प्राप्त : डॉ. गौरांग भावसार जाति : तिश्र ओर चतुश्र लय : धृत

तकतकतक	तकतकतकत	
तकिटधिकिट	घेऽनतराऽन	।
धाऽऽकऽत	धाऽधाऽधाऽ	
तकिटधिकिट	घेऽनतराऽन	।
धाऽऽऽऽऽऽ	धिरधिरकिटतकधाऽतिरकिटतक	
तक्क्डाऽनधाऽकत्	धाऽऽऽऽऽकत	।
घेघेघेघेघेघे	घेघेघेघेघेघे	
धिरधिरकिटताऽऽऽधिरधिर	किटतकताऽऽऽधिरधिरकिटतक	।
धाऽऽऽऽऽकत	घेघेघेघेघेघे	
घेघेघेघेघेघे	धिरधिरकिटताऽऽऽधिरधिर	।
किटतकताऽऽऽधिरधिरकिटतक	धाऽऽऽऽऽकत	
घेघेघेघेघेघे	घेघेघेघेघेघे	।
धिरधिरकिटताऽऽऽधिरधिर	किटतकताऽऽऽधिरधिरकिटतक	
धाऽऽऽऽऽऽऽ	तकतकतक	।
तकतकतक	तकिटधिकिट	
घेऽनतराऽन	धाऽऽकऽत	।

धाऽधाऽधाऽ	तकिटधिकिट	
घेऽनतराऽन	धाऽऽऽऽऽ	।
धिरधिरकिटतकधाऽतिरकिटतक	तक्क्ड़ाऽनधाऽकत्	
धाऽऽऽऽऽऽऽकत	घेघेघेघेघेघे	।
घेघेघेघेघेघे	धिरधिरकिटताऽऽऽधिरधिर	
किटतकताऽऽऽधिरधिरकिटतक	धाऽऽऽऽऽकत	।
घेघेघेघेघेघे	घेघेघेघेघेघे	
धिरधिरकिटताऽऽऽधिरधिर	किटतकताऽऽऽधिरधिरकिटतक	।
धाऽऽऽऽऽकत	घेघेघेघेघेघे	
घेघेघेघेघेघे	धिरधिरकिटताऽऽऽधिरधिर	।
किटतकताऽऽऽधिरधिरकिटतक	धाऽऽऽऽऽऽऽ	
तकतकतक	तकतकतक	।
तकिटधिकिट	घेऽनतराऽन	
धाऽऽकऽत	धाऽधाऽधाऽ	।
तकिटधिकिट	घेऽनतराऽन	
धाऽऽऽऽऽ	धिरधिरकिटतकधाऽतिरकिटतक	।
तक्क्ड़ाऽनधाऽकत्	धाऽऽऽऽऽऽकत	

घेघेघेघेघेघे	घेघेघेघेघेघे	।
धिरधिरकिटताऽऽऽधिरधिर	किटतकताऽऽऽधिरधिरकिटतक	
धाऽऽऽऽऽकत	घेघेघेघेघेघे	।
घेघेघेघेघेघे	धिरधिरकिटताऽऽऽधिरधिर	
किटतकताऽऽऽधिरधिरकिटतक	धाऽऽऽऽऽकत	।
घेघेघेघेघेघे	घेघेघेघेघेघे	
धिरधिरकिटताऽऽऽधिरधिर	किटतकताऽऽऽधिरधिरकिटतक	।

धा

३:२:२:११ रचना : लंबछड चक्रदार

ताल : तीनताल मुल रचना : उ. हाजी विलायत अली खाँ

प्राप्त : पं. अरविंद मुळगाँवकर जाति : तिश्र और चतुश्र लय : धृत

क्डऽधिंऽ (x)	नातिट	तिरकिटतक	तिटकताऽन	।
घेनकतकिट (2)	गिनधाऽगिन	धात्रकधितिट	गेनकतिंऽऽ	।
नगनगनग (o)	तिटकताऽन	तकतकतक	तिंऽकिडनक	।
क्डऽधिंऽना (3)	धाऽधिंऽनाऽ	घिडनगतक	तक्ऽऽऽऽ	।
घेनकतकिट (x)	गिनधाऽगिन	धात्रकधितिट	गेनगदिगन	।
धाऽऽऽऽऽ (2)	नाऽऽऽऽऽ	ताऽधिरधिर	किटतकतकिऽट	।
धाऽऽऽऽऽ (o)	कडधित्	ऽऽऽधि	तिटऽऽ	।
धिरधिरकिटतक (3)	ताऽतिरकिटतक	ताऽऽऽधिरधिर	किटतकतकिऽट	।

धाऽऽऽऽऽऽ x	धिरधिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक	ताऽऽऽधिरधिर	।
किटतकतकिऽट 2	धाऽऽऽऽऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक	।
ताऽऽऽधिरधिर o	किटतकतकिऽट	धाऽऽऽऽऽऽऽ	क्डऽधिंऽ	।
नातिट 3	तिरकिटतक	तिटकताऽन	घेनकतकिट	।
गिनधाऽगिन x	धात्रकधितिट	गेनकतिंऽऽ	नगनगनग	।
तिटकताऽन 2	तकतकतक	तिंऽकिडनक	क्डऽधिंऽना	।
धाऽधिंऽनाऽ o	घिडनगतक	तक्ऽऽऽऽ	घेनकतकिट	।
गिनधाऽगिन 3	धात्रकधितिट	गेनगदिगन	धाऽऽऽऽऽ	।
नाऽऽऽऽऽ x	ताऽधिरधिर	किटतकतकिऽट	धाऽऽऽऽऽ	।
कडधित् 2	ऽऽऽधि	तिटऽऽ	धिरधिरकिटतक	।
ताऽतिरकिटतक o	ताऽऽऽधिरधिर	किटतकतकिऽट	धाऽऽऽऽऽऽऽ	।
धिरधिरकिटतक 3	ताऽतिरकिटतक	ताऽऽऽधिरधिर	किटतकतकिऽट	।
धाऽऽऽऽऽऽऽ x	धिरधिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक	ताऽऽऽधिरधिर	।
किटतकतकिऽट 2	धाऽऽऽऽऽऽऽ	क्डऽधिंऽ	नातिट	।
तिरकिटतक o	तिटकताऽन	घेनकतकिट	गिनधाऽगिन	।
धात्रकधितिट 3	गेनकतिंऽऽ	नगनगनग	तिटकताऽन	।

तकतकतक x	तिंऽकिडनक	क्डऽधिंऽना	धाऽधिंऽनाऽ	।
घिडनगतक 2	तक्ऽऽऽऽ	घेनकतकिट	गिनधाऽगिन	।
धात्रकधितिट o	गेनगदिगन	धाऽऽऽऽऽ	नाऽऽऽऽऽ	।
ताऽधिरधिर 3	किटतकतकिऽट	धाऽऽऽऽऽ	कडधित्	।
ऽऽऽधि x	तिटऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक	।
ताऽऽऽधिरधिर 2	किटतकतकिऽट	धाऽऽऽऽऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	।
ताऽतिरकिटतक o	ताऽऽऽधिरधिर	किटतकतकिऽट	धाऽऽऽऽऽऽऽ	।
धिरधिरकिटतक 3	ताऽतिरकिटतक	ताऽऽऽधिरधिर	किटतकतकिऽट	।
धा				

३:२:२:१२ रचना : फरमाइशी चक्रदार (पारंपरीक)
ताल : तीनताल
प्राप्त : पं. अरविंद मुळगाँवकर (ट्रेझर ऑफ फरुखाबाद घराना)
जाति : चतुश्र लय : धृत

घेऽतग x	धिननग	तिटकता	किडनक	।
तिटकता 2	किटधागे	तिटघिड़ा	ऽनधिन	।
धिनधिना o	गिनाधागे	त्रकधिन	घिडनग	।
धिरधिरकिटतक 3	तक्ऽऽधिरधिर	किटतकधिरधिर	किटतकतकिऽट	।

x	धाऽऽऽऽऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	तक्ऽऽधिरधिर	किटतकधिरधिर ।
2	किटतकतकिऽट	धाऽऽऽऽऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	तक्ऽऽधिरधिर ।
o	किटतकधिरधिर	किटतकतकिऽट	धाऽऽऽऽऽऽऽ	घेऽतग ।
3	धिननग	तिटकता	किडनक	तिटकता ।
x	किटधागे	तिटघिड़ा	ऽनधिन	धिनधिना ।
2	गिनाधागे	त्रकधिन	घिडनग	धिरधिरकिटतक ।
o	तक्ऽऽधिरधिर	किटतकधिरधिर	किटतकतकिऽट	धाऽऽऽऽऽऽऽ ।
3	धिरधिरकिटतक	तक्ऽऽधिरधिर	किटतकधिरधिर	किटतकतकिऽट ।
x	धाऽऽऽऽऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	तक्ऽऽधिरधिर	किटतकधिरधिर ।
2	किटतकतकिऽट	धाऽऽऽऽऽऽऽ	घेऽतग	धिननग ।
o	तिटकता	किडनक	तिटकता	किटधागे ।
3	तिटघिड़ा	ऽनधिन	धिनधिना	गिनाधागे ।
x	त्रकधिन	घिडनग	धिरधिरकिटतक	तक्ऽऽधिरधिर ।
2	किटतकधिरधिर	किटतकतकिऽट	धाऽऽऽऽऽऽऽ	धिरधिरकिटतक ।
o	तक्ऽऽधिरधिर	किटतकधिरधिर	किटतकतकिऽट	धाऽऽऽऽऽऽऽ ।
3	धिरधिरकिटतक	तक्ऽऽधिरधिर	किटतकधिरधिर	किटतकतकिऽट ।

३:२:३ गतः

''पं. गीरीश चंद्र श्रीवास्तव जी के मतानुसार 'कायदा, पेशकार, टुकड़ा, परण आदि से भिन्न एक विशेष प्रकार की बंदिश को गत कहते है ।' जो अधिकतर तिहाई कृत होती है ।''[२६]

प्रो. सुधीरकुमार सकसेना जी के मतानुसार ''गत यह गति का अपभ्रंश शब्द है, जिसको चलनेवाला कहते है और उसका अंत तिहाई रहित होता है ।''[२७]

पं. अरविंद मुळगाँवकर जी के मतानुसार ''गत शब्द के नाम की व्युतपत्ति गति शब्द से हुई है । व्यवहार में हम विविध क्रियाएँ देखते है, उन क्रियाओं में अलग-अलग प्रकार की गति या चाल देखने को मिलती है, इन गति को लय-ताल के संदर्भ में कुछ अनुशासन तथा परंपरा की शैली में कलात्मकता से निबध्ध किया जाता है, ऐसी बंदिश को गत कहते है ।''[२८]

पं.पुष्करराज श्रीधर जी के मतानुसार ''गत में किसी निश्चित क्रिया का अवलोकन होता है, जिस में ध्वनि का अवलोकन करके बोलों के माध्यम से लय-ताल में रचना निबध्ध की जाती है उसे गत कहते है । जो तिहाई रहित एवं तिहाई सहित भी होती है ।''[२९]

गत यह स्वतंत्र तबला वादन की एक महत्व की रचनाकृति है । गत की रचना में तबला वादक का वादन कौशल्य, लय पर प्रभुत्व और प्रतिभा एवं कल्पनाशक्ति दिखाई देती है । गत में उपयोग में ली हुई बोल पंक्ति या काव्य का दायाँ एवं बायाँ पर उसी अंदाज का भाव समजकर बजाया जाता है । आज पारंपारिक गतो में सौन्दर्य का दर्जा दिखाई देता है । जिसका श्रेय पुराने बुर्जुगों की कल्पनाशक्ति स्पष्ट रूप दिखाई देती है । आज भी घरानेदार कलाकार गत का उल्लेख करते समय कान पकडकर रचनाकार का नाम लेते है ।

गत यह स्वतंत्रवादन की अविस्तारक्षम प्रमुख बंदिश है । परंतु साथ-संगत में उतनी ही कल्पकता से बजाई जाती है । गत में गति का दर्शन होता है । अनेक दैनिक घटनाएँ में से भी गति का अनुभव महसुस होता है । जैसे मोर की चाल बारिश में आनंद देती है, उस में भी गत की रचना की जाती है । उसी प्रकार कोई सुखद या करुण घटना, दो बोलों के बीच का संवाद या क्लेश आदि को ध्यान में रखते हुए गत की रचना की जाती है ।

फरुखाबाद घराने में गतों को विशेष रूप से प्रस्तुत किया जाता है । जो इस घराने की स्वतंत्र पहचान है । गत यह मध्य विलंबित लय में साधारणतः बजाई जाती है । सम के पहले गत पूर्ण होने से उसका पुनरावर्तन किया जाता है । याने गत को सम से सम दो बार बजाया जाता है । गत में तिहाई नहीं होती ऐसा माना जाता है । परंतु कई गतें तिहाई से समाप्त होती है । गत में लय–लयकारी, छंद, जाति, ग्रह, यति आदि का विचार स्पष्ट रूप से होता है ।

''पं. अरविंद मुळगाँवकर जी के अनुसार गत के कुल १६ प्रकार माने जाते है ।'' [३०]
''पं. निखिल घोष जी को गत के ५० प्रकार ज्ञात थे ।'' [३१]

गत के १६ प्रकार इस प्रकार है –

(१) सिधी गत (२) रेला गत (३) मंजेदार गत (४) तिहाई गत (५) त्रिपल्ली गत (६) दुमुही गत (७) फरद गत (८) मिश्र जाति की गत (९) खंड जाति की गत (१०) दोधारी गत (११) तिधारी गत (१२) चौधारी गत (१३) पंजधारी गत (१४) गेंद उछाल गत (१५) छंदवृत्त पर आधारीत गत (१६) तिलई मंजेधार गत

कुछ गते खाली–भरी में निबध्ध होती है । अर्थात् कायदे की तरह उस में खाली–भरी होती है । परंतु मुल ढांचा गत का होता है । इसलिए उसे गत कायदा कहते है । कुछ गत अंग के तिहाई युक्त अलग–अलग शब्दसमुह के टुकडे बजाये जातो है । उसे गत टुकड़ा कहते है । जिस में गत का अंत स्पष्टता से दिखाई देता है ।

शोधार्थीने गतों के अनेक अलग–अलग प्रकार का अभ्यास करके उसे लिपिबध्ध करने का प्रयास किया है ।

(१) सिधी गत : यह गत में प्रथमताः विलंबित लय में बजाई जाती है । बाद में उसकी दुगुन की जाती है । यह गत हमेशां चतुश्र जाति में ही निबध्ध होती है ।

(२) रेला गत : इस गत के अंतिम भाग में रेले के बोलों का समावेश किया जाता है । इसलिए उसे रेला गत कहते है ।

(३) मंजधार गत : मंजधार याने प्रवाह । जैसे नदी का प्रवाह, अनेक खडको पर पानी के माध्यम से टकराता है । पानी की ध्वनि तथा उसकी चंचलवृत्ति का गत के माध्यम से प्रयोग किया जाता है । इस प्रकार की गत को मंजधार गत कहते है ।

(४) तिहाई गत : इस गत के अनेक प्रकार है । (१) सिधि तिहाई गत (२) अकाल तिहाई गत (३) सब अकाल तिहाई गत (४) बराबरी तिहाई गत

(५) त्रिपल्ली गत : इस प्रकार की गतों में लय के तिन दर्जे होते है । पहला भाग साधारणतः मध्यलय में बजाया जाता है । दुसरे भाग में प्रथम भाग की लय की देढगुन की जाती है । और तिसरे भाग में पहले भाग की लय की दुगुन की जाती है, इसलिए इसे त्रिपल्ली गत कहते है ।

(६) दुमुही गत : इसका अर्थ दो मुँह की गत ऐसा होता है । अर्थात् प्रारंभ का शब्द या शब्दसमुह और अंतिम शब्द पंक्ति एक जैसी ही होती है । उसे दुमुही गत कहते है ।

(७) फरद गत : ''फरद यह फारसी भाषा का शब्द है । जिसका अर्थ 'एक ही' या 'अजोड' होता है । अर्थात् फर्द का जोडा नहीं होता है और उस का अंत 'तिरकिटतकता ऽधिरधिरकिट धाऽ' बोल से ही होता है ।'' [३२] उ. अमीरहुसैन खाँ साहब के मतानुसार फरद गत याने जिस गति का जवाब देना मुश्किल है ऐसी गत । इस गत की दुसरी खास बात यह है कि इसका प्रारंभ एवं अंत कठिन अक्षरों से किया जाता है ।

(८) मिश्र जाति की गत : इस गत में चौदा मात्रा अथवा अक्षर काल का अंग निबध्ध होतने के कारण सात मात्रे का छंद इस गतों में दिखाई देता है । सात अक्षर होने के कारण उसमें तिश्र एवं चतुश्र जाति का मिश्रण दिखाई देता है । इसलिए इसे मिश्र जाति की कहते है ।

(९) खंड जाति की गत : इस गतों में प्रत्येक मात्रा में पांच अक्षर होते है । उस प्रकार खंड जाति के वजन अनुसार गत बांधी जाती है । इसलिए उसे खंड जाति की गत कहते है ।

(१०) दोधारी गत : यह गत दो–दो बोल समुह से निबध्ध होती है अर्थात् प्रत्येक मात्रा का दो बार पुनरावर्तन किया जाता है । इस गत में प्रत्येक मात्रा में छे मात्रा होने के कारण तिश्र

जाति निर्माण होती है और अंत में आठ अक्षर होने के कारण चतुश्र जाति दिखाई देती है, जो इस गत का सौन्दर्य है ।

(११) तिधारी गत : इस गत में बोल समुह को तिन बार दोहराया जाता है । यह तिनों बोल समुह अत्यंत जोर से बजाये जाते है ।

(१२) चौधारी गत : इस गत में प्रत्येक मात्रा में एक ही अक्षर को चार बार बजाया जाता है । इस में जोरदार एवं नाजुक बोलों का सुंदर समन्वय होता है । बाये का भी विशेष काम इस में दिखाई देता है ।

(१३) पंजधारी गत : इस प्रकार की गतों में एक बोल समुह को पाँच बार बजाया जाता है, बाद में सम आता है । उसे पंजधारी गत कहते है ।

(१४) गेंद उछाल गत : जैसे गेंद उछालने की गति का अनुकरण करके जिस प्रकार गेंद उछलता है उस क्रिया के संबंधित बोलों की रचना की जाती है । उसे गेंद उछाल गत कहते है । इस गत को उ. हाजी विलायत खाँ साहब बजाते थे । यह गत का विशिष्ट प्रकार है ।

(१५) काव्य के छंद पर आधारित गत : जो गत हिन्दी काव्य अथवा फारसी काव्यवृत्त पर आधारित होती है उसे 'फारसी बहर' गत कहा जाता है । उ. अमीर हुसैन खाँ साहब ने इस गत की रचना की है ।

(१६) तिलई मंजेदार गत : इस गत में मुख्यतः लय के तिन दर्जे किये जाते है । जैसे एकगुन, देढगुन और दुगुन । अगर पहला दर्जा कम लय का हो तो तिन से अधिक भी दर्जे लय के हो सकते है । इस प्रकार की गत की रचना पारंपारिक है ।

३:२:४ दिल्ली घराने की गते

३:२:४:१ रचना : गत

ताल : तीनताल मुल रचनाकार : उ. नाथू खाँ साहब

प्राप्त : डॉ. कुमार ऋषितोष (तबले का उद्‌गम एवं दिल्ली घराना)

जाति : चतुश्र लय : मध्य

धागेतिट x	धिडाऽन	धिनगिन	धागेतिरकिट	।
धिनागिन 2	तिटकिट	घेनकता	तिटधिन	।
तकिटधा o	तिरकिटधिन	घिडनग	धागेतिट	।
घिडाऽन 3	धिनगिन	धागेतिरकिट	तिनाकिना	।
ताकेतिट x	किडाऽन	तिनकिन	ताकेतिरकिट	।
तिनाकिन 2	तिटकिट	केनकता	तिटकिन	।
तकिटधा o	तिरकिटधिन	घिडनग	धागेतिट	।
घिडाऽन 3	धिनगिन	धागेतिरकिट	धिनागिन	।

धा
x

३:२:४:२ रचना : गत

ताल : तीनताल मुल रचनाकार : उ. इनामअली खाँ

प्राप्त : श्री प्रविण करकरे पृ. १७३

जाति : चतुश्र लय : मध्य

धागेतक (x)	धागेतक	तकधिन	नगतक	।
धिननग (2)	धिनगिन	धागेतिरकिट	धिनागिना	।
तागेतिट (o)	धागेतिट	धिनाऽत	धागेतिरकिट	।
धिनधागे (3)	तिरकिटधिन	धागेतिरकिट	तिनाकिना	।
ताकेतक (x)	ताकेतक	तकतिन	नकतक	।
तिनतक (2)	तिनकिन	ताकेतिरकिट	तिनाकिना	।
तागेतिट (o)	धागेतिट	धिनाऽत	धागेतिरकिट	।
धिनधागे (3)	तिरकिटधिन	धागेतिरकिट	धिनागिना	।

धा
x

३:२:४:३ रचना : गत

ताल : तीनताल मुल रचनाकार :

प्राप्त : डॉ. कुमार ऋषितोष (तबले का उद्‌गम एवं दिल्ली घराना)

जाति : चतुश्र लय : मध्य

धा x	ऽ	धाती	गेना	।	धा 2	ऽ	ऽ	धाती	।
धागे o	नधा	तीधा	गेन	।	धाती 3	धागे	धिना	गिना	।
ती x	ती	ती	किटतक	।	ना 2	ना	ना	किटतक	।
तिरकिट o	तकताऽ	तिरकिट	धाती	।	धागे 3	नाधा	तीधा	गेन	।
ता x	ऽ	ताती	केना	।	ता 2	ऽ	ऽ	ताती	।
तकि o	नता	तीत	किना	।	ताती 3	ताके	तिना	किना	।
ती x	ती	ती	किटतक	।	ना 2	ना	ना	किटतक	।
तिरकिट o	तकताऽ	तिरकिट	धाती	।	धागे 3	नधा	तीधा	गेना	।
धा									

३:२:४:४ रचना : लडी अंग की गत

ताल : तीनताल मुल रचनाकार : उ. इमान खाँ साहब

प्राप्त : डॉ. कुमार ऋषितोष (तबले का उद्‌गम एवं दिल्ली घराना)

जाति : चतुश्र लय : मध्य

धाऽक्रधा	तिटधिन	धिनाक्रधा	तिटधिन	।
x				
धातिटधा	क्रधातिट	गिनाधागे	धिनागिन	।
2				
किनातिट	तातिटति	टतागेन	तिनाक्रधा	।
o				
धाऽक्रधा	धातिटति	टधागेन	धिनाक्रधा	।
3				
धा				
x				

३:२:४:३ रचना : गत

ताल : तीनताल मुल रचनाकार : उ. सिताब खाँ साहब

प्राप्त : डॉ. कुमार ऋषितोष (तबले का उद्‌गम एवं दिल्ली घराना)

जाति : चतुश्र लय : मध्य

धाऽघेघे	नगधिन	धाऽधिन	धिनघेघे	।
x				
नगधिन	गिनाधागे	तिरकिटधिना	गिनागिना	।
2				
धाऽऽऽ	गिनाधाऽ	धाऽगिना	धाऽऽऽ	।
o				
गिनाधागे	तिरकिटधिन	धागेतिरकिट	तिनाकिना	।
3				
ताऽकेके	नकतिन	ताऽतिन	तिनकेके	।
x				
नकतिन	किनाताके	तिरकिटतिना	किनागिना	।
2				
धाऽऽऽ	गिनाधाऽ	धाऽगिना	धाऽऽऽ	।
o				
गिनाधागे	तिरकिटधिन	धागेतिरकिट	धिनागिना	।
3				

३:२:४:६ रचना : गत

ताल : तीनताल मुल रचनाकार : उ. सिताब खाँ साहब

प्राप्त : डॉ. कुमार ऋषितोष (तबले का उद्‌गम एवं दिल्ली घराना)

जाति : चतुश्र लय : मध्य

धागे x	नऽतिंत्त	ऽधा	गेना	।
धाऽ 2	धागेघेघे	नगधिन	धिनागिना	।
धागे o	नाधा	धिना	गिना	।
ताके 3	नाता	तिना	किना	।
धागेतिट x	धागेतिट	धागेधिन	तागेतिट	।
धागिनधा 2	तिरकिटधिन	धागेतिरकिट	धिनागिना	।
ताऽ o	तिट	ऽघे	ऽऽ	।
नग 3	ऽऽधिड़	नगधिन	धिनागिना	।

धा
x

३:२:४:७ रचना : गत

ताल : तीनताल मुल रचनाकार : उ. इमान अली साहब

प्राप्त : डॉ. कुमार ऋषितोष (तबले का उद्‌गम एवं दिल्ली घराना)

जाति : चतुश्र लय : मध्य

घेघे x	नाऽतित्त	ऽघे	घेना	।
धाऽ 2	धागेघेघे	नगधिन	धिनागिना	।
घेघे o	नाधा	धिना	गिना	।
केके 3	नाता	तिंना	किना	।
घेघेतिट x	घेघेतिट	घेघेधिन	धिनागिना	।
तागेतिट 2	घेघेतिट	घेघेधिन	धिनागिना	।
घेऽ o	तिट	ऽघे	घेऽ	।
नग 3	ऽऽघेघे	नगधिन	धिनागिना	।
धा x				

३:२:४:८   रचना : गत

ताल : तीनताल   मुल रचनाकार : उ. फैय्याज खाँ साहब

प्राप्त : डॉ. कुमार ऋषितोष (तबले का उद्‌गम एवं दिल्ली घराना)

जाति : चतुश्र   लय : मध्य

धा-घेना x	ऽनतिट	घेनाऽत	घेघेतिट	।
घेघेनागे 2	धिनधागे	त्रकधिन	धिनागिना	।
घेघेधिन o	गिनधागे	धिनगिन	धागेतिट	।
धाऽघेघे 3	नागेधिन	धागेत्रक	तिनाकिना	।
त-केना x	ऽनतिट	केनाऽत	केकेतिट	।
केकेनाके 2	तिनताके	त्रकतिन	तिनाकिना	।
घेघेधिन o	गिनधागे	धिनगिन	धागेतिट	।
धाऽघेघे 3	नागेधिन	धागेत्रक	धिनागिना	।

धा
x

३:२:४:९ रचना : गत

ताल : तीनताल मुल रचनाकार : उ. गामे खाँ साहब

प्राप्त : श्री नंदकिशोर दाते

जाति : चतुश्र लय : मध्य

धातीधाऽ x	धातीगिन	तिंनाकिना	धातीधाऽ	।
कऽघेतधि 2	किटगिन	धातीगीन	तिंनाकिटतक	।
ताऽकिटतक o	ताऽकिटतक	ताऽतिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक	।
तिरकिटतकता 3	तिरकिटधाती	धागेनधा	तीधागेन	।

३:२:४:१० रचना : गत

ताल : एकताल/तीनताल मुल रचनाकार : उ. गामे खाँ साहब

प्राप्त : श्री नंदकिशोर दाते

जाति : चतुश्र लय : मध्य

धातीधाऽ x	ऽऽगिन	धातिगिन	धातीगिन	।
धाऽऽऽ 2	ऽऽऽऽ	कऽघेतधि	किटगिन	।
धातीगिन o	तिनाकिटतक	ताऽऽऽ	ऽऽकिटतक	।
ताऽऽऽ 3	ऽऽकिटतक	ताऽकिटतक	ताऽकिटतक	।
ताऽतिरकिटतक x	ताऽतिरकिटत	तिरकिटतकता	तिरकिटधाती	।
तघेऽन 2	ऽधातीनघे	ऽनधाती	तघेऽन	।

३:२:५ फरुखाबाद घराने की गत

३:२:५:१ रचना : दुमुही गत (पारंपरीक)

ताल : तीनताल लय : मध्य

प्राप्त : पं. पुष्करराज श्रीधर जाति : तिश्र

x	धाऽघिडनग	धिनधागेत्रक	धिनघिडनग	धिनधिनागिना	।
2	घिडनगघिड	नगधागेत्रक	धिनघिडनग	धिनधिनागिना	।
o	धगततकिट	धाऽऽऽऽऽ	घिडनगधिन	घिडनगधिन	।
3	धाऽघिडनग	धिनधागेत्रक	धिनघिडनग	धिनधिनागिना	।

३:२:५:२ रचना : दुमुही गत (पारंपरीक)

ताल : तीनताल लय : मध्य

प्राप्त : डॉ. अजय अष्टपुत्रे जाति : तिश्र

x	धाऽघिडनग	धिंऽनाऽघिड	नगधिनधागे	त्रकधिनागिना	।
2	घिडनगधिंऽ	नाऽघिडनग	धिनगिनधागे	त्रकधिनागिना	।
o	धगततकिट	धाऽघिडनग	धिंऽऽऽऽऽ	घिडनगधिंऽ	।
3	धाऽघिडनग	धिंऽनाऽघिड	नगधिनधागे	त्रकधिनागिना	।

३:२:५:३ रचना : गत

ताल : तीनताल मुल रचना : उ. हाजी विलायत अली खाँ

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर जाति : तिश्र लय : मध्य

x	ताऽऽऽ	धाऽऽऽ	घिडनग	तक्ऽऽ	।
2	घिनग	तकधाऽ	घिडनग	तक्ऽऽ	।
o	घिडनग	तकधाऽ	ऽडधाऽ	घिडनग	।
3	तकधाऽ	ऽडधाऽ	घिडनग	धिंऽनाऽ	।
x	घिडनग	दिंऽऽक	दिंऽनाऽ	घिडनग	।
2	घिडनग	तक्ऽऽ	घिडनग	तकधाऽ	।
o	ऽडधाऽ	घिडनग	धिंऽनाऽ	घिडनग	।
3	तकधाऽ	ऽडधाऽ	घिडनग	धिंऽनाऽ	।
x	धा				

३:२:५:४ रचना : गत

ताल : तीनताल मुल रचना : मिया सलारी खाँ

प्राप्त : पं. पुष्करराज श्रीधर जाति : तिश्र लय : मध्य

x	ताऽऽऽ	धाऽऽऽ	घिडनग	तक्ऽऽ	।
2	धाऽऽऽ	घिडनग	तक्ऽऽ	घिडनग	।
o	तकधाऽ	घिडनग	तक्ऽऽ	घिडनग	।
3	धिरधिर	घिडनग	धिंऽनाऽ	घिडनग	।

तकिटधा	ऽडधाऽ	घिडनग	धिनतक	।
x				
धिरधिर	घिडनग	धिंऽनाऽ	घिडनग	।
2				
धाऽधिड	नगधिर	धिरधिर	घिडनग	।
o				
धिरधिर	घिडनग	तिंऽनाऽ	किडनक	।
3				
धा				
x				

३:२:५:५ रचना : गत

ताल : तीनताल मुल रचना : मिया सलारी खाँ

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर जाति : तिश्र लय : मध्य

ताऽऽऽ	धाऽऽऽ	घिडनग	तक्ऽऽ	।
x				
घिडनग	तकधाऽ	घिडनग	तक्ऽऽ	।
2				
घिडनग	तकधाऽ	ऽडधाऽ	घिडनग	।
o				
तकधाऽ	ऽडधाऽ	दिंऽऽग	दिंऽनाऽ	।
3				
किटतक	तिंऽऽग	तिंऽनाऽ	किटतक	।
x				
तिरकिट	तकताऽ	कऽऽतिं	किडनक	।
2				
घिडनग	तकधाऽ	ऽडधाऽ	घिडनग	।
o				
तकधाऽ	ऽडधाऽ	दिंऽऽग	दिंऽनाऽ	।
3				
धा				
x				

३:२:५:६ रचना : गत (पारंपरीक)

ताल : तीनताल लय : मध्य

प्राप्त : डॉ. केदार मुकादम जाति : चतुश्र

घिडनग x	धिनगिन	धागेत्रक	धिनागिना	।
धागेनधा 2	त्रकधिन	धागेत्रक	धिनागिना	।
तकधिंऽ o	ऽऽतक	धिंऽऽऽ	तकऽऽ	।
घिडनग 3	धिनगिन	धागेत्रक	धिनागिना	।
कत्ऽऽ x	धिऽनऽ	धिऽनऽ	धिऽनऽ	।
ताऽकेऽ 2	त्रऽकऽ	तिंऽनाऽ	कऽताऽ	।
घिडनग o	धिनगिन	धागेत्रक	धिनागिना	।
धागेनधा 3	त्रकधिन	धागेत्रक	धिनागिना	।

धा
x

३:२:५:७ रचना : गत (पारंपरीक)

ताल : तीनताल मुल रचना : उ. हाजी विलायत अली खाँ

प्राप्त : पं. पुष्करराज श्रीधर जाति : चतुश्र लय : मध्य

कताऽघे x	नाऽऽऽतिरकिट	ताऽऽऽघेऽतिर	किटतकताऽऽऽ	।
धिरधिरकिटधाऽ 2	डधाऽऽधिरधिर	किटधाऽडधाऽऽ	तिऽक्डतिंऽनाऽ	।
तिऽक्डतिंऽनाऽ o	किडनकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	ताऽतिरकिटतक	।
धिरधिरकिटधाऽ 3	डधाऽऽधिरधिर	किटधाऽडधाऽऽ	तिऽक्डतिंऽनाऽ	।

धा
x

जोडा :

कताऽघे	नाऽऽऽधिरधिर	कत्ऽऽ	धिरधिरकिटतक	।
x				
धिरधिरकत्ऽऽ	धिरधिरकिटधाऽ	ङधाऽऽधिरधिर	किटधाऽङधाऽऽ	।
2				
तिऽक्डतिंऽनाऽ	किटतकतिरकिट	तकताऽतिरकिट	ताऽतिरकिटतक	।
o				
धिरधिरकिटधाऽ	ङधाऽऽधिरधिर	किटधाऽङधाऽऽ	तिऽक्डतिंऽनाऽ	।
3				

३:२:५:८ रचना : गत

ताल : तीनताल मुल रचना : मिया सलारी खाँ

प्राप्त : पं.पुष्करराज श्रीधर जाति : तिश्र लय : धृत

तिरकिटतकताऽ	केनाधिट	धिटक्डधा	गेनाधागे	।
x				
तिटक्डधा	गेनाधागे	दिंऽगनड़ा	ऽनताके	।
2				
धिरधिरकिटधाऽ	गेनाधागे	धिरधिरकिटतक	तिरतिरकिटतक	।
o				
धिरधिरकिटतक	तिरतिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	तिरतिरकिटतक	।
3				

धा
x

३:२:५:९ रचना : मियाँ सलारी खाँ की समेट

ताल : तीनताल | मुल रचना : मियाँ सलारी खाँ

प्राप्त : पं. पुष्करराज श्रीधर | जाति : तिश्र लय : मध्य

धिनधि x	नधिन	धागेन	धागेन	।
धागेन 2	ताकेन	तिरकिटतक	ताकेन	।
धागेति o	टतिट	ताकेति	टतिट	।
क्डधाति 3	टतिट	गदिंऽ	नाऽऽ	।
धाऽघिडनग x	तिरकिटतक	तिरकिटतक	धाऽघिडनग	।
तिरकिटतक 2	तिरकिटतक	तिरकिटतक	धिरधिरकिट	।
धाऽतिं o	नाऽकिडनक	तिरकिटतक	धिरधिरकिट	।
धाऽतिं 3	नाऽकिडनक	तिरकिटतक	धिरधिरकिट	।

धा
x

३:२:५:१० रचना : गत (पारंपरिक)

ताल : तीनताल | लय : मध्य

प्राप्त : पं. पुष्करराज श्रीधर | जाति : चतुश्र

धिऽऽक्डधिऽ x	ताऽघिडनग	तिरकिटतक	धिरकिटतक	।
घेनकतकिट 2	तकधिंऽताऽ	गदिगनधागे	त्रकतिनाकता	।
तकतिऽतक o	ताऽकिडनग	त्रकतिनाकिना	ताकेतिरकिट	।
घेनकतकिट 3	तकधिंऽताऽ	गदिगनधागे	त्रकतिनाकता	।

धा
x

३:२:५:११ रचना : मोड-मोहार की गत (पारंपरीक)

ताल : तीनताल लय : मध्य

प्राप्त : पं. पुष्करराज श्रीधर जाति : चतुश्र

धाऽगेन x	धाऽधाऽ	धिंऽताऽ	तिटगिन	।
धाऽधाऽ 2	धिंऽताऽ	कतगेन	तिनाकिना	।
धाऽधाऽ o	धिंऽताऽ	गेनतिना	किनाताऽ	।
धाऽधिंना 3	किटतकधिरधिर	किटतकधाऽतिर	किटतकतिरकिट	।
धा x				

३:२:५:१२ रचना : गत

ताल : तीनताल मुल रचना : उ. हाजी विलायत अली खाँ

प्राप्त : डॉ. केदार मुकादम जाति : चतुश्र लय : मध्य

धिनघिडनग x	तिटघिड़ाऽन	धिनघिडनग	तिटघिड़ाऽन	।
तिटघिड़ाऽन 2	धाऽघिडनग	धिरधिरघिड	नगधिनतक	।
तिटघिड़ाऽन o	धाऽधिडनग	धिरधिरधिड	नगधिनतक	।
तिटधिडाऽन 3	धाऽधाऽधाऽ			

त्रकघेत्ऽऽऽऽ धिरधिरकिटतकधाऽतिरकिटतक

त्रकघेत्ऽऽऽऽ धिरधिरकिटतकधाऽतिरकिटतक

त्रकघेत्ऽऽऽऽ धिरधिरकिटतकधाऽतिरकिटतक

धा

३:२:५:१३ रचना : बढैया कि गत (पारंपरीक)
ताल : तीनताल लय : मध्य
प्राप्त : पं. पुष्करराज श्रीधर जाति : तिश्र

किट (१६वी मात्रा)

ताऽताऽकिट x	तिऽकड़ाऽन	दिऽकऽत्ता	घेघेत्ताऽन	।
धाऽऽघेघेत् 2	ताऽनधाऽऽ	घेघेत्ताऽन	धाऽऽऽऽऽ	।
ताऽनधाऽऽ o	तकिटधाऽऽ	तिऽकड़ाऽन	ताऽनताऽक्ड	।
धाऽनधाऽन 3	धाऽक्डताऽन	ताऽनताऽक्ड	धाऽनधाऽन	।

धा
x
(नोट : यह रचना १६वी मात्रा से प्रारंभ होगी)

३:२:५:१३ रचना : दो धारी गत
ताल : तीनताल लय : मध्य
प्राप्त : पं. पुष्करराज श्रीधर जाति : तिश्र

धिनघिड़ाऽन x	धिनघिड़ाऽन	धागेनागेधिन	धागेनागेधिन	।
धात्रकधितिट 2	धात्रकधितिट	गेनकतिंऽन	गेनकतिंऽन	।
न्नककिटतक o	न्नककिटतक	धड़ऽनकिटतक	धड़ऽनकिटतक	।
धाऽधाऽगिन 3	धाऽधाऽगिन			

तिरकिटतकधिरधिरकिटतक तिरकिटतकधिरधिरकिटतक ।

धा
x

३:२:५:१५ रचना : मोड मुहार की गत

ताल : तीनताल लय : मध्य

प्राप्त : पं. पुष्करराज श्रीधर जाति : तिश्र

धाऽगिन	धाऽधाऽ	धिंऽनाऽ	तिटगिन	।
x				
धाऽधाऽ	धिंऽताऽ	कतगिन	तिनाकिना	।
2				
धाऽधाऽ	धिंऽताऽ	गेनतिना	किनाधाऽ	।
o				
ताऽधिंना	किटतकधिरधिर	किटतकधातिर	किटतकतिरकिट	।
3				
धा				
x				

३:२:५:१६ रचना : दो धारी गत (लाहोरी गत)

ताल : तीनताल लय : मध्य

प्राप्त : पं. पुष्करराज श्रीधर जाति : तिश्र और चतुश्र

धिरधिरकिटतक	तकिऽटधाऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	तकिऽटधाऽऽऽ	।
x				
धाऽधिंऽनाऽ	धाऽधिंऽनाऽ	कऽत्	कऽत्	।
2				
दिंऽन	दिंऽन	गेनतराऽन	गेनतराऽन	।
o				
तागेनाता	गेनागेन(धिन)	गेन(धिन)धाधा	तकिटतकिट	।
3				
धा				
x				

३:२:५:१७ रचना : मियाँ सलारी खाँ कि समेट

ताल : तीनताल मुल रचना : मियाँ सलारी खाँ

प्राप्त : डॉ. केदार मुकादम जाति : चतुश्र लय : मध्य

तिटगिना x	धात्रकधि	तिटधिन	कत्ऽऽ	।
कत्धिना 2	धात्रकधि	तिटधिना	तित्ऽऽ	।
घेडनत् o	धाऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	तिरतिरकिटतक	।
धिरधिरकिटतक 3	तिरतिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	तिरतिरकिटतक	।
धा x				

३:२:५:१८ रचना : मियाँ सलारी खाँ कि समेट

ताल : तीनताल मुल रचना : मियाँ सलारी खाँ

प्राप्त : डॉ. केदार मुकादम जाति : चतुश्र लय : मध्य

धिटतिट x	क्डघेतिट	धागेदिंऽ	नगनग	।
तिटकता 2	गदिगन	कताकता	कत्ऽऽधिरधिर	।
किटतकतकिऽट o	धाऽकता	कताकत्	धिरधिरकिटतक	।
तकिऽटधाऽऽऽ 3	कताकता	कत्ऽऽधिरधिर	किटतकतकिऽट	।
धा x				

३:२:५:१९ रचना : अनागत

ताल : तीनताल — मुल रचना : उ. हाजी विलायत अली खाँ

प्राप्त : श्री नंदकिशोर दाते — जाति : तिश्र और चतुश्र — लय : मध्य

x	तिटकताऽन	धिनघिडनग	धिनगिनधागे	त्रकधिनागिना	।
2	धिनाऽत्‌घिड	नगदिनतक	तिटकताकिड	नकदिंऽऽऽऽ	।
o	तिरकिटताऽतिर	किटतकतिरकिट	ताऽतिरकिटतक	ताऽऽऽऽऽऽऽ	।
3	धिरधिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	धाऽऽऽऽऽऽऽ	।
x	क्ड़ाऽननाऽनऽ	धाऽतिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक	तकिऽटधाऽऽऽ	।
2	ऽऽऽऽधिंऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	तकिऽटधाऽऽऽ	।
o	ऽऽऽऽधिंऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	तकिऽटधाऽऽऽ	।
3	ऽऽऽऽधिंऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	तकिऽटधाऽऽऽ	।

धा
x

३:२:५:२० रचना : मंजेदार गत

ताल : तीनताल — लय : मध्य

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर — जाति : तिश्र और चतुश्र

x	धगत्‌त	किटधागे	तिटघिड़ा	ऽनकत्‌	।
2	धात्रकधितिट	कत्रकधिकिट	गदिंऽन	कत्‌ऽऽ	।
o	क्डधिंऽनाऽन	धाऽघेत्‌ताऽ	कत्रकधिकिट	तिटघिड़ाऽन	।
3	ध्ड़ाऽनऽऽऽ	किटतकधाऽघिड	नगधिनघिडनग	घेत्‌ताघिडनग	।

धा
x

३:२:५:२१ रचना : मयुर गत

ताल : तीनताल मुल रचना : उ. नजर अली खाँ

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर (ट्रेजर ऑफ फरुखाबाद घराना)

जाति : तिश्र और चतुश्र लय : मध्य

कतिट	कताऽ	ऽनऽ	धादिंता	।
x				
कऽत्	धाऽऽ	ऽति	ऽट	।
2				
ऽधि	ऽट	ऽऽधाऽ	किटतकदिंकिटतक	।
o				
धाऽऽऽ	त्रकधेत्	तगेऽन	धाऽऽति	।
3				
टक	ताधि	टधा	किटतकदिंकिटतक	।
x				
धाऽति	ऽटऽ	कऽता	ऽधिऽ	।
2				
टऽधा	किटतकदिंकिटतक	धाऽऽऽ	तिट	।
o				
कता	धिट	ऽऽऽऽधाऽऽऽ	किटतकदिंकिटतक	।
3				
धा				
x				

३:२:५:२२ रचना : दो मुखी गत

ताल : तीनताल मुल रचना : उ. हाजी विलायत अली खाँ

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर जाति : तिश्र लय : मध्य

घड़ऽनकिट	धाऽघिडनग	दिंगनगऽऽऽधिरधिर	किटतकतकिऽटधाऽऽऽ	।
x				
घड़ऽनकिट	धाऽघिडनग	दिनदिनागिना	ताऽऽऽऽऽऽऽ	।
2				
तकतिऽतक	ताऽकिडनक	तिनकिनताके	त्रकत्नाकत्ता	।
o				
घड़ऽनकिट	धाऽघिडनग	दिंगनगऽऽऽधिरधिर	किटतकतकिऽटधाऽऽऽ	।
3				

३:२:५:२३ रचना : प्रपात गत

ताल : तीनताल लय : धृत

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर (ट्रेजर ऑफ फरुखाबाद घराना)

जाति : तिश्र और चतुश्र

धिनघिड़ा x	ऽनधिन	घिड़ाऽन	नगतक	।
धिनगिन 2	धाऽऽऽ	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	।
तकत o	कतक	तकघि	डनग	।
तकघि 3	डनग	तिरकिटतकधिर	धिरधिरकत्तऽऽ	।
घगत्तत x	किटधागे	त्रकधिन	घिडनग	।
धिनघिड 2	नगधिन	धागेत्रक	धिनागिन	।
धिरधिरकिटतक o	तकिऽटधाऽऽऽ	ऽऽऽदिं	ऽऽऽघे	।
ऽऽनत 3	धाऽऽऽ	धिरकत्ऽऽधिर	धिरधिरकिटतक	।
धाऽतिरकिटतक x	धाक्ड़ाऽन	धिरधिरकिटतक	तकिऽटधाऽऽऽ	।
दिंऽघेऽ 2	ऽनतऽ	धाऽऽऽ	धिरकत्ऽऽधिर	।
धिरधिरकिटतक o	धाऽतिरकिटतक	धाक्ड़ाऽन	धिरधिरकिटतक	।
तकिऽटधाऽऽऽ 3	दिंऽघेऽ	ऽनतऽ	धाऽऽऽ	।
धिरकत्ऽऽधिर x	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	धाक्ड़ाऽन	।
धिरधिरकिटतक 2	तकिऽटधाऽऽऽ	दिंऽघेऽ	ऽनतऽ	।

धा
x

३:२:५:२४ रचना : गेंद उछाल गत

ताल : तीनताल मुल रचना : उ. हाजी विलायत अली खाँ

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर (ट्रेजर ऑफ फरुखाबाद घराना)

जाति : तिश्र और चतुश्र लय : मध्य

घगत्तकिट x	धात्रकधितिट	तित्ऽऽधिरधिर	किटतकतकिऽट	।
दिंऽ 2	कतति	ऽति	ऽति	।
ऽना o	ऽना	ऽऽनागे	तिरकिट	।
गऽदिंऽ 3	गऽनऽ	धागे	तिट	।
धिना x	ऽऽकत्	गदिंऽऽ	ऽऽगन	।
धागेन 2	धात्रक	धिंनाग	दिगन	।
तकक्ड़ाऽन o	दिंऽनदिंऽन	नगननगन	नागेतिरकिट	।
घगततकिट 3	धाऽतिरकिटतक	तक्ऽऽधिरधिर	किटतकतकिऽट	।

धा

३:२:५:२५ रचना : गेंद उछाल गत

ताल : तीनताल मुल रचना : उ. अमीर हुसेन खाँ

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर (ट्रेजर ऑफ फरुखाबाद घराना)

जाति : तिश्र लय : मध्य

धाऽकिटतक x	तकधिंऽऽऽ	ऽऽऽऽतक	तकधिंऽऽऽ	।
तकतकतक 2	तिरकिटतक	तिरकिटतक	तकधिंऽऽऽ	।
तकतकतिंऽ o	ऽऽतकतक	तिंऽऽऽतिर	तिरकिटतक	।
धिरधिरकिट 3	तकधिंऽऽऽ	तकधिंऽऽऽ	तकधिंऽऽऽ	।

धा
x

३:२:५:२५ रचना : फर्द गत

ताल : तीनताल मुल रचना : उ. चुडीयावाले इमाम बक्ष

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर (ट्रेजर ऑफ फरुखाबाद घराना)

जाति : चतुश्र लय : मध्य

x	धाऽघिडनग	धिनघिडनग	तिरकिटतक	तकधिंऽऽऽ	।
2	तकतकधिन	गिननागेतिट	घिड़ाऽनतक	तकतिंऽऽऽ	।
o	तकतिंऽऽऽ	ताऽकिडनक	तिरकिटतक	तकधिंऽऽऽ	।
3	ऽऽऽऽतक	तकधिनगिन	धिनघिडनग	तकधिंऽऽऽ	।
x	ऽऽऽऽतक	तकधिनगिन	धिनघिडनग	तकधिंऽऽऽ	।
2	ऽऽऽऽतक	तकधिनगिन	धिनघिडनग	तकधिंऽऽऽ	।
x	धा				

३:२:५:२७ रचना : फर्द गत

ताल : तीनताल मुल रचना : उ. चुडीयावाले इमाम बक्ष

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर (ट्रेजर ऑफ फरुखाबाद घराना)

जाति : चतुश्र लय : मध्य

x	धिरधिरकत्ऽऽ	धिरधिरकत्ऽऽ	घिटघिट	धागेतिट	।
2	क्डघेत्धि	किटकत्	धाऽऽऽकिडनक	तकिटत	।
o	कघेत्धा	ऽनघेत्	तगऽन	धाऽऽऽ	।
3	क्डघेन	ऽऽक्ड	घेनऽधा	दिंताकत	।
x	किटतक	घेत्ताऽ	धाऽऽऽकिटतक	ताऽघेत्	।
2	तगऽन	धाऽतीऽ	दिंऽनाना	किटतकदिंऽकिटतक	।
x	धा				

३:२:५:२८ रचना : असम गत (अनागत)

ताल : तीनताल मुल रचना : उ. अमीर हुसेन खाँ

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर (ट्रेजर ऑफ फरुखाबाद घराना)

जाति : चतुश्र लय : मध्य

धिनघिड़ा x	ऽनधिन	धाऽक्डधा	ऽनधाऽ	।
कततिट 2	तिटधागे	तिटघिड़ा	ऽनदिंऽ	।
घ्ड़ाऽऽनघिडनग o	नाऽतिरकिटतक	तिरकिटतकधिर	धिरधिरकत्ऽऽ	।
ऽऽऽऽऽऽऽधिर 3	धिरधिरकत्ऽऽ	ऽऽऽऽऽऽऽधिर	धिरधिरकत्ऽऽ	।

धा
x

३:२:५:२९ रचना : गत (पारंपरीक)

ताल : तीनताल जाति : चतुश्र लय : मध्य

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर (ट्रेजर ऑफ फरुखाबाद घराना)

घेऽतग x	धिननग	तिटकता	किडनक	।
तिटकता 2	किटधागे	तिटघिड़ा	ऽनघेत्	।
धिटऽत o	किटधागे	त्रकधिन	घिडनग	।
तकिटधा 3	त्रकधिंऽ	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	।

धा
x

३:२:५:३० रचना : असम गत (अनागत)

ताल : तीनताल मुल रचना : उ.चुडीयावाले इमामबक्ष

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर (ट्रेजर ऑफ फरुखाबाद घराना)

जाति : चतुश्र लय : मध्य

घ्ड़ाऽन x	नाऽतीऽ	कत्ऽऽ	ऽऽऽऽ	।
तिरकिट 2	तकताऽ	थुंऽऽऽ	ऽऽऽऽ	।
ताऽऽऽ o	ताऽतिर	किटतक	ताऽऽऽ	।
धिरधिर 3	धिरधिर	धिरधिर	कत्ऽऽ	।

३:२:५:३१ रचना : असम गत (अनागत)

ताल : तीनताल　　　　　　मुल रचना : मियाँ बक्षु खाँ

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर (ट्रेजर ऑफ फरुखाबाद घराना)

जाति : चतुश्र　　　　　　लय : धृत

दिंऽनदिं	ऽनतक्	तकिटत	किटतक	।
x				
धात्रकधि	तिटकता	गदिंऽना	घिडनगतिरकिट	।
2				
धातीकत्	तिटधाऽ	त्रकघेत्	तऽगेन	।
o				
ताऽगेगे	नानाकत्	ऽऽऽधिं	धिंनाऽऽ	।
3				
ऽऽऽधिं	धिंनाऽऽ	ऽऽऽऽधिं	धिंनाऽऽऽ	।
x				
धातिं	तिंता	त्रकधिं	धिंता	।
2				
धा				
x				

३:२:५:३२ रचना : असम गत (अनागत)

ताल : तीनताल　　　　　　मुल रचना : उ. अमीर हुसेन खाँ

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर (ट्रेजर ऑफ फरुखाबाद घराना)

जाति : चतुश्र　　　　　　लय : धृत

दिंऽनदिं	ऽनतक्	तकिटत	किटतक्	।
x				
धात्रकधि	तिटकता	गदिंऽना	घिडनगतिरकिट	।
2				
धातीकत्	तिटधाऽ	त्रकघेत्	तऽगेन	।
o				
ताऽगेगे	नानाकत्त	ऽऽकत्	ऽऽकत्	।
3				
धा				
x				

३:२:५:३३ रचना : तिधारी गत

ताल : तीनताल

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर (ट्रेजर ऑफ फरुखाबाद घराना)

जाति : तिश्र लय : मध्य

धिनघिडनग x	धिनघिडनग	
धिनघिडनग	तकतकतक	।
तकधिनतक 2	धिनतकधिन	
धिरधिरकत्ऽऽधिरधिर	कत्ऽऽधिरधिरकत्ऽऽ	।
धिरधिरधिर 0	तिरतिरतिर	
धिरधिरकिटतकधाऽतिर	किटतकताऽतिरकिटतक	।
धिरधिरकिटतकधाऽतिर 3	किटतकताऽतिरकिटतक	
धिरधिरकिटतकधाऽतिर	किटतकताऽतिरकिटतक	।

धा
x

३:२:५:३३ रचना : दर्जेदार गत

ताल : तीनताल मुल रचना :उ. हाजी विलायत अली खाँ

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर (ट्रेजर ऑफ फरुखाबाद घराना)

जाति : तिश्र और चतुश्र लय : धृत

धगत् x	तकिट	तकधि	नतक	।
दिंगन 2	नगन	नागेति	रकिट	।
धिनगि o	नतक	तकधि	नतक	।
दिंगन 3	नगन	नागेति	रकिट	।

तकत	तकिट	तकति	नतक	।	x
तिंकन	नकन	नागेति	रकिट	।	2
धिनगि	नतक	तकधि	नतक	।	o
दिंगन	नगन	नागेति	रकिट	।	3
धगत्त	किटतक	धिनतक	दिंगनन	।	x
गननागे	तिरकिट	धिनगिन	तकतक	।	2
धिनतक	दिंगनन	गननागे	तिरकिट	।	o
तकतत	किटतक	तिनतक	तिंकनन	।	3
कननागे	तिरकिट	धिनगिन	तकतक	।	x
धिनतक	दिंगनन	गननागे	तिरकिट	।	2
धगत्तकिट	तकधिनतक	दिंगननगन	नागेतिरकिट	।	o
धिनगिनतक	तकधिनतक	दिंगननगन	नागेतिरकिट	।	3
तकततकिट	तकतिनतक	तिंकननकन	नागेतिरकिट	।	x
धिनगिनतक	तकधिनतक	दिंगननगन	नागेतिरकिट	।	2

धा
x

३:२:५:३५ रचना : दर्जेदार गत

ताल : तीनताल मुल रचना : मियाँ सलारी खाँ

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर (ट्रेजर ऑफ फरुखाबाद घराना)

जाति : तिश्र और चतुश्र लय : धृत

धगत् (x)	तकिट	तकधि	नतक	|	दिंगन (2)	नगन	घिडन	गतक	|
तकधि (o)	नतक	धगत्	तकिट	|	तकधि (3)	नतग	तिंगन	नगन	|
तकत् (x)	तकिट	तकति	नतक	|	तिकन (2)	नकन	घिडन	गतक	|
तकधि (o)	नतक	धगत्	तकिट	|	तकधि (3)	नतग	दिंगन	नगन	|

धगत्त (x)	किटतक	धिनतक	दिंगनन	|	गनघिड (2)	नगतक	तकधिन	तकधग	|
त्तकिट (o)	तकधिन	तगतिंग	ननगन	|	तकत्त (3)	किटतक	तिनतक	तिकनन	|
कनघिड (x)	नगतक	तकधिन	तकधग	|	त्तकिट (2)	तकधिन	तगदिंग	ननगन	|

धगत्तकिट (o)	तकधिनतक	दिंगननगन	घिडनगतक	|
तकधिनतक (3)	धगत्तकिट	तकधिनतग	तिंगननगन	|
तकत्तकिट (x)	तकतिनतक	तिकननकन	घिडनगतक	|
तकधिनतक (2)	धगत्तकिट	तकधिनतग	दिंगननगन	|

धा (x)

३:२:५:३६ रचना : गत

ताल : तीनताल मुल रचना :उ. हाजी विलायत अली खाँ

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर (ट्रेजर ऑफ फरुखाबाद घराना)

जाति : चतुश्र लय : धृत

धगत्त	किटधाऽ	ऽऽघेत्	ताऽऽऽ	।	गऽदिंऽ	ऽऽधिर	धिरधिर	घिडनग	।
x					2				
तकिटधा	ऽडधाऽ	ऽऽघेत्	ताऽऽऽ	।	गऽदिंऽ	ऽऽधिर	धिरधिर	किटतक	।
o					3				
तकिटधा	ऽडतकि	टधाऽड	धाऽऽऽ	।	धिरधिर	ऽऽधिर	धिरधिर	घिडनग	।
x					2				
धिरधिर	ऽऽधिर	धिरधिर	घिडनग	।	धिरधिर	ऽऽधिर	धिरधिर	घिडनग	।
o					3				
धा									
x									

३:२:५:३७ रचना : गत

ताल : तीनताल मुल रचना :मियाँ सलारी खाँ

प्राप्त : पं. अरविंद मुलगाँवकर (ट्रेजर ऑफ फरुखाबाद घराना)

जाति : चतुश्र लय : धृत

गदिगन	नगघेत्	ऽऽताऽ	गदिगन	।	नगघेत्	ऽऽधिर	धिरधिर	किटतक	।
x					2				
तकिटधा	ऽडधाऽ	गदिगन	नगघेत्	।	ऽऽधिर	धिरधिर	घिडनग	धिनतक	।
o					3				
तकधिन	तकतक	धिनतक	धिनतक	।	धिरधिर	ऽऽधिर	धिरधिर	घिडनग	।
x					2				
धिरधिर	ऽऽधिर	धिरधिर	घिडनग	।	धिरधिर	ऽऽधिर	धिरधिर	घिडनग	।
o					3				
धा									
x									

३:२:६ फरुखाबाद घराने के गत कायदा

३:२:६:१ रचना : गत कायदा (पारंपरीक)

ताल : तीनताल लय : मध्य

प्राप्त : पं. सुरेश (भाई) गायतोंडे जाति : चतुश्र

धिरधिर	धिरधिर	घिडनग	धिननग	।	धाऽतिर	किटधाऽ	घिडनग	धिननग	।
x					2				
घिडनग	तकतिट	घिडनग	धिननग	।	धाऽतिर	किटधाऽ	घिडनग	तिननक	।
o					3				
तिरतिर	तिरतिर	किडनक	तिननक	।	ताऽतिर	किटताऽ	किडनक	तिननक	।
x					2				
घिडनग	तकतिट	घिडनग	धिननग	।	धाऽतिर	किटधाऽ	घिडनग	धिननग	।
o					3				

धा

३:२:६:२ रचना : गत कायदा (पारंपरीक)

ताल : तीनताल मुल रचना : उ. हाजी विलायत अली खाँ

प्राप्त : प्रोफे. डॉ. अजय अष्टपुत्रे जाति : चतुश्र लय : मध्य

तकिटधा	त्रकधिट	धिटकत	कधिनक	।
x				
धिननत	कगेनक	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	।
2				
तकिटता	त्रकतिट	तिटकत	कधिनक	।
o				
धिननत	कगेनक	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	।
3				

प्रा. सुधिरकुमार सक्सेनाजी - गत कायदा

तकिटधा	त्रकधिट	धिटकत	कधिनक	।
x				
धिननत	कगेनक	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	।
2				
कतिटता	केनाधिट	धिटकत	कधिनक	।
o				
धिननत	कगेनक	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	।
3				

(नोट : यह कायदा दोधारी गत नाम से भी जाना जाता है)

तकिटधा	त्रकतकि	टधात्रक	धिटधिट	।
x				
कतकघे	नगधिट	धिटकत	कघेनग	।
2				
धिननत	कघेनक	धिननत	कघेनक	।
o				
धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	।
3				

बढंत - गत कायदा

तकिटधा	त्रकधिट	धिटकत	कधिनक	।
x				
धिननत	कगेनक	धिरधिरकिटतक	धाऽतिरकिटतक	।
2				
नातकधि	नकधिन	धिननत	कधिनक	।
o				
तकिटधा	त्रकधिन	धाऽऽऽ	धिरधिरकत्ऽऽ	।
3				

३:२:६:३ रचना : गत कायदा (पारंपरीक)
ताल : तीनताल मुल रचना : उ. हाजी विलायत अली खाँ
प्राप्त : पं. सुरेश (भाई) गायतोंडे जाति : चतुश्र लय : मध्य

धिरधिर	धिरधिर	घिडनग	धिनतक	।	धाऽतिर	किटधाऽ	घिडनग	धिनतक	।
x					2				
घिडनग	तकतिट	घिडनग	धिनतक	।	धाऽतिर	किटधाऽ	घिडनग	तिननक	।
o					3				
तिरतिर	तिरतिर	किडनक	तिनतक	।	ताऽतिर	किटताऽ	किडनक	तिनतक	।
x					2				
घिडनग	तकतिट	घिडनग	धिनतक	।	धाऽतिर	किटधाऽ	घिडनग	धिनतक	।
o					3				

धा

३:२:६:४ रचना : गत कायदा (पारंपरीक)

ताल : तीनताल लय : मध्य

प्राप्त : पं. पुष्करराज श्रीधर जाति : चतुश्र

धाऽकिट	तकधिर	धिरकिट	तकधिर	।	धिरकिट	तकधिर	धिरकिट	धाऽत्तीऽ	।
x					2				
धाऽकिट	तकधिर	धिरकिट	धाऽत्तीऽ	।	धिऽनऽ	धाऽऽति	नऽतिऽ	नाऽनाऽ	।
o					3				
ताऽकिट	तकतिर	तिरकिट	तकतिर	।	तिरकिट	तकतिर	तिरकिट	ताऽत्तीऽ	।
x					2				
धाऽकिट	तकधिर	धिरकिट	धाऽत्तीऽ	।	धिऽनऽ	धाऽऽति	नऽतिऽ	नाऽनाऽ	।
o					3				

धा

३:२:६:५ रचना : गत कायदा (पारंपरीक)

ताल : तीनताल लय : मध्य

प्राप्त : पं. सुरेश (भाई) गायतोंडे जाति : चतुश्र

घिडनग	नाऽतिट	घिडनग	धिनतग	।	तिटघिड	नगतिट	घिडनग	धिनतग	।
x					2				
धाऽघिड	नगधाऽ	घिडनग	धिनतग	।	धिरधिर	धिरधिर	घिडनग	तिनतक	।
o					3				
किडनक	नाऽतिट	किडनक	तिनतक	।	तिटकिड	नगतिट	किडनक	तिनतक	।
x					2				
धाऽघिड	नगधाऽ	घिडनग	धिनगत	।	धिरधिर	धिरधिर	घिडनग	धिनतग	।
o					3				

धा

३:२:७ लड़ी

३:२:७:१ रचना : लड़ी (दिल्ली घराना)

ताल : तीनताल लय : मध्य

प्राप्त : श्री प्रवीण करकरे जाति : चतुश्र

घिडनगतिटधिड x	नगतिटघिडनग	नगतिटघिडनग	तिटघिडनगतिट	।
किडनकतिटकिड 2	नकतिटकिडनक	नगतिटघिडनग	तिटघिडनगतिट	।
घिडनगतिटधिड o	नगतिटघिडनग	नगतिटघिडनग	तिटघिडनगतिट	।
किडनकतिटकिड 3	नकतिटकिडनक	नगतिटघिडनग	तिटघिडनगतिट	

३:२:७:२ रचना : लड़ी (फरुखाबाद घराना)

ताल : तीनताल मुल रचना : उ. मियाँ शलारी खाँ

प्राप्त : श्री प्रवीण करकरे जाति : चतुश्र लय : मध्य

धाऽतिट x	घिडनग	धिनतक	धाऽतिट	।
घिडनग 2	धाऽतिट	घिडनग	धिनतक	।
ताऽतिट o	किडनक	तिनतक	ताऽतिट	।
घिडनग 3	धाऽतिट	घिडनग	धिनतक	।

३:२:८ दिल्ली और फरुखाबाद घराने की मध्य और दृत लय के बंदिशो की तुलना :

दोनों घरानों के स्वतंत्रवादन में बंदिशो का महत्वपूर्ण योगदान है । उसका मुलतः कारण उसकी लय है । दोनों घरानों के रचनाकार कोई भी रचना करते समय लय का विचार ध्यान में रखते है जो अत्यंत आवश्यक है । जिस से वह रचना सुलभता से की जाती है । प्रत्येक रचना की निश्चित लय होती है । उसी लय में अगर कलाकार स्वतंत्रवादन में प्रस्तुति करता है तो प्रभावशाली प्रस्तुतिकरण होता है ।

दिल्ली घराने की रचनाओं का आधार उसके लय पर होता है । पुराने बुर्जुगोने जो भी वादन की पध्धति निर्माण की है वह सचोट है और पारंपारिक है । शोधार्थी के अवलोकन अनुसार दिल्ली घराना में मध्य अथवा दृत लय से ज्यादा विलंबित लय को प्राधान्य दिया गया है । इस के लिए इस घराना के रचनाकार जिम्मेदार है । ''पं. सुधिर माईणकर जी से साक्षात्कार करते समय उन्होंने बताया की उनके गुरु उ. इनामअली खाँ साहब कहते थे कि पेशकार या कायदा बजाते समय उसका विस्तार करते समय उस रचना में उतने डुबे हुए होते थे कि मध्यलय या द्रुतलय या कोई अन्य बंदिश बजाने का विचार हि नहीं आता था । याने कितना भी कायदा के विस्तार हो परंतु वह अपूर्ण ही लगता था । और प्रतिदिन नया विस्तार सुझता था ।''[३३] अर्थात् दिल्ली घराने के कलाकार को उसके स्वतंत्र वादन की पूर्तता करने के लिए दुसरे घरानों का सहारा लेना अत्यंत आवश्यक होता है । दिल्ली घराने के बुजुर्ग कलाकार उ. नत्थु खाँ साहब, उ. इनामअली खाँ जैसे कोई भी कलाकार का वादन सुनते समय यह विधान स्पष्ट रूप से सही लगता है ।

शोधार्थी ने फरुखाबाद घराने की वादन पद्धति का अभ्यास किया तब ज्ञात हुआ कि इस घराने की महत्तम रचनाएँ मध्यलय पर आधारित है । इसका श्रेय इस घराने के रचनाकार को जाता है । इस घराने में गत, गत–टुकडा, फर्द जैसे रचना को कायदा और रेले से ज्यादा प्राधान्य दिया जाता है । उसका कारण यह है कि इस घराने में पखावज का अधिक प्रभाव है । दिल्ली घराने में रेला बजाने के बाद चार या आठ मात्रा के मुखडे बजाये जाते है । किन्तु टुकडा

नहीं बजाया जाता है । टुकडे की पहेचान स्वतंत्र रूप से है और वह फरुखाबाद घराने में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है । टुकडे में जोरदार और कठिन बोलों का प्रयोग किया जाता है । और दिल्ली घराना यह चांटी प्रधान होने के कारण टुकडे बजाना असंभव होता है । दिल्ली घराने में दो उँगलीयों की सुंदर गतों का वादन प्रस्तुत किया जाता है । शोधार्थी ने दिल्ली घराने के विचार की गते क्रियात्मक रूप में प्रस्तुत की है । दिल्ली घराने में गतों के बोलों का निकास दो उँगली को ही प्राधान्य दिया जाता है । और वह खुबसुरत और आकर्षित भी लगती है । क्योंकि मुलायम बोलों का प्रयोग अधिक होता है ।

शोधार्थी के गहन अध्ययन से यह कथित होता है कि दोनों घरानों को अपना पूर्णतः स्वतंत्र तबलावादन करने के लिये दूसरे घरानों की रचनाओं का आधार लेना अत्यंत आवश्यक होता है । यह कथन शोधार्थी ने अनेक पुस्तके तथा मुर्धन्य कलाकारों के साक्षात्कार के आधार पर कथित किया है । साक्षात्कार के दौरान शोधार्थी को दोनों घरानों के वादन क्रम के बारे में निश्चित और सटिक परिणाम नहीं मिले है । क्योंकि प्रत्येक कलाकार के विचार, तालिम और पद्धति अलग होने के कारण प्रत्येक कलाकार के मत इस उपलक्ष में भिन्न–भिन्न है । परंतु एक बात स्पष्ट होती है कि स्वतंत्र वादन का क्रम अलग–अलग है परंतु बंदिशों का शिर्षक पारंपारिक दृष्टि से है । इसलिए प्रत्येक कलाकार उनके मत से सही हो सकते है ।

शोधार्थी ने एक पारंपारिक आदर्शक्रम में रचनाओं को प्रायोगिक रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । दिल्ली घराने में मध्य और दृतलय में लडी बजाने का रिवाज है । जिस में दायाँ–बायाँ का खुबसुरत संतुलन होता है । ''पं. सुधिर माईणकर जी के मतानुसार लडी एक प्रकार की गत होती है, बनारस घराने के अनुसार लग्गी के पलटों को भी लडी कहते है ।'' [३४] ''लडी में रदिफ और काफिया स्पष्ट रूप में दिखाई नहीं देता है । लडी यह चार या आठ मात्रा की बंदिश होती है । प्रत्येक बोल या बोल समुह एक दुसरे बोल के साथ गुथे हुए होते है । परंतु वह सुनने में अत्यंत आकर्षक लगता है । लडी का भी विस्तार किया जाता है । लडी में आये हुए बोलों को सम बदलकर बजाने की हि प्रथा है ।'' [३५]

''पं. उमेश मोघे जी के मत अनुसार दिल्ली घराने का आदर्शक्रम फर्शबंदी, पेशकार, कायदा, रेला और लडी है ।'' [३६] अतः दोनों घरानों का तुलनात्मक अध्ययन करते समय कुछ समानताएँ तो कुछ असमानताएँ दिखाई देती है । दिल्ली घराने में मध्यलय का वादन फरुखाबाद घराने की तुलना में सिमित होता है । बल्कि फरुखाबाद घराने में यह वादन ज्यादा समय तक प्रस्तुत होता है । दोनों घरानों में मुखडा यह मध्यलय के प्रारंभ मे ही बजता है । इस में कोई मतान्तर नहीं है।

शोधार्थी के गहन अध्ययन से कथित होता है कि गतों का काम एवं विचार फरुखाबाद घराने में गहनता से किया गया है । फरुखाबाद घराने में गत यह स्वतंत्र वादन की अत्यंत महत्व की बंदिश है । और उसके अनेक प्रकार इस घराने में बजायें जाते है । यह गते खुले हाथ से बजाई जाती है । जिस में ध्वनि की गुंज ज्यादा मात्रा में सुनाई देती है । प्रत्येक गत के अलग–अलग नाम है । परंतु गतों का कोई निश्चित क्रम नहीं है । कही कलाकार गत साथ गत कायदा भी बजाते है । उ. जहाँगीर खाँ इस प्रकार का वादन करते हे । ''दिल्ली घराने में शिष्यों को सबक कम प्रमाण में बतलाया जाता था और जिन कलाकार के पास यह सबक था वह उसी घराने के परंपरा में आते थे । परंतु ऐसा खास सबक कुछ खास महफिले या बिरादरी में बुर्जुगो के समक्ष प्रस्तुत किया जाता था । जनता के समक्ष इसे प्रस्तुत करने की मनाई थी । अतः कुछ खास गते दिल्ली घराने की उपलब्ध नहीं हुई है ।'' [३७]

फरुखाबाद घराने के चार अलग–अलग वादन पद्धति के अनुसार प्रत्येक कलाकार जैसे उ. अहमदजान थिरकवाँ, उ. अमीरहुसैन खाँ, उ. शेख दाउद खाँ, उ. जहाँगीर खाँ, अपने ढंग से प्रस्तुत करते थे और वह प्रत्येक वादन पद्धति आज भी अलग महसुस होती है । शोधार्थी के मतानुसार महत्तम गते मध्यलय एवं दृतलय में बजाई जाती है । मध्यलय की गतें ज्यादातर तिहाई रहित होती है और दृतलय की गतें ज्यादातर तिहाई सहित होती है । अतः दोनों घरानो में मुख्य भेद खुला एवं बंद बाज का ही है । इसलिए यह दोनों घरानों का स्थान अलग–अलग माना जाता है । अर्थात् दिल्ली घराने में विलंबित लय की रचनाओं को प्राधान्य दिया गया है

और फरुखाबाद घराने मध्यलय और दृतलय को प्राधान्य दिया गया है। फरुखाबाद घराने की एक विशेष रचना जो फर्द है वह इस घराने में ही सुनने को मिलती है।

अतः दोनों घरानों का स्वतंत्र तबलावादन में अपना स्वतंत्र अस्तित्व है और आज भी सभी कलाकार एवं जनता जनार्दन ने इसे मान्यता दी है।

पाद टिप्पणी :

(१) माईणकर, सुधिर, तबला वादन में निहित सौन्दर्य, सरस्वती पब्लिकेशन, मुंबई, पृ. ५३

(२) साक्षात्कार : तळवलकर, पं. सुरेश, बडौदा, २० मार्च, २०१७, शाम ६ बजे

(३) op.cit. माईणकर, सुधिर, पृ. २४८

(४) मुळगाँवकर, अरविंद, तबला, पोप्युलर प्रकाशन, मुंबई, ISBN : 978-81-7185-526-1, पृ. २१६

(५) श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र, ताल कोश, रुबी प्रकाशन, ईलाहाबाद, पृ. २०५

(६) शर्मा, भगवतशरण, ताल प्रकाश, संगीत कार्यालय, उ.प्र., ISBN : 81-85057-05-2, पृ. ४३

(७) op.cit. श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र, पृ. ५३

(८) op.cit. माईणकर, सुधिर, पृ. ८३

(९) op.cit. माईणकर, सुधिर, पृ. २४३

(१०) op.cit. शर्मा, भगवतशरण, पृ. ४०

(११) साक्षात्कार : तळवलकर, पं. सुरेश, बडौदा, २० मार्च, २०१७, शाम ६ बजे

(१२) op.cit. माईणकर, सुधिर, पृ. २४९

(१३) op.cit. श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र, पृ. २८३

(१४) op.cit. शर्मा, भगवतशरण, पृ. ४२

(१५) साक्षात्कार : पं. अरविंद मुळगाँकर, मुंबई, २ फरवरी, २०१७, सुबह १० बजे

(१६) op.cit. माईणकर, सुधिर, पृ. १०१

(१७) साक्षात्कार : श्रीधर, पं. पुष्करराज, बडौदा, ३ मे, २०१८,शाम ७ बजे

(१८) op.cit. माईणकर, सुधिर, पृ. २४५

(१९) op.cit. मुळगाँवकर, अरविंद, पृ. १८५

(२०) op.cit. शर्मा, भगवतशरण, पृ. ३९

(२१) op.cit. श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र, पृ. ११६

(२२) op.cit. माईणकर, सुधिर, पृ. २४५

(२३) op.cit. श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र, पृ. ८७

(२४) op.cit. शर्मा, भगवतशरण, पृ. ५०

(२५) op.cit. मुळगाँवकर, अरविंद, पृ. १९५

(२६) श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र, ताल परिचय, रुबी प्रकाशन, ईलाहाबाद, पृ. ४५

(२७) साक्षात्कार : माईणकर, पं. सुधिर, मुंबई, ३ जनवरी, २०१८, सुबह १० बजे

(२८) साक्षात्कार : पं. अरविंद मुळगाँकर, मुंबई, २ फरवरी, २०१७, सुबह १० बजे

(२९) साक्षात्कार : श्रीधर, पं. पुष्करराज, बडौदा, ३ मे, २०१८,शाम ७ बजे

(३०) op.cit. मुळगाँवकर, अरविंद, पृ. १५९

(३१) साक्षात्कार : घोष, पं. नयन, मुंबई, १५ अप्रैल, २०१८,शाम ७ बजे

(३२) साक्षात्कार : श्रीधर, पं. पुष्करराज, बडौदा, ३ मे, २०१८,शाम ७ बजे

(३३) साक्षात्कार : माईणकर, पं. सुधिर, मुंबई, ३ जनवरी, २०१८, सुबह १० बजे

(३४) साक्षात्कार : माईणकर, पं. सुधिर, मुंबई, ३ जनवरी, २०१८, सुबह १० बजे

(३५) साक्षात्कार : करकरे, श्री प्रविण, बडौदा, ५ डिसेम्बर, २०१८,शाम ५ बजे

(३६) साक्षात्कार : मोघे, पं. उमेश, बडौदा, २५ मार्च, २०१९,शाम ८ बजे

(३७) साक्षात्कार : घोष, पं. नयन, मुंबई, १५ अप्रैल, २०१८,शाम ७ बजे